www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अंतरंग जीवन का देवासुर संग्राम

– श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अंतरंग जीवन का

देवासुर संग्राम

लेखक :

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०११

मूल्य : ३०.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दो शब्द

सत् और असत् अथवा दैवी और आसुरी, मानव-जीवन के दो पहलू हैं। इनमें से मनुष्य असत् अथवा आसुरी पक्ष की तरफ जल्दी झुकता है, क्योंकि उसमें वह भोग-विलास, भौतिक सुख और मनोविनोद की संभावना विशेष रूप से देखता है। दूसरी तरफ दैवी पक्ष में जाने पर त्याग, तपस्या, सेवा, परमार्थ जैसे आरंभ में कठिन जान पड़ने वाले कार्यक्रम अपनाने पड़ते हैं। इसलिए अधिकांश व्यक्ति आरंभ में आसुरी पक्ष की तरफ ही आकर्षित होते हैं। उनको इस बात का ध्यान नहीं रहता कि यह तो चार दिन की चाँदनी है, इसका अंतिम परिणाम कभी शुभ नहीं हो सकता।

इस संसार में मनुष्य आत्मोत्कर्ष के मार्ग पर यथाशक्ति प्रगति करने के लिए ही उत्पन्न हुआ है। यह उद्देश्य तभी सिद्ध हो सकता है, जब वह आसुरी प्रवृत्तियों को त्यागकर दैवी गुणों को ग्रहण करने की चेष्टा करे। यह कार्य एक दिन में नहीं हो जाता, वरन् जब आजन्म उसका ध्यान रखा जाता है और निम्नकोटि की स्वार्थपरता को निरंतर दबाते हुए परमार्थ को ही सर्वोच्च लक्ष्य बना लिया जाता है, तभी दैवी भावनाएँ हृदय में उदित होती हैं। इसके लिए सभी दुर्गुणों को त्यागकर सच्चरित्रता, नैतिकता और परहित-कामना जैसे अनेक गुणों को अपनाना पड़ता है।

इस पुस्तक में मानव-अंतःकरण में होने वाले इसी देवासुर-संग्राम पर प्रकाश डाला है और समझाया गया है कि किस प्रकार के व्यवहार और आचरण को अपनाकर, इन परिस्थितियों से मनुष्य ऊँचा उठ सकता है। इस संबंध में स्पष्ट कर दिया गया है कि जब तक मनुष्य अपने दोष-दुर्गुणों की तरफ से सचेत होकर अपने भीतर देवत्व का उदय न करेगा, तब तक वह अपने जीवन-लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता।

—प्रकाशक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
१. हमारा आंतरिक महाभारत	५
२. ईश्वरोपासना के सत्परिणाम	६
३. हम दो में से एक मार्ग चुन लें	११
४. श्रेय अथवा प्रेय	१६
५. प्रगति का मूल मंत्र—आत्मोत्कर्ष	२६
६. स्वार्थ को नहीं परमार्थ को साधा जाए	३१
७. विश्व-मानव की अखंड अंतरात्मा	३६
८. हम भी सत्य को ही क्यों न अपनाएँ	४०
९. दृष्टिकोण का परिवर्तन	४४
१०. सद्गुण भी हमारे ध्यान में रहें	५२
११. कुसंग से आत्मरक्षा की आवश्यकता	५६
१२. प्रशंसा और प्रोत्साहन का महत्त्व	६६
१३. आलस्य में समय न गवाएँ	७४
१४. श्रम से ही जीवन निखरता है	८१
१५. कर्तव्य—धर्म की मर्यादा तोड़िये मत	८६
१६. सफलता ही नहीं—असफलता भी	९१
१७. महत्त्वाकांक्षाएँ और असंतोष	९७
१८. ऐषणाएँ नहीं महानता अभीष्ट	१०३

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

१६. पिशाचिनी पुत्रेषणा १११
२०. लोकेषणा की प्रवंचना ११६
२१. सुख का मूलभूत आधार—संतोष १२५
२२. हम अशांत और आतंकित न हों १३१
२३. प्रसन्न रहें—प्रफुल्ल बनें १३६
२४. अहंकार की असुरता से बचा जाये १४७
२५. बड़प्पन की बात सोचें, बड़े काम करें १५३
२६. देवासुर संग्राम में हम निरपेक्ष न रहें १५८

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अंतरंग जीवन का देवासुर संग्राम

✷

हमारा आंतरिक महाभारत

मनुष्य के अंतःकरण में दो प्रवृत्तियाँ रहती हैं, जिन्हें आसुरी एवं दैवी प्रवृत्ति कहते हैं। इन दोनों में सदा परस्पर संघर्ष चलता रहता है। गीता में जिस महाभारत का वर्णन है और अर्जुन को जिसमें लड़ाया गया है, वह वस्तुतः आध्यात्मिक युद्ध ही है। आसुरी प्रवृत्तियाँ बड़ी प्रबल हैं, कौरवों के रूप में उनकी बहुत बड़ी संख्या है, सेना भी उनकी बड़ी है। पांडव पाँच ही हैं, उनके सहायक एवं सैनिक भी थोड़े ही हैं। फिर भी भगवान् ने युद्ध की आवश्यकता समझी और अर्जुन से कहा—लड़ने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। तामसिक आसुरी प्रवृत्ति का दमन किये बिना सतोगुणी दैवी प्रवृत्ति का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जायेगा। इसलिए लड़ना जरूरी है। अर्जुन पहले तो झंझट में पड़ने से कतराया पर भगवान् ने जब युद्ध को अनिवार्य बताया तो उसे लड़ने के लिए कटिबद्ध होना पड़ा। इस लड़ाई को इतिहासकार 'महाभारत' के नाम से पुकारते हैं। अध्यात्म की भाषा में इसे 'साधना-समर' कहते हैं।

देवासुर संग्राम की अनेक कथाओं में इसी 'साधना समर' का अलंकारिक निरूपण हैं। असुर प्रबल होते हैं, देवता उनसे दुःख पाते हैं, अंत में दोनों पक्ष लड़ते हैं, देवता अपने को हारता-सा अनुभव करते हैं, वे भगवान् के पास जाते हैं। प्रार्थना करते हैं। भगवान् उनकी सहायता करते हैं। अंत में असुर मारे जाते हैं, देवता विजयी होते हैं। देवासुर संग्राम के अगणित पौराणिक उपाख्यानों की पृष्ठभूमि यही है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हमारा अंतःप्रदेश ही वह धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र है, जिसमें महाभारत होता रहता है। असुर मायावी हैं। तमोगुण का असर हमें माया में फँसाये रहता है। इंद्रिय सुखों का लालच देकर, वह अपना जाल फेंकता है और अपने माया पाश में जीव को बाँध लेता है। उस असुर के और भी कितने ही अस्त्र-शस्त्र हैं, जिनसे जीव को अपने वशवर्ती करके, पददलित करने में वह सफल होता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर यह छह ऐसे ही सम्मोहन अस्त्र हैं, जिनमें मूर्च्छित होकर जीव बंध जाता है और वह मूर्च्छा ऐसी होती है कि उससे निकलने की इच्छा भी नहीं होती है, वरन् उसी स्थिति में पड़े रहने को जी चाहता है।

अर्जुन भीख माँगकर खाने और ऐसे ही किसी तरह जीवन काट लेने को तैयार है। जो दुष्प्रवृत्तियाँ एक ही घर में—एक ही कुटुंब में—अपने ही शरीर में पैदा हुई तथा पली-पोसी हैं, वे उसे स्वजन जैसी लगती हैं। उन्हें मारने में दुःख लगता है। जो दुर्गुण, दुर्भाग्य, दुःस्वप्न, कुविचार और कुसंस्कार अपने मनःक्षेत्र में चिरकाल से साथी बने हुए हैं, उन्हें हटाने के लिए जीव की प्रवृत्ति भी नहीं होती। किंतु यह अवसाद आत्मा के लिए अहितकर ही है, इसलिए भगवान् अपने भक्त के इस अवसाद को हटाने का प्रयत्न करते हैं। अर्जुन को युद्ध में लगना ही पड़ता है।

आत्मा का कल्याण उस तम प्रवृत्ति में पड़े रहने से नहीं हो सकता, जिसमें माया मोहित अगणित जीव पाशबद्ध स्थिति में पड़े रहते हैं। इन बंधनों को काटे बिना कल्याण का और कोई मार्ग नहीं। इस तमसाच्छन्न स्थिति को यदि रोका, हटाया या सुधारा न जाए तो उसकी भयंकरता एवं विभीषिका में दिन-दिन वृद्धि ही होती जायेगी और नारकीय यंत्रणाओं एवं यातनाओं के अवसर ही बढ़ते जायेंगे। संसार के अधिकांश प्राणी इसी स्थिति में पड़े-पड़े नाना प्रकार के त्रास सहते रहते हैं। भवबंधनों में बँधे हुए बिलबिलाते और बिलखते रहते हैं; इस मार्ग से यदि विरत न हुआ जाए तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पाप, पतन एवं पीड़ा के चक्र में गला फँसाकर झूलते रहना पड़ता है।

आत्मा की पुकार **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** की है। वह अंधकार से प्रकाश की ओर जाना चाहता है। तम ही अंधकार और सत् ही प्रकाश है। यह अंधकार को त्यागने और प्रकाश को धारण करने का प्रयत्न ही 'साधना' है। साधना को जीवन की अनिवार्य आवश्यकता माना गया है। तम की दुष्प्रवृत्तियों से छुटकारा केवल इस एक ही उपाय से हो सकता है। सच्ची शांति और प्रगति का मार्ग भी यही है।

अंतरात्मा में निरंतर चलने वाले देवासुर संग्राम में तामसिकता का पक्ष भौतिक सुख-साधन इकट्ठे करते रहने और सात्त्विकता का पक्ष आत्मकल्याण की दिशा में अग्रसर होने का है। जब दोनों में से कोई एक पक्ष प्रबल हो उठता है, तो संग्राम में तेजी दिखाई देने लगती है। यदि असुरता प्रबल हुई तो दुष्प्रवृत्तियों की अभिवृद्धि होकर, पतन का नारकीय परिपाक सामने आ जाता है और यदि सुरपक्ष प्रबल हुआ तो सत्प्रवृत्तियों का उभार आता है और मनुष्य, सत्पुरुष, महामानव, ऋषि एवं देवदूत बनकर पूर्णता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए द्रुतगति से आगे बढ़ता है।

एक बीच की स्थिति ही, रजोगुण ही अवसाद भूमिका कहलाती है। इसमें तम और सत् दोनों मिले रहते हैं। लड़ाई बंद हो जाती है और कामचलाऊ समझौता-सा करके, दैवी और आसुरी तत्त्व एक ही घर में रहने लगते हैं। भले और बुरे दोनों ही तरफ के काम मनुष्य करता रहता है। पाप के प्रति घृणा न रहने से, आत्मिक प्रगति की ओर कोई विशेष उत्साह न रहने से दिन काटने की वैसी ही स्थिति बन जाती है, जैसी मंद विष पीकर मूर्च्छित हुए अर्धमृत प्राणी की होती है। मानव-जीवन जैसा अलभ्य अवसर प्राप्त होने पर इस प्रकार का अवसाद भी चिंताजनक ही है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भगवान् कृष्ण ने बार-बार उकसाकर अर्जुन को युद्ध के मैदान में खड़ा कर दिया था। गांडीव उठाकर शत्रुओं पर शर-संधान करने के लिए उसे तत्पर ही होना पड़ा था। हमारा भगवान्—अंतरात्मा—भी हमसे यही कराना चाहता है। उसकी गीता निरंतर हमारे अंतःकरण में—कुरुक्षेत्र में—कही जाती रहती है। पर हम उसे सुनते नहीं, मूर्च्छा छोड़ते नहीं, गांडीव को छूते नहीं, हमारा कृष्ण हमें झकझोरते-झकझोरते हार चला, पर हम चेतना शून्य ही बने बैठे हैं।

इस अवसाद की स्थिति का अंत करना ही उचित है। देवासुर-संग्राम में अपने देवपक्ष को विजयी बनाना ही श्रेयस्कर है। तम को छोड़ें और सत् का प्रकाश ग्रहण करें, इसी में हमारा हित है। साधना में ही मनुष्य का सच्चा स्वार्थ सन्निहित है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वरोपासना के सत्परिणाम

शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः।
चरन्ति विद्युतो दिवि।।

(ऋ० ९-४१-३)

"बलवान् सोम के तेज अभिषव किये जाते समय विद्युत् के समान घूमते और चमकते हैं और सोम का शब्द वर्षा के शब्द के समान ही सुनाई पड़ता है।"

ईश्वर की स्तुति और उपासना मनुष्य के कल्याणार्थ आवश्यक मानी गई है। प्राचीन काल के जितने भी धर्म और मत-मतांतर हैं, उन सबमें इसका कोई-न-कोई विधान पाया जाता है। अपने से कहीं अधिक अनुभवी और ज्ञान-सागर में प्रविष्ट व्यक्ति महापुरुषों के विरुद्ध निरर्थक बकवाद नहीं किया करते हैं।

पर उपासना और साधना के लिए एक आवश्यक शर्त यह है कि वह सच्चे भाव से चित्त लगाकर की जाए। आजकल जिस प्रकार बहुसंख्यक 'धार्मिक' कहलाने वाले व्यक्ति दुनिया को दिखाने के लिए अथवा एक रस्म पूरा करने के लिए मंदिर में जाकर दर्शन कर लेते हैं और नियम को पूरा कर लेने के लिए एकाध माला भी जप लेते हैं, उससे किसी बड़े सुफल की आशा नहीं की जा सकती। उपासना और साधना तो तभी सच्ची मानी जा सकती है, जबकि मनुष्य उस समय समस्त सांसारिक विषयों और आसपास की बातों को भूलकर, प्रभु के ध्यान में निमग्न हो जाए। जब मनुष्य इस प्रकार की संलग्नता और एकाग्रता से अपने इष्टदेव की उपासना करता है, तभी वह अध्यात्म मार्ग पर अग्रसर हो सकता है और तभी वह दैवी कृपा का लाभ प्राप्त कर सकता है। इसी तथ्य को समझाने के लिए इस मंत्र में बतलाया गया है, जब मनुष्य हृदय और आत्मा से सोम का अभिषव (परमात्मा की उपासना) करता है, तब उसे स्वयमेव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ईश्वरीय तेज के दर्शन होने लगते हैं और परमात्मा की कृपा अपने चारों तरफ मेह की तरह बरसती जान पड़ती है।

संसार में जीवन निर्वाह करते हुए एक साधारण मनुष्य को अनेक विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ता है, विपरीत परिस्थितियों में होकर गुजरना पड़ता है, विरोधियों के साथ संघर्ष करना पड़ता है और लोगों की भली-बुरी सब प्रकार की आलोचना को सहन करना पड़ता है। इससे उसके जीवन में स्वभावतः उद्वेग, अशांति, भय, क्रोध आदि के अवसर आते हैं, जिनका उस पर न्यूनाधिक परिणाम में प्रभाव पड़ता है और वह जीवन में मानसिक अशांति—कष्ट का अनुभव करने लगता है। ऐसा मनुष्य अपने कष्टों के निवारणार्थ और मन तथा आत्मा की शांति के लिए परमात्मा का आश्रय ग्रहण करता है, मन, वचन और कर्म से उसकी उपासना में संलग्न होता है, तो उसकी अवस्था ठीक हो जाती है। इस प्रकार जो व्यक्ति सच्चे हृदय से ईश्वर की उपासना करता है तो उसे सच्चे ही परिणाम मिलते हैं।

❑❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम दो में से एक मार्ग चुन लें

इस संसार में उत्थान और पतन के दो मार्ग हैं, जो परस्पर विरोधी दिशाओं में चलते हैं। इनमें से एक को परमार्थ, दूसरे को स्वार्थ कहते हैं। इन्हें ही पुण्य, पाप, श्रेय, प्रेय आदि नामों से पुकारते हैं। प्रशंसा और निंदा के, स्वर्ग और नरक के, शांति और अशांति के मार्ग भी यही हैं। इनमें से मनुष्य स्वेच्छापूर्वक अपने लिए किसी को भी चुन सकता है और अपना भविष्य सुख-शांतिमय या क्लेश-कलहमय बना सकता है। श्रेय मार्ग पर चलते हुए मनुष्य मानवता की महानताओं को अपनाकर, अंत में देवत्व तक जा पहुँचता है और स्वर्गीय आनंद की परिस्थितियों का रसास्वादन करता है। इसके विपरीत प्रेय मार्ग पर चलते हुए मनुष्य अपने पद से च्युत होकर, पशुता का वरण करता है और अंत में असुरता की स्थिति में पहुँचकर, नरक जैसी अशांत एवं क्षुब्ध मनोदशा के उद्वेगों में झुलसने लगता है।

अनिच्छापूर्वक अभिगमन

यह जानते हुए भी कि स्वार्थ का परिणाम दुःख और परमार्थ का सुख होता है, लोग आमतौर पर यही गलती दुहराते रहते हैं कि परमार्थ का मार्ग छोड़कर स्वार्थ के मार्ग पर चलने लगते हैं। श्रेय को अपनाने की इच्छा रहते हुए भी प्रेय की ओर ही मन लगता है और मन में संकोच, लज्जा, भय एवं आशंका रहते हुए भी पैर उसी दिशा में बढ़ने लगते हैं। सुख का मार्ग छोड़कर दुःख की ओर, स्वर्ग का मार्ग छोड़कर, नरक की ओर चलने के लिए जो शक्ति विवश कर देती है, उसी का नाम माया या अविद्या है। धर्म ग्रंथों में माया एवं अविद्या की बड़ी निंदा की गई है और इनके चंगुल में फँसे हुए जीव को भर्त्सना की दृष्टि से देखा गया है। यह विचारणीय बात है कि सत्पुरुषों से, सद्ग्रंथों से तथा अपने अनुभव से व्यक्ति पुण्य की महत्ता और पाप की हानियों को जानता हुआ भी जिस माया या अविद्या की प्रेरणा से कुपथगामी बनता है, वस्तुतः वह है क्या ? और उसकी इतनी प्रबल प्रचंडता का कारण क्या है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनीति की विशेषता यह है कि उससे तुरंत लाभ होता है, किंतु पीछे कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। इसके विपरीत नीति का मार्ग ऐसा है, जिस पर चलने वाले को आरंभ में तप-त्याग करना पड़ता है और पीछे देर से उसके लाभ दृष्टिगोचर होते हैं। अदूरदर्शी लोगों को तुरंत का लाभ दिखाई पड़ता है और देर के लाभ तक ठहर सकने योग्य धैर्य एवं साहस नहीं होता। प्रलोभनों पर वे फिसल पड़ते हैं और उसी कुचक्र में अपना भविष्य अंधकारमय बना लेते हैं। आज के, अभी के, क्षणिक लाभ की ओर इतना अधिक आकर्षित हो जाना कि भविष्य में उसके दुष्परिणामों का ध्यान ही न रहे, इसी का नाम माया या अविद्या है। दूसरे शब्दों में इस मूर्खता को अदूरदर्शिता, अविवेक, अधीरता या विचारहीनता भी कह सकते हैं।

भवसागर और माया नगरी

इस दुनिया को आध्यात्मिक भाषा में 'भवसागर' कहते हैं। माया नगरी या जादू नगरी भी इसे कहा जाता है। भवसागर इसलिए कहा गया है कि वह घड़ियालों और मगरमच्छों से भरा पड़ा है, जो दाँव लगते ही शिकार को निगल जाते हैं। माया नगरी इसलिए कहा गया है कि यहाँ कदम-कदम पर मनुष्य को पहेलियाँ बूझानी पड़ती हैं। भूल-भुलैयों के महल में फँसे हुए मनुष्य को बाहर निकलने के लिए सही रास्ता ढूँढ़ने में अपनी पूरी बुद्धि का प्रयोग करना पड़ता है, तब कहीं उसे रास्ता मिलता है। यदि थोड़ा भी असावधान रहें, उपेक्षा करें तो उसी में भटकते-फिरना पड़ता है और बाहर निकलने का रास्ता नहीं मिलता। घड़ियालों और मगरमच्छों से भरे तालाब में स्नान करने वाले को हर घड़ी सतर्क रहना पड़ता है, जरा-सी असावधानी उसके लिए प्राणघातक दुष्परिणाम उत्पन्न कर सकती है। जादू की नगरी इसलिए कहा जाता है कि यहाँ हर चीज के दो रूप हैं—बाहर कुछ और भीतर कुछ। इसमें वास्तविकता क्या है ? यह जाने बिना धोखा होने का बड़ा डर रहता है। बाजीगर मिट्टी का टुकड़ा लेकर, उसे जादू से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मिठाई बना देता है, किसी वस्तु को किसी रूप में दिखा देता है। इसमें वह "नजर बाँध देने" का जादू करता है। आँखें वास्तविकता को समझने में धोखा खाती रहती हैं और कुछ का कुछ दिखाई देता रहता है। जादूगर दर्शकों की मूर्खता पर मन ही मन मुस्कराता रहता है।

जादू के महल और धोखाधड़ी

पांडवों का एक ऐसा महल था, जिसमें जल के स्थान पर थल और थल के स्थान पर जल दिखाई पड़ता था। कौरव एक दिन वहाँ गए तो वह भी धोखा खा गए। द्रोपदी इस पर हँस पड़ी और यही हँसी अंत में महाभारत का कारण बनी। इस माया नगरी में दुनिया का सारा महल ही जल को थल और थल को जल दिखा देने वाला बना खड़ा है, जिसमें पग-पग पर भ्रमित होने वाले हम कौरवों का उपहास हो रहा है। रूप और सौंदर्य जिसके ऊपर लोग मरे-कटे जा रहे हैं, चमड़ी की चमक मात्र हैं। इस चमकती पन्नी को मल मूत्र के हाड़-मांस के दुर्गंध भरे घड़े के ऊपर चिपकाकर लोगों को कितने बड़े भ्रम में डाल रखा है। बाजीगरी की इस चतुराई को देखकर हैरत में पड़ना पड़ता है।

दौलत का व्यर्थ अहंकार

धन—चाँदी, ताँबे और कागज के टुकड़े, नोटों की अपनी एक निराली दुनिया है। वे एक हाथ से दूसरे में और दूसरे से तीसरे में मस्ती के साथ घूमते रहते हैं। देर तक वे कहीं भी नहीं ठहर सकते। फिर भी लोग सोचते रहते हैं कि हमारे पास इतना धन जमा है, इतने धन के स्वामी हैं। तिजोरी में, बैंक में, धन रखा हो या सरकारी खजाने में जमा हो या अपने बाद उस पर किसी और का कब्जा हो जाए, इसमें अपना क्या बनता बिगड़ता है ? सिक्के हमारे मरने-जीने की परवाह किए बिना अपनी व्यवस्था के अनुसार घूमते-फिरते रहते हैं, पर लोग उनके साथ न जाने क्या-क्या अरमान सँजोये बैठे रहते हैं ? जमीन, जायदाद, सोना, चाँदी तथा अत्यावश्यक वस्तुएँ, एक की मालिकी में से दूसरे के हाथ जाती रहती हैं; वह वस्तुएँ ज्यों की त्यों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहती हैं। स्वामित्व जताने वाले एक के बाद दूसरे-तीसरे आते हैं और मरते-खपते चले जाते हैं। जाने वालों में से हर एक खाली हाथ प्रयाण करता है, फिर भी जिसे मरने वाले का उत्तराधिकार मिला है, वह सोचता है कि मुझे दौलत मिल गई। दौलत हँसती है कि—बेवकूफ, तू जितना सदुपयोग कर ले उतना तेरा लाभ है। जमा हुई संपदा तो तीसरे, चौथे, पाँचवें, छठवें को उसी क्रम से हस्तांतरित होती रहेगी जैसी तुझे हुई है। दौलत मुस्कराती है, पर बेचारा भोला दर्शक यह समझ नहीं पाता और अपने धनी होने के अभिमान में इतराता-फिरता है। जादू की नगरी में लोग व्यर्थ बावले बने फिरते हैं। काम और लोभ के वशीभूत होकर, वासना और तृष्णा से ग्रसित होकर हम क्या-क्या अनर्थ नहीं करते ?

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रवंचना और विडंबना

होली के दिनों में रास्तागीरों का मजाक बनाने के लिए कई मनचले लोग ऐसा करते हैं कि सड़क पर रुपया, अठन्नी आदि कोई सिक्का मजबूत मसाले से चिपका देते हैं। रास्तागीर उसे देखता है और ललचाता है। लोगों की आँख बचाकर उस पड़े हुए सिक्के को उठा ले जाने का उपक्रम करता है। उठाने की कोशिश करता है तो वह चिपका हुआ सिक्का उखड़ता नहीं, इस लालच पर व्यंग करते हुए वे मनचले लोग हँस पड़ते हैं, जिन्होंने यह चालाकी कर रखी थी। बेचारा रास्तागीर अपना उपहास सहता हुआ, सिटपिटाता मुँह लेकर खीजता हुआ चला जाता है। ऐसा ही मजाक हम सबके साथ यह जादू की दुनिया करती रहती है। रूप और सौंदर्य पर मोहित होकर मनुष्य विकारग्रस्त होता है। इस विकार में उसे मिलता कुछ नहीं, नष्ट बहुत होता है। मानसिक शांति, स्वास्थ्य, पौरुष एवं भविष्य सभी कुछ दांव पर लगाकर, वह इस रूप-सौंदर्य को हड़पना चाहता है, पर वह अपनी जगह पर ही बना रहता है, हड़पने में कुछ नहीं आता। केवल अपना जीवन इस पर निचुड़ जाने की हानि उठाकर भोला दर्शक हाथ मलकर पछताता रह जाता है। धन की भी यही बात है। जमीन,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तिजोरी, बैंक और कारखाने में अपनी समझी जाने वाली दौलत को छोड़कर लोग खाली हाथ चले जाते हैं।

छोटा लाभ बड़ी हानि

वह माया जिसमें भ्रमित होकर मनुष्य तुरंत के छोटे-से लाभ के लिए भविष्य को अंधकारमय बना लेता है। कोई बाहरी शक्ति या देवी-दानवी नहीं है, मनुष्य की अदूरदर्शिता ही है। दूरगामी परिणामों की चिंता न करते हुए तुरंत का लाभ सोचने से मनुष्य दुष्कर्म करने पर उतारू होता है, किंतु यदि उसका सोचना इस ढंग से हो कि मुझे स्थायी शांति किस प्रकार मिलेगी, तो उसका दृष्टिकोण बिल्कुल दूसरे ही ढंग का हो जायेगा, तब वह उस तरह सोचेगा जैसा बुद्धिमान् सोचते हैं और वैसा करेगा जैसे भले मानस करते हैं। चरित्र का आधार यह दूरदर्शितापूर्ण दृष्टिकोण ही है। संसार की सुख-शांति इसी बुद्धिमत्ता के विकास पर निर्भर है। युग-निर्माण योजना के अंतर्गत सभ्य-समाज की रचना का जो हमारा लक्ष्य है, उसकी पूर्ति का प्रधान अवलंबन यह है कि मनुष्य दूरदर्शी बने, आज का कार्य करने से पूर्व कल की संभावनाओं का ध्यान रखे। विवेक से काम ले। वह करे जो करने योग्य है, वह सोचे जो सोचने योग्य है। जो उचित जँचे उसे अपनाए और जो अनुचित दिखाई देता है उससे अलग हो जाए।

अनीति के मार्ग पर दिखाई देने वाले प्रलोभनों की ओर दौड़ने वाले मन को कड़ी लगाम लगाकर, रोक सकने लायक वीरता जिसमें होगी, वही योद्धा जीवन संग्राम में विजय प्राप्त करेगा। लक्ष्य की पूर्णता का श्रेयाधिकारी वही बन सकेगा। जो भविष्य के सुंदर स्वप्नों का संसार बनाने के लिए आज कष्ट उठाने को तैयार है, वही तपस्वी अपनी साधना का वरदान कल उपलब्ध करेगा। जिसने आज नीरस दीखने वाले कार्यक्रम को भी, कठिन दीखने वाले मार्ग को भी भविष्य की उज्ज्वल आशाओं को ध्यान में रखते हुए अपनाने का साहस दिखाया, वही वस्तुतः इस संसार में धीरवान् महापुरुष कहलाने का अधिकारी बन सकता है। ऐसे धीर-वीर लोगों के द्वारा ही यह धरती शोभा को प्राप्त करती है, उन्हीं के प्रताप से यह लोक स्वर्गलोक बनता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है। वे ही अपने पराक्रम से युग का परिवर्तन एवं निर्माण किया करते हैं। समाज की रचना के ईंट-चूने का काम यह धीर-वीर ही पूरा किया करते हैं। आज उन्हीं को ढूँढ़ा जाना और उन्हीं का निर्माण किया जाना आवश्यक प्रतीत हो रहा है।

ओछापन और महानता

ओछी बुद्धि होने के कारण ही किसी व्यक्ति को ओछा कहा जाता है। यों लंबाई-ऊँचाई में तो बहुत थोड़ा-थोड़ा अंतर लोगों में देखा जाता है, पर विवेक की दृष्टि से उनमें आकाश-पाताल का अंतर रहता है। कोई बावन अंगुल के बौने जैसे होते हैं तो कोई भूधराकार हनुमान् जैसे लगते हैं। यह अंतर शारीरिक नहीं मानसिक ही होता है। ओछे मनुष्य अपना आज का संकुचित लाभ ही सदा ध्यान में रखते हैं और इसके लिए दूसरों का कितना ही बड़ा अहित होता हो तो उसकी परवाह नहीं करते। जिन्हें दूरदर्शिता प्राप्त है, जिनका विवेक जाग्रत् हो गया है, वे महान् कहलाते हैं; उनकी दृष्टि सुविस्तृत दूरी तक देख सकने में समर्थ होती है। वे सबके हित में अपना हित समझते हैं। सबके सुख में अपना सुख अनुभव करते हैं और स्वार्थ-साधन करके अपनी तोंद बढ़ाने में वे जोंक का उदाहरण नहीं बनते, वरन् खिलते हुए पुष्प की तरह अपना सारा सौरभ दूसरों की सुख-शांति के लिए बखेरते हुए अपना यश शरीर अमर छोड़कर, इस संसार में से हँसते-हँसाते हुए विदा होते हैं। जीवन की यही सार्थकता है और इसे प्राप्त वे ही कर पाते हैं जो महान् हैं—जिनका दृष्टिकोण विशाल एवं महान् है। माया से विरत, विवेकशील और ज्ञानी-विज्ञानी वे ही हैं, जिन्होंने ओछेपन को ठुकरा देने और महानता को छाती पर धारण करने का साहस दिखाया। वीरों की पूजा सर्वदा सर्वत्र होती है। भगवान् राम और कृष्ण भी वीरता के कारण पूजे जाते हैं। भगवान् के दरबार में पग-पग पर फिसलने वाले लुंज-पुंज लोगों के लिए नहीं केवल उनके लिए सम्मान का स्थान मिल सकता है, जो अंगद की तरह पैर जमाकर अपनी महानता, वीरता एवं उत्कृष्टता का प्रमाण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रस्तुत कर सकें। मुक्ति तो उनके लिए तुच्छ उपहार मात्र है, स्वर्ग तो उन्हें अनायास ही मिलने वाला है।

प्रलोभन और संयम

काँटे की नोंक में लगे हुए जरा-से आटे का लोभ मछली संवरण नहीं कर पाती और अपनी जान से हाथ धो बैठती है। जाल में बिखरे हुए जरा-से दानों की उपेक्षा यदि भोली चिड़िया कर सकी होती तो फड़फड़ा-फड़फड़ा कर मरने की आपत्ति से वह बच सकती थी। दीपक के रूप पर मुग्ध होकर आगा-पीछा न सोचने वाला पतंगा आखिर पाता क्या है ? खुद भी जल मरता है और दीपक को भी बुझा देता है। रस का लोभी भौंरा कमल की पंखुड़ियों में बंद होकर, हाथी का कलेवा बन जाता है। ठग आरंभ में थोड़ा लालच दिखाकर अंत में किसी भोले आदमी को बुरी तरह मूँड़ लेते हैं। यदि इनमें आरंभिक प्रलोभन से बच निकलने के लायक धैर्य रहा होता तो बेचारों की इस प्रकार दुर्गति क्यों होती ? जेलखानों में निंदा, घृणा और यातना का जीवन व्यतीत करने वाले लोगों में अधिकांश वे हैं, जो अपने तात्कालिक लोभ एवं आवेश का संवरण न कर सके और आज जन समाज से बहिष्कृत स्थिति में दयनीय जीवन-यापन कर रहे हैं। नरक की बड़ी जेल में ले जाने वाला भी यह एक ही कारण है, प्रलोभनों में फिसलने से बच सकने लायक धैर्य का अभाव। यदि यह एक कमी लोगों के मनःक्षेत्र में से निकल सके, तो निःसंदेह हममें से हर कोई महापुरुष बन सकता है और अपने को आनंदमय स्थिति में रख सकता है। इतना ही नहीं, वरन् सर्वत्र सुख-शांति का वातावरण उत्पन्न करने में महान् योगदान दे सकता है।

विभूतियों के लिए पात्रत्व

भगवान् के भंडार में बहुत विभूतियाँ भरी पड़ी हैं, पर वे सबको उसी प्रकार नहीं मिलतीं, जिस प्रकार बंदूक का लाइसेंस सरकार हर किसी को नहीं देती। परीक्षा के बाद ही विद्यार्थी को उत्तीर्ण होने का प्रमाण-पत्र मिलता है। आग में तपाये जाने के बाद ही स्वर्ण को खरा घोषित किया जाता है। किसान साल भर तक अपने शरीर और धन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को मिट्टी में मिलाये रखने के बाद ही फसल की अन्नराशि का अधिकारी बनता है। माली को कितने दिन तक कितने धैर्यपूर्वक पौधों की सेवा करनी पड़ती है, तब वे फल देने वाले विशाल वृक्ष बनते हैं। कागज का महल एक दिन में खड़ा हो सकता है, पर विशाल बाँध बनाने का निर्माण कार्य तो वर्षों में पूरा हो पाता है। चोरी, बेईमानी में अपने व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा बेचकर कुछ छोटा-सा लाभ कभी प्राप्त किया जा सकता है, पर महापुरुष, नररत्न और सत्पुरुष कहलाने की महान् सफलता तो पग-पग पर अपनी महानता को सुरक्षित रखने के लिए तप, त्याग करने पर ही प्राप्त हो सकनी संभव होती है।

यहाँ हर श्रेष्ठ व्यक्ति को कठिनाइयों की, असुविधाओं की अग्नि परीक्षाओं में होकर गुजरना पड़ा है। जो विवेक को अपनाए रहता है, प्रलोभनों में स्खलित नहीं होता और सन्मार्ग से किसी भी कारण कदम पीछे नहीं हटाता, वस्तुतः वही इस भवसागर को पार करता है, वही माया के जादू से अछूता बचा रहता है और उसी का मानव शरीर धारण करना सार्थक होता है। श्रेय का मार्ग महान् है। पुण्य-परमार्थ के, श्रेष्ठता और महानता के, धार्मिकता और आस्तिकता के पुण्य-पथ पर चलना कठिन नहीं है और इस दिशा में चलते हुए निरंतर प्राप्त होती रहने वाली शांति को उपलब्ध करना भी कुछ कष्टसाध्य नहीं है। आवश्यकता केवल इतनी ही है कि मनुष्य तुरंत के लोभ का त्यागकर दूरवर्ती परिणामों पर विचार करे और उसी के आधार पर अपनी गतिविधियाँ विनिर्मित करने के लिए कृतसंकल्प एवं कटिबद्ध हो जाए। दोनों मार्ग सामने खुले पड़े हैं, यह अपनी इच्छा के ऊपर पूर्णतया निर्भर है कि दोनों में से किसी को भी चुन लें। सभ्य समाज की रचना का होना या वर्तमान असभ्यता का और भी दिन-दिन अधिक बढ़ते जाना हमारे इसी चुनाव पर निर्भर है। राजनैतिक वोट तो बार-बार पड़ते रहते हैं, हमें जीवन लक्ष्य के चुनाव में एक ही बार वोट डालनी है। एक श्रेय, दूसरा प्रेय, यह दोनों ही उम्मीदवार खड़े हैं। यह हमारी अपनी पसंदगी की बात है कि इनमें से किसी एक को वोट देकर, उसे विजयी बना दें।

❑❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रेय अथवा प्रेय

अध्यात्मवाद को व्यावहारिक जीवन में धारण करने के लिए, हमें अपने दैनिक जीवन में कुछ समय इस कार्य के लिए भी लगाने को तत्पर होना पड़ेगा। आमतौर से हमारे दिन-रात के २४ घंटे शरीर तथा उससे संबंधित भौतिक समस्याओं को सुलझाने तथा उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने में लगते हैं। कुछ समय सोने, खाने-नहाने, मलमूत्र त्यागने में लगता है, कुछ रोजी-रोटी कमाने में बीतता है, कुछ आराम मनोरंजन गपशप में, कुछ उलझनों में लग जाता है। यह कार्य इतने अधिक और इतने उलझे हुए होते हैं कि २४ घंटे का समय भी इनके लिए कम पड़ता है। यदि यह घंटे २-४, की मात्रा में और भी बढ़ गये होते—एक दिन २४ घंटे की अपेक्षा २६ या २८ घंटे का होता तो भी कम ही सिद्ध होते। इंद्रियों की वासनाएँ तृप्त करने के समय बड़ी प्रिय लगती हैं, पर उस भोग के जो दूरवर्ती परिणाम होते हैं, वे इतनी उलझनें पैदा करते हैं कि मनुष्य के लिए वह सब एक भारी बंधन बन जाता है।

वासना की ठंडी आग

जिह्वा इंद्रिय विविध-विधि स्वादिष्ट भोजन, जल्दी-जल्दी अधिक मात्रा में खाने को लालायित रहती है। उसकी तृप्ति लोग करते भी हैं। पर इस असंयम के कारण जब पेट खराब होता है, रक्त दूषित बनता है, नाना प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं, तब उस देह-दुर्बलता की समस्या, शारीरिक कष्ट ही नहीं, आर्थिक कठिनाई, कार्यों में असफलता आदि की अगणित समस्याएँ पैदा कर देती है। जिह्वा इंद्रिय पर काबू प्राप्त करके, जिसने अपने स्वास्थ्य को संभालकर रखा है, उसकी तुलना में, असंयमी की समस्याओं में जमीन-आसमान का अंतर होता है। इसी प्रकार कामेंद्रिय की वासना से प्रेरित होकर लोग अपने जीवन रस को इतना निचोड़ डालते हैं कि जवानी में ही बुढ़ापा आ घेरता है और मृत्यु का दिन—अकाल मृत्यु बनकर, छलांग मारकर सामने आ खड़ा होता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है। जितने बच्चों का उत्तरदायित्व नहीं उठ सकता, उतने बच्चे उत्पन्न हो जाते हैं। फिर उनकी रोटी, बीमारी, पढ़ाई, शादी की समस्याएँ सामने आती हैं। कोई बच्चा अयोग्य या कुपात्र निकला तो और नई उलझनें सामने आती हैं। पत्नी यदि सहचरी न हुई, दुर्गुणी निकली तो वह भी रोज एक नई समस्या उत्पन्न कर देती है। शरीर की वासनाएँ यों अपने योग्य समय पर बड़ी प्रिय लगती हैं, पर उनका परिपाक इतना विषम होता है कि सँभाले नहीं सँभलता।

मृगतृष्णा में भटकना

तृष्णाओं से उत्पन्न समस्याओं का परिवार इससे भी बड़ा है। धन को ही लीजिए, उसकी आवश्यकता इसलिए है कि अपनी तथा अपने आश्रित परिवार की गुजर-बसर ठीक तरह होती चले। जिसे इतना प्राप्त होता रहता हो, उसे संतोष करके उतने से काम चलाना चाहिए और शेष बची हुई शक्तियों को आत्म-कल्याण में, परमार्थ के कार्यों में लगाना चाहिए। पर ऐसा करता कौन है ? हर किसी की हविश हजार से लाख की ओर, लाख से करोड़ की ओर दौड़ती है। जमा करना, जोड़ना और फूँकना-उड़ाना इतना प्रिय एवं स्वाभाविक लगता है कि इसकी पूर्ति के लिए निरंतर बेचैनी बनी रहती है। उस बेचैनी की पूर्ति के लिए नाना प्रकार के व्यापार आरंभ किये जाते हैं और फिर उनका जंजाल इतना बढ़ जाता है कि सोने और खाने की भी फुरसत नहीं मिलती। वाहवाही और नामवरी की भी एक ऐसी ही हविश है, जो आदमी को ऐसे ही उड़ाए फिरती है जैसे आँधी के झोंके पत्तों को उड़ाए फिरते हैं। चुनावों में खड़े उम्मीदवारों में से अधिकांश इसी तृष्णा के शिकार होते हैं, विवाह-शादियों में पैसे की होली फूँकी जाती है, इसमें बात बड़ी होने की तृष्णा काम करती रहती है। फैशन और ठाट-बाट पर लोग कितना अधिक खर्च करते हैं। यह वाहवाही की तृष्णा का ही परिणाम है। जिनके संतान नहीं है, पुत्र नहीं है, वे कितने बिलखते हैं यह देखकर आश्चर्य होता है। आज जनसंख्या वृद्धि की समस्या जितनी विषम है, उसे देखते हुए संतान न उत्पन्न करना एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य है, पर कितने ही व्यक्ति संतान न होने की चिंता में ही डूबे रहते हैं। इस प्रकार अगणित तृष्णाएँ मनुष्य के प्राण खाती रहती हैं और उनकी पूर्ति के लिए इतने विशाल ताने-बाने बुनने पड़ते हैं कि जाले में फँसी हुई मकड़ी की तरह, जाल में जकड़े हुए पक्षी की तरह अपने को हम सब प्रकार विवश पाते हैं।

सीमित स्वाभाविक आवश्यकताएँ

आवश्यक वासनाओं और तृष्णाओं से भी पहले शारीरिक स्वाभाविक आवश्यकताएँ हैं। नित्यकर्म, आहार-विहार, रोजी-रोटी परिवार-पोषण जैसे आवश्यक कार्यों की पूर्ति इस जमाने में इतनी विषम हो रही है कि उनकी पूर्ति में भी बहुत समय लगता है। फिर शत्रुओं द्वारा, मित्रों द्वारा कोई न कोई परेशानी भी समय-समय पर उत्पन्न की जाती रहती है। सामाजिक रीति-रिवाजों का बोझ रहता है और यदा-कदा आकस्मिक—अप्रत्याशित आपत्तियाँ भी सामने आ खड़ी होती हैं। इनमें समय लगाना पड़ता है। अधिकांश लोग सचमुच ही बहुत व्यस्त रहते हैं, उनके पास समय का वास्तव में ही अभाव रहता है। आत्म-कल्याण कार्यों के लिए जब वे यह कहते हैं कि—"क्या करें, हमें फुरसत नहीं मिलती," तो उनकी सचाई पर अविश्वास नहीं होता। वस्तुतः हमारी आज की समस्याओं का जो रूप बन गया है, वह ऐसा ही पेचीदा है कि उससे किसी मनुष्य का आध्यात्मिक कार्यों के लिए समय निकाल सकना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

क्षणभंगुर जीवन की घड़ियाँ

इतना होते हुए भी एक बात अत्यंत गंभीरता के साथ विचार करने की है कि यदि आज ही हमारा जीवन समाप्त हो जाए और मृत्यु सामने आ खड़ी हो तो फिर वे समस्याएँ, आकांक्षाएँ और चिंताएँ किस प्रकार सुलझेंगी ? जो हमें अब निरंतर परेशान करती रहती हैं। जीवन को पानी के बुलबुले की तरह क्षणिक कहा गया है, वह असत्य नहीं है। भरी जवानी में, उठती उम्र के नौजवानों की लाशें रोज ही आँखों के आगे से गुजरती हैं, फूल से कोमल बच्चे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देखते-देखते मुरझा जाते हैं, फिर हमारे ही बारे में क्या निश्चय है कि सौ वर्ष की आयु तक जीवित रहने का अवसर मिलेगा ही ? दिन जिस तेजी में गुजरते हैं, उसे देखते हुए सौ वर्ष भी कुछ ही दिनों में बीत सकते हैं। हम लोग इतनी आयु पूरी कर चुके, लगता है अभी कल-परसों तक बचपन के खेल खेलते थे, पर आज अधेड़ हो चले। यही क्रम कुछ दिन चलते रहने पर बुढ़ापा भी सामने आ पहुँचा और मृत्यु भी दूर नहीं है। जिस दिन इस शरीर को त्याग कर हमारा प्राण आकाश में विचरण कर रहा होगा, वह दिन अब बहुत दूर नहीं है। सोचने की बात है कि यदि वह दुःखद घड़ी कल ही सामने उपस्थित हो जाए, तो जिन व्यस्तताओं में से घड़ी भर भी हमें परमार्थ के लिए समय नहीं मिलता, वे सुलझ जाएँगी या उलझी ही पड़ी रहेंगी ?

शरीर और आत्मा के स्वार्थ

जीवन का वास्तविक स्वरूप न समझने के कारण ही हम इतनी परेशानियों में फँसते और समस्याओं में उलझते हैं। यह शरीर हमें एक औजार की तरह, एक वाहन की तरह उपयोग करने के लिए मिला हुआ है। घोड़ा जिसके पास होता है, वह मालिक अपने इस वाहन की आवश्यक देखभाल और व्यवस्था तो करता है, पर उस घोड़े को सजाने-सँभालने में ही चौबीसों घंटे नहीं लगा रहता। उसे उस मंजिल का भी ध्यान रखना होता है, जिसके लिए यह घोड़ा खरीदा गया है। यदि कोई व्यक्ति अपनी मंजिल की बात भूल जाए और घोड़ा किस काम के लिए खरीदा गया है, यह सोचना छोड़कर दिन-रात उस जानवर की साज-सँभाल में ही लगा रहे, तो उसे उपहास का पात्र बनना पड़ेगा, मूर्ख कहलाना पड़ेगा और घोड़ा खरीदने की उसकी मूल योजना का उद्देश्य ही खटाई में पड़ जायेगा। हम सब आज ऐसे ही मूर्ख घुड़सवार का अभिनय कर रहे हैं। क्या हमारे लिए यही उचित है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शरीर की उचित आवश्यकताएँ आसानी से पूरी हो सकती हैं। पेट भरने को रोटी, तन ढँकने को कपड़ा तथा परिवार के उचित पोषण की सीमा तक जिसकी महत्त्वाकांक्षाएँ सीमित हो जाएँ, उसे परमार्थ-साधना के लिए पर्याप्त समय मिल सकता है। वासनाओं और तृष्णाओं पर यदि नियंत्रण प्राप्त कर लिया जाए तो मस्तिष्क को काफी अवकाश आत्म-चिंतन के लिए मिल सकता है। वासनाओं की, तृष्णाओं की महत्त्वाकांक्षाएँ ही मनुष्य का सारा समय, सारा मस्तिष्क, सारा ओज जोंकों की तरह चूसती रहती हैं। यदि इन नागिनों से छुटकारा पाया जा सके तो फिर हर आदमी के पास आत्म-कल्याण के लिए कुछ सोचने और कुछ करने को इतनी बड़ी मात्रा में समय बच सकता है कि वह अपना लक्ष्य पूर्ण कर ले। ८४ लाख योनियों में लाखों वर्षों तक भ्रमण कराने वाली पीड़ाओं से छूट जाये और इस सुरदुर्लभ मानव शरीर का सदुपयोग करके भावी पीढ़ी के लिए प्रकाश दीप की तरह युग-युगांतरों तक यशस्वी बने रहने के लिए अमरता प्राप्त कर ले।

तुलनात्मक विचार करें

यदि शरीर की अमिट वासनाओं और मन की अनंत तृष्णाओं को एक स्वल्प मात्रा में, एक लघु क्षण के लिए तृप्त करने में सारा जीवन लगा दिया जाए और फिर भी आग में घी डालते रहने पर न बुझने वाली ज्वाला की तरह अशांति ही हाथ लगे तो इस गोरखधंधे में उलझा रहना क्या बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य माना जायेगा ? इसके स्थान पर यदि जीवन-यात्रा के आवश्यक और उचित साधन जुटाने में सामान्य श्रम, समय और मनोबल लगाया गया होता और बचे हुए पुरुषार्थ को आत्म-कल्याण एवं परमार्थ में लगाया गया होता तो उससे अनंत काल तक मिलने वाला आनंद प्राप्त हुआ होता और इस धरती पर असंख्य प्राणियों ने उस जीवन से लाभ उठाया होता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीवन के यह दो ही उपयोग हो सकते हैं। एक तृष्णा और वासनाओं के जंजाल में जकड़ा हुआ इतना व्यस्त जीवन, जिसमें आत्म-कल्याण की साधना के लिए न इच्छा जगे और न अवकाश मिले। दूसरा वह जिसमें सीमित आकांक्षाओं के साथ संतोषपूर्वक समय गुजारते हुए, कर्मयोगी की तरह संसार के प्रस्तुत उत्तरदायित्वों को शांतिपूर्वक निबाहते हुए परमार्थ का भी संपादन कर लिया जाए। निश्चित रूप से दूसरा जीवनक्रम अधिक दूरदर्शितापूर्ण एवं अधिक लाभदायक है, किंतु आश्चर्य और खेद की बात है कि आज हम सब उस जीवनक्रम को अपनाए हुए हैं, जिसमें अशांति, बरबादी और पश्चात्ताप के अतिरिक्त और कुछ मिलने वाला नहीं है। तुलनात्मक दृष्टि से इन दोनों प्रकार के जीवनक्रमों पर विचार किया जाना चाहिए और सोचा जाना चाहिए कि लाखों-करोड़ों वर्ष बाद मिले हुए मानव जीवन का सदुपयोग करने की समस्या का हल करना आवश्यक है या नहीं ? अन्य अनेक साधारण समस्याओं को हल करने में कितना सोच-विचार किया जाता है और उसका कारगर हल ढूँढ़ निकाला जाता है। कितने खेद की बात है कि करोड़ों-करोड़ रुपयों से अधिक मूल्यवान् इस सुर दुर्लभ मानव जीवन के सदुपयोग का प्रश्न हम उपेक्षा के कूड़े में ही पटके रहते हैं। यह उपेक्षा एक दिन कितनी कष्टकारक, कितनी पश्चात्ताप भरी वेदना उत्पन्न करती है, इसका अनुमान यदि आज लगाया जाना संभव हो सके तो निश्चय ही इस भूल को आज ही सुधार लिया जाए।

फुरसत का अभाव कब तक ?

आवश्यक कार्यों से सदा फुरसत मिल जाती है। जो काम कम महत्त्व के होते हैं, उन्हें पीछे के लिए छोड़कर, मनुष्य आवश्यक कार्यों को हाथ में लिया करता है। यदि स्त्री या बच्चा सख्त बीमार हो तो कितने ही लाभ के काम को छोड़कर, उनकी चिकित्सा तथा परिचर्या में लगना पड़ता है। व्यस्त आदमियों को भी अपने स्वजनों की जीवन रक्षा के लिए बहुत समय लगाने में कुछ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कठिनाई नहीं होती। जिस कार्य को मनुष्य आवश्यक और उपयोगी समझता है, उसके लिए व्यस्तता के अगणित कामों को पीछे के लिए धकेलकर उस महत्त्वपूर्ण समझे जाने वाले कार्य के लिए समय निकालता है। आत्म-कल्याण के लिए यदि फुरसत नहीं मिलती तो इसका अर्थ केवल इतना ही है कि इस कार्य को सबसे व्यर्थ, सबसे कम उपयोगी माना गया है और उपेक्षा के कूड़ाखाने में पटक दिया गया है। महत्त्वपूर्ण समझे जाने वाले कार्य सदा प्राथमिकता प्राप्त करते हैं, उनके लिए तुरंत समय निकलता है। समय का अभाव आमतौर से उन्हीं बातों के लिए रहता है, जिन्हें हम महत्त्वहीन, अनुपयोगी, बेकार की बात समझते हैं।

आत्म-कल्याण को इतना उपेक्षणीय मानना, फुरसत न रहना और शरीर—मन को प्रसन्न करने के लिए चौबीस घंटे लगे रहना क्या यही नीति हमारे लिए उचित है ? क्या इसी से हमारा जीवन लक्ष्य सफल हो सकेगा ? यह विचारणीय प्रश्न है। इसको सुलझाने में हम जितनी शीघ्रता करें, जितना सही निष्कर्ष निकाल लें उतनी ही हमारी भलाई है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रगति का मूलमंत्र—आत्मोत्कर्ष

मानव प्राणी यदि अपने कर्तव्य-धर्म का ठीक प्रकार पालन करे तो ईश्वर का अविनाशी राजकुमार एवं सृष्टि का मुकुटमणि ही माना जायेगा, क्योंकि उसके अंदर की महानता जब प्रकट, प्रस्फुटित एवं परिपुष्ट होती है तो वह महामानव, देवता एवं परमात्मा के रूप में दृष्टिगोचर होने लगता है। इस धरती पर अब तक ऐसे अगणित अवतारी महापुरुष, नर-रत्न, महान् आत्मा, ऋषि, महर्षि, देवदूत एवं त्यागी-तपस्वी उत्पन्न हुए हैं, जिनके शरीर भले ही आज जीवित न हों, पर उनका अमर यश सर्व साधारण के लिए आज भी प्रकाश-दीप बनकर मार्गदर्शन कर रहा है। कितने ही भूले-भटके व्यक्ति उस प्रकाश में अपना मार्ग खोज निकालते हैं। ऐसे आदर्शवादी नर-रत्न बनने का श्रेय उन्हें ही प्राप्त हुआ है, जिन्होंने अपनी महानता को विकसित किया है। देवत्व हर व्यक्ति के अंदर पर्याप्त मात्रा में भरा पड़ा है, यदि वह चाहे तो आसानी से उसे जगा सकता है और जिसके अंदर का सोया देवत्व जगा, उसका बाह्य जीवन सब प्रकार उज्ज्वल बनना सर्वथा स्वाभाविक है।

नर-रत्नों का भांडागार

भारत का प्राचीन इतिहास ऐसे नर-रत्नों का इतिहास है, जिन्होंने अपने देवत्व को जगाया ही नहीं, जगमगाया भी था। इस देश के प्रत्येक मानव में यह प्रतिस्पर्धा होती रही है कि वह श्रेष्ठता की दृष्टि से अपने किसी साथी से पीछे न रहे। यहाँ हर व्यक्ति ने यह प्रयत्न किया है कि मानवता की कसौटी पर वह सर्वथा खरा उतरे, उसके चरित्र एवं व्यक्तित्व में कोई ऐसा दाग-धब्बा न लगे, जिससे उसके अंतःकरण में निवास करने वाले देवता को लज्जा या संकोच अनुभव करना पड़े। इसी विशेषता के कारण यह भारत भूमि धरती का स्वर्ग कहलाती रही है और यहाँ के तैंतीस कोटि निवासी अपने आदर्शवाद के कारण संसार भर में भूसुर—पृथ्वी के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देवता कहलाते रहे हैं। तैंतीस कोटि देवता इसी भारत भूमि पर निवास किया करते थे।

भौतिक सुख-शांति, समृद्धि एवं संपत्ति मानवीय व्यक्तित्व की अनुगामिनी रही है, रहती है। गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से जो व्यक्ति पूर्णता के निकट पहुँचता जायेगा, वह कभी अभावग्रस्त न रहेगा। स्वेच्छा से त्याग करे, यह बात दूसरी है, पर सद्गुणी व्यक्ति प्रकृति की ओर से कभी अभावग्रस्त या दीन-दरिद्र नहीं रखा जाता। पुरुषार्थी, उद्योगी, दृढ़ चरित्र कर्मयोगी के लिए पर्वत रास्ता देते हैं और बादल उन पर छाया करते हैं। अभावग्रस्त और दीन-दरिद्र तो उन्हें रहना पड़ता है, जिनका व्यक्तित्व दोषपूर्ण है। जिनके गुण, कर्म, स्वभाव का स्तर मानवता के मापदंड तक ऊँचा उठा हुआ है, उनके लिए इस संसार में विपत्तियों का नहीं संपदाओं का ही उपहार प्रस्तुत रहता है। प्राचीनकाल में जिस प्रकार हमारा देश नर-रत्नों से भरा पड़ा था, वैसे ही भौतिक-ऐश्वर्य की भी कमी न थी। जहाँ सज्जनों का बाहुल्य होगा, वहाँ सुख-शांति भी चिरस्थायी रहेगी ही। जहाँ सन्मार्ग का पथ अपनाया हुआ है, वहाँ न तो समस्याएँ उपजती हैं न गुत्थियाँ उलझती हैं।

मानवता के आदर्शों पर आस्था

नव-निर्माण का स्वप्न यही है कि हममें से हर व्यक्ति मानवता के आदर्शों पर सच्ची आस्था रखने वाला और उस पर निरंतर आरूढ़ रहने वाला बने। दूसरे लोगों की कल्पना दूसरी तरह की है। वे सोचते हैं—धन-दौलत, उद्योग, संपत्ति एवं साधन-सुविधाएँ जुटा देने से मनुष्य का जीवन स्तर ऊँचा उठ जायेगा और उसकी समस्याएँ सुलझ जायेंगी। संपत्ति की वृद्धि करना अच्छी बात है, सुविधाएँ बढ़ेंगी तो उससे आसानी ही रहेगी, पर यह ध्यान रखना चाहिए कि यदि भावना और आदर्श की दृष्टि से मनुष्य का आंतरिक स्तर गिरा रहा तो संपत्ति और सुविधा बढ़ने से भी चैन न मिलेगा, वरन् उन्हें पाकर अनीतिवान् मनुष्य और भी अधिक दुष्कर्म करने लगेगा, और भी अधिक विपत्ति में फँसेगा। ऐश्वर्य बढ़ना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चाहिए, पर साथ ही उत्तरदायित्व को समझने एवं उपलब्ध साधनों का सदुपयोग करने की विवेकशीलता भी बढ़नी चाहिए।

मनुष्य का आंतरिक स्तर इसी आधार पर ढाला जाना चाहिए कि वह स्वयं चैन से रहे और दूसरों को चैन से रहने दे। स्वयं प्रगतिशील बने और दूसरों को प्रगति के पथ पर चलने में सहयोग प्रदान करे। अनीति को न तो सहन करे और न किसी को अन्यायपूर्वक सताए, अपना कर्तव्य पालन करे और दूसरों के सामने ऐसा आदर्श प्रस्तुत करे, जिससे उन्हें भी श्रेष्ठता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिले। धन-संग्रह की तृष्णा, पद, अधिकार, सत्ता एवं अहंकार की पूर्ति में आज जिस प्रकार लोग अपनी उन्नति समझते हैं और मौज-मजा कर लेने को जैसे जीवन की सफलता मानते हैं, वैसे ही यदि जीवन को आदर्श, महान्, कर्तव्यरत एवं धर्मपरायण बनाने की हर व्यक्ति को लगन लग जाये, तो मनुष्य आदर्श मनुष्य बन सकता है और मानव प्राणी कितना महान् है, इसका प्रतिक्षण अनुभव कर सकता है। सद्भावनाओं में जिन लोगों का मन डूबा रहेगा, उनका शरीर आदर्श कार्य ही करेगा और उन कार्यों से उन व्यक्तियों का निज का कल्याण तो होगा ही, साथ ही जो उनके संपर्क में आएँगे वे भी संतोष एवं प्रसन्नता अनुभव करेंगे।

विकास का सच्चा प्रयास

आज हम उन्नति तो चाहते हैं, पर मानवीय सद्गुणों के विकास का प्रयत्न नहीं करते। समाज में शांति और संपन्नता रहे यह सभी की इच्छा है, पर इसके मूल आधार पारस्परिक प्रेम भाव की वृद्धि का उपाय नहीं करते। भौतिक-सुविधाओं में वह शक्ति नहीं है कि व्यक्ति को श्रेष्ठ बना दें, पर अच्छे व्यक्तित्व में यह गुण मौजूद हैं कि वह संपन्नता का उपार्जन कर ले। हम इस तथ्य को जब तक न समझेंगे, तब तक दौलत के पीछे भागते रहेंगे। आदर्शवाद की उपेक्षा करके संपन्नता के लिए घुड़-दौड़ लगाने का परिणाम, लाभ के स्थान पर हानिकारक ही सिद्ध हो सकता है। यह दुनिया अधिक अच्छी, अधिक सुंदर, अधिक संपन्न अधिक शांतिपूर्ण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बने, यदि हम सब यही चाहते हैं, तो फिर इस प्रगति के मूल आधार—व्यक्तित्व की श्रेष्ठता की ओर ध्यान क्यों नहीं दिया जाता, यही आश्चर्य है। प्रगति तभी स्थायी रह सकेगी, सुख-शांति में तभी स्थिरता रहेगी, जब मनुष्य अपने को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाने का प्रयत्न करे। इस उपेक्षित तथ्य को अनिवार्य आवश्यकता के रूप में जब तक हम स्वीकार न करेंगे और व्यक्तिगत एवं सामूहिक चरित्र को ऊँचा उठाने के लिए कटिबद्ध न होंगे, तब तक अगणित समस्याओं की उलझनों से हमें छुटकारा न मिलेगा।

मलीनता का वातावरण

आत्मा स्वभावतः पवित्र है, उसमें परमात्मा का प्रचुर अंश विद्यमान रहने से देवत्व की सभी विशेषताएँ और संभावनाएँ मौजूद हैं। पर प्रस्तुत वातावरण की मलीनता से प्रभावित होकर, वह भी मलीन जैसा बन जाता है। अपनी यह दुर्गति देखना हमें कदापि सहन न होना चाहिए। कोई दूसरा कीचड़ में फँस जाए या नदी-नाली में गिर पड़े तो हमें उस पर दया आती है और उसे निकालने के लिए उदारतापूर्वक प्रत्येक संभव सहायता देने का प्रयत्न करते हैं। यह उचित भी है और मानव धर्म के अनुकूल भी, किंतु आश्चर्य तब होता है, जब अपने आपको मलीनता की कीचड़ में कंठ तक धँसे होने पर भी स्वयं निकलने का प्रयत्न नहीं करते और न उसके संबंध में कुछ सोचते हैं। औरों की सहायता करना पुण्य है; पर अपनी सहायता करना, अपना उद्धार करना, अपना उत्कर्ष करना तो उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। आत्मा का उद्धार करना सबसे बड़ा पुण्य-परमार्थ माना गया है।

सुख की खोज करते-करते मनुष्य दौलत की देहरी पर अपना सिर पटकता रहता है। दौलतमंदी के बाहरी ठाट-बाट को देखकर, भोग-सामग्री को देखकर यह भ्रम होता है कि वस्तुतः यही सुख है और इनकी स्थिति यदि अपने को प्राप्त हो जाए तो हम भी भरपूर आनंद उठा सकेंगे, पर यह बात अनुभव की कसौटी पर कसे जाने से गलत ही सिद्ध हुई है। दौलत की आवश्यकता उतनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही मात्रा में है, जितने से कि दैनिक जीवन का साधारण कार्यक्रम पूरा होता रहे, इससे अधिक परिग्रह जिसके पास भी होगा, जहाँ भी होगा वहाँ नाना प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होंगी और आदर्शवाद के अभाव में वे समस्याएँ ऐसे उलझती रहेंगी कि व्यक्ति अपनी साधारण और स्वाभाविक शांति से भी हाथ धो बैठेगा। धन कमाना या संग्रह करना अपने आप में कुछ भी महत्त्व नहीं रखता, महत्त्वपूर्ण तो उसका सदुपयोग ही है। कितने ही व्यक्ति विपुल-संपदा के स्वामी होते हैं, पर उसका उपयोग नहीं जानते। कंजूस की तरह उसे जोड़ते रहते हैं और अंत में दूसरों के लूट ले जाने के लिए सब कुछ पड़ा छोड़ जाते हैं। धन से किसी ने यदि कुछ लाभ उठाया है तो उसका श्रेय-सदुपयोग करने वाली बुद्धि को ही दिया जायेगा। यह विवेक बुद्धि ही सुख-शांति की सच्ची आधारशिला है।

सच्ची प्रगति का एकमात्र उपाय

आत्म-कल्याण के लिए सद्गुणों की, सद्विचारों की, सद्भावनाओं की, सत्कर्मों की अभिवृद्धि होनी चाहिए। जब तक यह प्रगति रुकी है, तब तक प्रगति जैसी लगने वाली तड़क-भड़क एक खोखली विडंबना मात्र ही रहेगी। मनुष्य का सच्चा धन उसका आत्मिक स्तर ही है। यह स्तर जिसका जितना ऊँचा है, वह उतना ही धनी माना जायेगा। महानता वस्तुओं में नहीं, मानवीय गुण, कर्म, स्वभाव में सन्निहित रहती है। हम उत्कर्ष की ओर चढ़ें, उन्नति करें, सुख-साधन बढ़ायें, पर यह भली-भाँति याद रखें, इस सब धन-संपदा से नहीं, मानवीय सद्गुणों के मूल्य पर ही वह आनंद और उत्कर्ष प्राप्त हो सकता है, जो वास्तविक, सुदृढ़ और चिरस्थायी है।

❐❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वार्थ को नहीं परमार्थ को साधा जाये

स्वार्थ और परमार्थ में बहुत थोड़ा-सा अंतर है। स्वार्थ उसे कहते हैं, जो शरीर को तो सुविधा पहुँचाता हो पर आत्मा की उपेक्षा करता हो। चूँकि हम आत्मा ही हैं, शरीर तो हमारा वाहन या उपकरण मात्र है, इसलिए वाहन या उपकरण को लाभ पहुँचे, किंतु स्वामी दुःख पाये तो ऐसा कार्यक्रम मूर्खतापूर्ण कहा जायेगा। इसके विपरीत परमार्थ में आत्मा के कल्याण का ध्यान प्रधान रूप से रखा जाता है, आत्मा का उत्कर्ष होने से शरीर को सब प्रकार सुखी एवं संतुष्ट रखने वाली आवश्यक परिस्थितियाँ अपने आप उपस्थित होती रहती हैं। केवल अनावश्यक विलासिता पर ही अंकुश लगता है। फिर भी यदि कभी ऐसा अवसर आए कि शरीर को कष्ट देकर आत्मा को लाभ देना पड़े, तो उसमें संकोच न करना ही बुद्धिमानी है। यही परमार्थ है। परमार्थ का अर्थ है—परम स्वार्थ। जिस कार्य के द्वारा तुच्छ स्वार्थ की, शरीर तक सीमित रहने वाले स्वार्थ की पूर्ति होती है, वही त्याज्य है। जो स्वार्थ अपनी आत्मा का, परिजनों का एवं सारे समाज का हित साधन करता है, वह तो प्रशंसनीय ही है। ऐसा परमार्थ सर्वत्र अभिनंदनीय माना जाता है। वही मनुष्य की सर्वोत्तम दूरदर्शिता का चिह्न भी है। इसी पथ पर चलते हुए इस सुर दुर्लभ मानव जीवन का लक्ष्य पूरा हो सकता है।

परमार्थ की साधना

आत्म-कल्याण और युग-निर्माण का जो कार्यक्रम लेकर हम चले हैं, वह सच्चे अर्थों में परमार्थ की साधना है, क्योंकि उससे अपना तो लौकिक और पारलौकिक हित साधन होता ही है, साथ ही आसपास का वातावरण भी सुधरता है, दूसरों को भी लाभ मिलता है। युग-निर्माण कार्यक्रम की योजना सफल होने से दूसरों का लाभ है ही, किंतु साथ ही अपना दुहरा लाभ है। जिस सुधार कार्य को हम आरंभ करेंगे, वह सबसे पहले हमारे निकटवर्ती लोगों को प्रभावित करेगा, क्योंकि यह प्रचार और प्रसार कहीं दूर देश में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नहीं वरन् अपने घर-कुटुंब और पड़ौस से ही आरंभ करना है। उनके विचार उत्कृष्ट बनने से, उनमें श्रेष्ठता और देवत्व की मात्रा बढ़ने से निश्चय ही हम पर उसका अत्यधिक प्रभाव पड़ेगा। वे असहयोगी एवं आक्रमणकारी न रहकर, हमारे लिए प्रेम, सहयोग एवं सज्जनता से बरतने वाले बनेंगे। इससे अपनी आंतरिक शांति तो बढ़ेगी ही, बाहरी सहयोग एवं स्नेह भाव बढ़ने से संगठन जैसी शक्ति भी बढ़ेगी और सहयोग रहने से आर्थिक, सामाजिक एवं अन्य अनेक प्रकार के लाभों में भी अभिवृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त लोक सेवा, जनहित एवं व्यक्ति-निर्माण का जो पुण्य प्राप्त होगा, वह भी साथ में जुड़ा हुआ है। यह दुहरा लाभ मिलता है।

सुरक्षा की चारदीवारी

प्राचीनकाल में राजा लोग अपनी राजधानी की सुरक्षा के लिए नगर से बाहर एक बड़ा परकोटा बनाते थे, ताकि शत्रु का हमला उस परकोटे के बाहर रुका रहे और अपनी सुरक्षा में सहायता मिले। किसी जमाने में युग-निर्माण जैसे कार्यक्रम विशुद्ध पुण्य की दृष्टि से कोई भले ही करते रहे हों, पर आज वह हमारा सर्वोपरि स्वार्थ है। समाज का ढाँचा अब इतना शृंखलाबद्ध एवं सघन हो गया है कि एक का प्रभाव दूसरे पर पड़े बिना नहीं रह सकता। हम व्यक्तिगत रूप से अपनी भौतिक उन्नति कितनी ही कर लें, पर बुरे स्वभाव के कुटुंबियों, मित्रों और पड़ौसियों से घिरे रहने पर हमें निरंतर चिंतित रहना पड़ेगा। जो सद्गुण हमने अपने स्वभाव में बड़ी कठिनाई से सम्मिलित किये हैं, उन्हें भी बुराई का वातावरण स्थिर न रहने देगा और उनकी दुष्टता की प्रतिक्रिया में हमारी अच्छाई भी डूबने लगेगी। इसलिए अब अपने आपकी भलाई, अपने आपकी अच्छाई की संकुचित सीमा में सोचते रहने से काम न चलेगा। अब वह दायरा बढ़ाकर कुछ अधिक विस्तृत क्षेत्र में फैलाना पड़ेगा, तभी अपनी शांति और सुरक्षा की समस्या हल होगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सच्चा स्वार्थ इसी से सधेगा

पारमार्थिक कार्यक्रम सच्चे अर्थों में अत्यंत दूरदर्शितापूर्ण स्वार्थ-साधन है, क्योंकि उसके द्वारा हम अपने आस-पास सज्जनों का निर्माण करते हैं, सज्जनों का स्नेह एवं सहयोग हमारे सुख में बढ़ोत्तरी ही करेगा। सेवा करने का आत्म संतोष, यश, प्रतिष्ठा एवं परलोक के लिए पुण्य-संचय का विशेष लाभ इसके अतिरिक्त है। इस ओर बढ़ाए हुए कदम हमें युग-निर्माता, लोकसेवी, देशभक्त, समाज-सुधारक, धर्मात्मा, परोपकारी एवं महापुरुषों की श्रेणी में ले जाकर बिठा देते हैं। इतिहासकारों की कलम के नीचे हमारा नाम जमता है और जनता हमें अभिनंदनीय मानती है, यह लाभ इसके अतिरिक्त है। वस्तुतः यह अपनी और अपने बच्चों की स्वार्थ-साधना का श्रेष्ठ तरीका है। इन प्रयत्नों से कोई और न सुधरे, केवल हमारा परिवार ही संभ्रांत बन जाये तो उसकी सज्जनता से हमारा आज का समय भी आनंद से कटेगा और बुढ़ापा भी उनके बीच रहते हुए शांति से बीतेगा। कुसंस्कारी परिजन नरक में रहने वाले यमदूतों से अधिक दुःख देते हैं, इसका अनुभव उन्हें भली-भाँति होगा जिनको स्त्री, पति, पुत्र, पुत्री, भाई, भतीजे, दामाद, बहनोई कर्कश, उद्दंड एवं कुमार्गगामी मिले हैं। उनकी गतिविधियों से जिसका जी दिन-रात जलता रहता है, वह बेचारा घायल से भी बुरा पड़ता है। घायल अपने कष्ट को कह तो सकता है, दूसरों को अपना जख्म दिखा तो सकता है, कराह तो सकता है; पर उस बेचारे के लिए तो इस पर भी प्रतिबंध है। जी की जलन में भीतर ही भीतर सुलगते रहने की व्यथा कितनी कष्टकारक होती है, इसे कोई भुक्तभोगी ही जान सकता है।

समय से पहले चेतें

इस व्यथा से छुटकारा दिलाने का कोई कारगर उपाय यदि मिल सके तो कोई इस प्रकार का परिजन-पीड़ित—पड़ौसियों और स्वजन-संबंधियों का सताया हुआ मनुष्य, उसके लिए बड़े से बड़ा त्याग और खर्च करने को तैयार हो सकता है। हमें सोचना चाहिए कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भयंकर बीमारी में फँस जाने पर प्रचुर धन खर्च करने की अपेक्षा, उस बीमारी को न होने देने या रोके रहने के लिए समय रहते कुछ थोड़ा खर्च कर लिया जाये तो क्या वह बुद्धिमानी न होगी ? शत्रु का हमला होने पर उसे लड़कर परास्त करने का तरीका महँगा और समय रहते शत्रु को निरस्त कर देने का तरीका सस्ता है। हैजा या इन्फ्लुऐंजा फैलने के दिनों में क्या हम अपने घर में सबको सुरक्षा की सुई नहीं लगवा देते ? सुरक्षा की सुई के रूप में ही हमें अपने निकटवर्ती क्षेत्र में सद्भावनाओं और सत्प्रवृत्तियों का शिक्षण कार्य आरंभ कर देना चाहिए। अपने बच्चों का भविष्य बनाने और उन्हें सुखी रखने के लिए यों हम बहुत कुछ सोचते और बहुत कुछ करते हैं। अच्छा भोजन, अच्छे वस्त्र, ऊँची शिक्षा, विवाह-शादी में विपुल खर्च, चिकित्सा, मनोरंजन आदि की सुविधाएँ जुटाने में हर अभिभावक बहुत त्याग और बहुत खर्च करता है, इन बातों पर सोचता-विचारता भी बहुत रहता है। अपने प्यारे बच्चों और परिजनों के लिए ऐसा करना उचित भी है। पर इसी स्थान पर दाल में नमक डालना भूल जाने की तरह एक बहुत बड़ी भूल हम यह कर बैठते हैं कि उन्हें सुसंस्कारी बनाने के लिए कुछ नहीं करते। शिक्षा तो देते दिलाते रहते हैं पर दीक्षा की ओर ध्यान ही नहीं दिया जाता।

कुसंस्कारों की गरिमा

हजार योग्यताएँ और लाख समृद्धियाँ एक ओर और सुसंस्कारों को एक ओर रखकर तौला जाये तो सुसंस्कारों का पलड़ा भारी बैठेगा। सुसंस्कारी व्यक्ति गरीब रहते हुए भी आनंद एवं उल्लास का जीवन व्यतीत कर सकता है, पर कुसंस्कारी व्यक्ति कुबेर जैसी संपदा और इंद्र जैसे वैभव का स्वामी होते हुए भी संतप्त रहेगा और अपने संबंधियों को संतप्त करेगा। इसलिए प्रत्येक बुद्धिमान् व्यक्ति का कर्तव्य है कि अपने उत्तराधिकारियों को जमीन, घर, नकदी, शिक्षा आदि से विभूषित करने की बात ही न सोचे वरन् उन्हें सुसंस्कारी बनाने के लिए भी प्रयत्न करे। यह कार्य अध्यापकों पर नहीं छोड़ा जा सकता, यह तो हमारे स्वयं करने का है। युग-निर्माण योजना के अंतर्गत व्यक्ति निर्माण के लिए हम जो कुछ करते हैं, उससे इसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आवश्यकता की पूर्ति होती है। अपने परिजनों को दीक्षा देने का, उन्हें सुसंस्कारिता, सद्विचार, सद्भाव, उदार दृष्टिकोण, सच्चरित्रता, मानवता एवं दूरदर्शिता अपनाने के लिए प्रेरणा देने का जितना कारगर उपाय इस योजना में सन्निहित है, उतना अन्य प्रकार से संभव नहीं हो सकता। यदि हम इस ओर उपेक्षा करते हैं, तो मानव जीवन को धन्य बनाने वाले एक श्रेष्ठ पुण्य परमार्थ से ही वंचित नहीं होते वरन् अपने निकटवर्ती लोगों को कुमार्गगामी बनने से रोकने में उपेक्षा करने के अपराधी भी बनते हैं और उस अपराध का दंड हमारे परिजन और पड़ौसी वैसे ही देंगे जैसे इन दिनों में छोटे-छोटे कारणों पर अपने परिवार के लोगों को मार तक डालने वाले समाचारों में चर्चा होती है।

संकीर्णता नहीं, दूरदर्शिता चाहिए

हम स्वार्थ में ही न लगे रहें, परमार्थ की बात भी सोचें। परमार्थ किसी पर कोई अहसान या उपकार करना नहीं वरन् अपने ही दूरवर्ती एवं चिरस्थायी स्वार्थ को बुद्धिमत्ता के साथ संपन्न करना है। जो परमार्थ साधता है, वही सच्चा स्वार्थी है क्योंकि उसे आज ही नहीं कल भी सुख प्राप्त होता है। उसकी आज की ही अभिलाषा पूर्ण नहीं होती वरन् चिरकाल तक अपने अभीष्ट की सिद्धि का लाभ उठाता रहता है। हम संकुचित स्वार्थ की सीमा से बाहर सिर उठाकर यदि दूर तक देख सकें, दूर तक सोच सकें तो व्यक्ति निर्माण की, युग-निर्माण की प्रस्तुत योजना रोटी कमाने के आवश्यक कार्यों की तरह ही उपयोगी एवं अपनाने योग्य प्रतीत होगी। यदि इसके लिए हम कुछ करने भी लगें तो प्रतीत होगा कि हम अपने जीवन के बहुमूल्य क्षणों का उपयोग एक ऐसे कार्य में कर रहे है जिससे हमारा, हमारे परिजनों का, सारे संसार का सब प्रकार भारी हित साधन संभव होता है, हो रहा है।

❐❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्व मानव की अखंड अंतरात्मा

विश्व मानव की आत्मा एक और अखंड है। समस्त जड़-चेतन उसी के अंतर्गत अवस्थित हैं। इस आत्मा में अपनी एक दिव्य आभा, स्वर्गीय ज्योति जगमगाती है। अनेक मल-आवरणों ने उसे ढक रखा है। यदि वह ज्योति इन आवरणों को चीरकर अपने शुद्ध स्वरूप में जगमगाने लगे तो उसका आलोक जहाँ भी पड़े वहीं आनंद का परम आह्लादकारी दृश्य दिखाई दे सकता है। इस प्रकाश की सीमा में आने वाली हर वस्तु स्वर्गीय बन सकती है। ऐसी बहुमूल्य ज्योति हमारे अंदर मौजूद है। स्वर्ग की सारी साज-सज्जा हमारे भीतर प्रस्तुत है, पर अविद्या के प्रतिरोधी तत्त्वों ने उसे भीतर ही अवरुद्ध कर रखा है। फलस्वरूप मानव प्राणी स्वयं नारकीय स्थिति में पड़ा हुआ है और वैसा ही नरक तुल्य वातावरण अपने चारों ओर बनाए बैठा है।

आत्मा स्वार्थ की संकुचित सीमा में अवरुद्ध होकर, आज खंडित हो रही है। व्यक्ति अपने को दूसरों से अलग खंडित देखता है, फलस्वरूप चारों ओर संघर्ष और कलह का वातावरण उत्पन्न होता है।

वस्तुतः हम सब एक हैं, अखंड हैं, सब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। एक का सुख-दुःख दूसरे का सुख-दुःख है। उठना है तो सबको एक साथ उठना होगा, सुख ढूँढना है तो सबको उसे बाँटना होगा। खंडित व्यक्ति स्वार्थ की संकुचित सीमा में रहकर, अपने शरीर के लिए कुछ भी—कितना ही इकट्ठा क्यों न कर ले, पर इससे उसे कोई चैन न मिलेगा। जब तक हम "अपने को सबमें और सबको अपने में" न देखने लगेंगे, तब तक मानव अपनी महानता से, मानवता से वंचित ही बना रहेगा।

एक-दूसरे के प्रति प्रेम, आत्मीयता, ममता, स्नेह, उदारता, क्षमा, करुणा की दृष्टि से देखें और जो कुछ अपने पास है, उसका लाभ दूसरों को देने के लिए प्रस्तुत रहें, तभी मनुष्य की मनुष्यता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सार्थक हो सकती है। आध्यात्मिकता का संदेश है कि हममें से हर कोई अपने भीतर दृष्टि डाले, अंतर्मुखी होकर देखें कि उसके भीतर कितनी प्रचुर मात्रा में दैवी संपत्ति भरी पड़ी है। यदि वह उसे जान ले, देख ले और उसका सदुपयोग करने लगे तो मरने के बाद नहीं—इसी जीवन में—आज ही स्वर्ग का आनंद ले सकता है। यह कथा-कल्पना नहीं वरन् सुनिश्चित तथ्य है कि अपने आपको जान लेने पर मनुष्य सब कुछ जान सकता है। अपने आपको सुधार लेने पर संसार की हर बुराई सुधर सकती है। अपने को बना लेने पर बाहर के जगत् में सब कुछ बन सकता है, अपने को विकसित कर लेने पर बाहर की सारी गिरावट उत्कृष्टता में परिणत हो सकती है। व्यक्ति महान् बने, समाज महान् बने तथा सारी वसुधा महानता से ओत-प्रोत हो, यह मिशन लेकर अखंड ज्योति जन्मी है। जब तक वह जलेगी तब तक इसी प्रयत्न में लगी रहेगी।

दूसरे हमसे भिन्न नहीं, हम दूसरों से भिन्न नहीं, इसी मान्यता में अध्यात्मवाद का सारा रहस्य सन्निहित है। दूसरों की पीड़ा जब अपनी पीड़ा लगने लगे, दूसरों को दुःखी देखकर जब अपने अंदर करुणा उपजे, दूसरों को सुखी और समृद्ध देखकर जब अपने भीतर संतोष और हर्ष की लहर लहराए, तब समझना चाहिए कि हम आध्यात्मिकता के वास्तविक स्वरूप को पहचानने और ग्रहण करने की स्थिति में पहुँच रहे हैं। जब तक व्यक्ति अपने को समाज से भिन्न समझता है, लोकहित से अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को अधिक महत्त्व देता है, तब तक वह मानवीय आदर्शों से पतित ही माना जायेगा।

आत्मा अखंड है। हम सब एक ही नाव के यात्री, एक ही मंजिल के राही हैं; एक ही डाल पर रहने वाले पक्षी, एक ही बिल में रहने वाले चींटी-चींटे, जैसे परस्पर एक ही सूत्र में बँधे हुए हैं। सबका सुख-दुःख एक है। यदि संसार में पाप बढ़ेगा तो उसके बुरे प्रतिफलों से पुण्यात्माओं को भी कष्ट सहना पड़ेगा। पेड़ गिर पड़े तो उस पर रहने वाले सभी पक्षी आश्रयविहीन होंगे, बिल में पानी भर जाये तो उसमें रहने वाले सभी कीड़े संकट में पड़ेंगे। मानव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जाति का भाग्य एक ही लिपि में लिखा गया है। यदि उत्थान होना है, सुख मिलना है तो वह सामूहिक ही हो सकता है। चोर लोग अमीर रहना चाहें और सब गरीबी भुगतें, यह स्थिति देर तक नहीं रह सकती। चाहे साम्यवाद हो चाहे अध्यात्मवाद, दोनों ही दृष्टिकोणों से यह गर्हित माना जायेगा और इसे बदलने का प्रयत्न किया जायेगा।

आत्मा एक व्यापक तत्त्व है, वह अनंत और अखंड है। पानी की हर लहर पर एक अलग सूरज चमकता दीखता है, पर वस्तुतः असंख्यों सूर्य कहाँ होते हैं ? एक ही सूर्य की आभा तो अगणित लहरों पर स्वतंत्र प्रतिबिंब जैसी दीखती है। आत्मा भी एक है, उसकी अखंड ज्योति एक है। हम लहरों पर चमकने वाले प्रतिबिंबों की भाँति अलग भले ही दिखाई दें, पर वस्तुतः हम सब एक हैं। एक ही ज्वाला की अगणित चिनगारियाँ विभिन्न शरीरों में जलती दीखती हैं, एक ही बिजलीघर की प्रचंड धारा अनेक बल्बों में चमकती है, पर धारा का उद्गम एक है।

इस एकता को जितनी जल्दी हम समझ लें, उतना ही उत्तम है। वेदांत का अद्वैत सिद्धांत ही सत्य है। द्वैत मिथ्या है। द्वैत को मिटाकर अद्वैत की प्राप्ति के लिए ही अध्यात्म शास्त्र और साधना विज्ञान का आविर्भाव हुआ है। जीव जब अपनी सत्ता को भुला करके ईश्वर में लीन हो जाता है, तब समाधि का, मुक्ति का सुख मिलता है। लौकिक जीवन में भी सुख-शांति का यही मार्ग है। व्यक्ति अपने संकुचित स्वार्थों की शैली में सोचना छोड़कर समाज की, समूह की बात सोचने लगे तो सर्वांगीण मुक्ति का वातावरण विनिर्मित हो सकता है। राजनीतिक स्वतंत्रता, आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक स्वतंत्रता, धार्मिक स्वतंत्रता आदि स्वतंत्रता के विविध आंदोलन चलते रहते हैं। आत्मा स्वतंत्र है, वह बंधन में नहीं रहना चाहती। जब छोटी-सी चिड़िया तक पिंजड़े में बंद रहने की पराधीनता स्वीकार नहीं करती और अवसर मिलते ही उन्मुक्त आकाश में उड़ जाती है, तो आत्मा ही क्यों पराधीन रहे ? स्वाधीनता की उसकी भूख स्वाभाविक है। यह भूख आत्मिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वतंत्रता में ही जाकर पूर्ण होती है। व्यक्ति छोटे-से शरीर के लिए, छोटे-से कुटुंब के लिए ही सब कुछ सोचे और सारे संसार की कठिनाई की ओर से आँखें बंद कर ले, तो यह संकीर्णता, सीमाबद्धता, स्वार्थपरता ही कही जायेगी। इसी भव-बंधन में बँधा हुआ तो प्राणी जन्म-मरण की फाँसी में झूलता रहता है।

संकुचित स्वार्थों की सीमा में अवरुद्ध व्यक्ति तुच्छ है। जो अपनी ही बात सोचता है, अपने ही दुःख से दुःखी और अपने ही सुख से सुखी है, वह अभागा प्राणी पानी की एक बूँद की तरह है, जिसका अस्तित्व उपहासास्पद ही रहता है। समुद्र में अनेक बूँदों का समाज रहता है, इसलिए समुद्र भी महान् है और उसकी हर बूँद भी धन्य है। सूर्य अपनी ज्योति को अपने घर में ही प्रकाशित नहीं रहने देता, वरन् उसकी किरणें लोक-लोकांतरों तक निःस्वार्थ भाव से बिखरी रहती हैं। इसी से सविता को देवता कहते हैं। वे मनुष्य भी देवता ही हैं, जो ससीमता के बंधन तोड़कर, असीम बनने जा रहे हैं, जिन्होंने स्वार्थ का परमार्थ में परिपाक करने का निश्चय कर लिया है।

इस संसार का भाग्य और भविष्य एक ही नाव में रखा हुआ है। विज्ञान की प्रगति ने इस एकता को और भी अधिक घनिष्ठ कर दिया है। इसलिए हमें सुख और दुःख की, लाभ और हानि की, उत्थान और पतन की, जीवन और मरण की समस्या पर व्यक्ति की दृष्टि से नहीं—समूह की, समाज की, संसार की दृष्टि से विचार करना चाहिए। जिसमें सबकी भलाई है उसी में अपनी भलाई हो सकती है, जिसमें सबका सुख और संतोष है, उसी में हमें भी सुख-शांति मिल सकती है। अपने को सुखी बनाने की इच्छा करने वाले प्रत्येक को विस्तृत दृष्टि से देखना चाहिए और आत्मा की अखंड ज्योति को एक सीमित क्षेत्र तक संकुचित न रखकर, विस्तृत विशाल क्षेत्र में फैलने देना चाहिए। सबके सुख में ही हमारा सुख सन्निहित है।

❐❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम भी सत्य को ही क्यों न अपनाएँ ?

जिन्होंने जीवन में आध्यात्मिक प्रगति की है, उन्होंने सत्य का सहारा लिया है। सत्य की उपेक्षा करके कोई आत्म कल्याण के मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सका। इस पथ के पथिकों ने अपनी यात्रा में सत्य की प्रमुखता को ही सफलता का कारण बताया है।

सत्य से भरी हुई वाणी ही अमृतवाणी है। सत्य बोलना ही सनातन धर्म है। संत जन सत्य पर सदा दृढ़ रहते हैं। कोई साधक अन्य समस्त साधनाओं को छोड़ दे और केवल एक सत्य को ही पकड़े रहें तो वह संसार सागर से पार हो सकता है।

कोई शत्रु अपनी जितनी हानि कर सकता है, उससे कहीं अधिक हानि असत्य मार्ग का अवलंबन करने वाला मन अपनी हानि कर लेता है। जो असत्य बोलता है वह कौन-सा पाप नहीं कर सकता ?

नरकगामी वे होते हैं जो झूठ बोलते हैं और वे भी जो वचन देकर विश्वासघात करते हैं। जिसने झूठ नहीं छोड़ा उसने कोई पाप नहीं छोड़ा। असत्यवादी की साधुता उलटे रखे हुए घड़े के समान है, जिस पर ज्ञान और प्रेम की वर्षा का पानी एक बूँद भी नहीं ठहरता।

जैन धर्म के प्रवर्तक भगवान् महावीर का कथन है—

"सदा सावधान और प्रमादरहित होकर सत्य का पालन करें। संसार के सभी सत्पुरुषों ने असत्य को निंदित ठहराया है। क्रोध में, भय में, हास्य-विनोद में भी असत्य भरे पाप वचन न बोले। खूब सोच-विचार कर परिमित ही बोलना चाहिए, ताकि असत्य का उच्चारण न हो। आत्म कल्याण के इच्छुक साधक को परिमित, असंदिग्ध, परिपूर्ण, स्पष्ट, वाचालतारहित और किसी को पीड़ा न पहुँचाने वाली सत्य से युक्त मधुर वाणी ही बोलनी चाहिए।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्री रामकृष्ण परमहंस कहा करते थे—

"कलियुग की तपस्या सत्य भाषण है। सत्य के बल से भगवान् को प्राप्त किया जा सकता है। असत्य को अपनाने वाले मनुष्य का धीरे-धीरे सर्वनाश ही हो जाता है।"

स्वामी रामतीर्थ का कथन है—

"चाहे सारी दुनिया भी तुम्हारे विरुद्ध होती हो, तो भी तुम सत्य पर आरूढ़ रहो। सत्य बहुत ही मूल्यवान् है, उसे प्राप्त कर सको तो ब्रह्म की प्राप्ति सहज है। सत्य के लिए यदि अभावग्रस्त जीवन अपनाना पड़े, सांसारिक कामनाओं और महत्त्वाकांक्षाओं से विमुख होना पड़े, कुटुंबी और रिश्तेदारों को नमस्कार करना पड़े, यहाँ तक कि चिर-पोषित अन्य विश्वासों को भी छोड़ना पड़े तो उन्हें छोड़ देना ही उचित है। यह सत्य के साक्षात्कार का मूल्य है। जब तक उस मूल्य को न चुकाया जायेगा—सत्य की उपलब्धि न हो सकेगी।"

योगी अरविंद की अनुभूति है—

"सचाई समस्त सच्ची प्राप्तियों का मूल आधार है। यही साधन, मार्ग और लक्ष्य है। सच्चे बनने पर तुम दिव्य जीवन से संबंधित हो सकोगे।"

युग पुरुष महात्मा गाँधी ने कहा है—

"परमेश्वर का सच्चा नाम 'सत्' अर्थात् सत्य है। इसलिए परमेश्वर सत्य है, यह कहने की अपेक्षा 'सत्य ही परमेश्वर है'—यह कहना अधिक अच्छा है। सत्य की आराधना के लिए ही हमारा अस्तित्व है, इसी के लिए हमारी प्रत्येक प्रवृत्ति और इसी के लिए हमारा श्वासोच्छवास होना चाहिए। साधारणतया सत्य का अर्थ सच बोलना मात्र समझा जाता है, परंतु विचार में, वाणी में और आचार में सत्य का होना ही सत्य है। इस सत्य को पूर्णतया समझने वाले के लिए जगत् में और कुछ जानना शेष नहीं रह जाता। सत्य को परमेश्वर मानना मेरे लिए अमूल्य धन रहा है। मैं चाहता हूँ कि यही हममें से सबके लिए हो।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती ने लिखा है—

"सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग के लिए सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचारकर करने चाहिए। जो भक्त उपासना का अभ्यास करना चाहे उसके लिए उचित है कि वह किसी से बैर न रखे। सबसे प्रीति करे। सत्य बोले। मिथ्या कभी न बोले। चोरी न करे। सत्य का व्यवहार करे। जितेंद्रिय हो, लंपट न हो, निरभिमान हो। राग-द्वेष छोड़ भीतर-बाहर से पवित्र रहे।"

भक्त संतों ने भी ईश्वर उपासना में सत्य को ही प्रारंभिक एवं आवश्यक साधन माना है।

कबीर कहते हैं—

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप।
हरि का मिलन सहज है, जो दिल साँचा होय।
साँई के दरबार की, राह न रोके कोय।।

संत दादू दयाल का वचन है—

सीधा मारग साँच का, साँचा होय सो जाय।
झूठे को कुछ ना मिले, दादू दिया बताय।।
दया धर्म का रूखड़ा, सत् से बढ़ता जाय।
संतों को फूलै फलै, वही अमर फल खाय।।

भक्त पलटूदास की उक्ति है—

पलटू पकड़े साँच को झूठे से रह दूर।
दिल में आवे साँच तो साहब हाल हजूर।।

रामायण में सत्य की महत्ता प्रकट करने वाली अनेक चौपाइयाँ हैं—

(१) सत्य मूल सब सुकृत सुहाये।
वेद पुराण विदित मनु गाये।।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(२) नहिं असत्य सम पातक पुंजा।
गिरि सम होंहि कि कोटिक गुंजा।।
(३) तनु तिय तनय धाम धन धरनी।
सत्यवंत कहँ तृन सम बरनी।।

यदि अपने पैर सत्य को अपनाने में लड़खड़ाते हों, साहस न होता हो, आंतरिक दुर्बलताएँ हताश करती हों तो भी निराश नहीं होना चाहिए। समस्त बलों के केंद्र उस परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह सत्य व्रत पालन करने से हमें साहस, बल, धैर्य, निष्ठा और इस मार्ग में जो कष्ट आयें, उन्हें सहन करने की क्षमता प्रदान करें। वेद में एक ऐसी ही प्रार्थना आती है—

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयम्।
तन्मे राध्यतां इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।।

—यजु० १५

हे व्रतपति परमेश्वर ! मैं व्रत का पालन करने की अभिलाषा करता हूँ। मुझे वह शक्ति दो, जिससे व्रत को निभा सकूँ। मैं असत्य से सत्य की ओर बढ़ना चाहता हूँ।

सच्चे मन से सदुद्देश्य के लिए की गई प्रार्थना को प्रभु सुनते हैं और तदनुकूल बल और प्रकाश भी प्रदान करते हैं। यदि हमारी निष्ठा सच्ची होगी, तो परमेश्वर वह बल हमें भी अवश्य प्रदान करेंगे।

❑❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दृष्टिकोण का परिवर्तन

नजरें तेरी बदली तो, नजारे बदल गये।
किश्ती ने बदला रुख तो, किनारे बदल गये।।

कविता की इन पंक्तियों में एक सनातन सत्य छिपा हुआ है। जब अपनी नजरें बदलती हैं तो नजारे अर्थात् दृश्य बदल जाते हैं। नाव जब अपना मुँह दूसरी तरफ मोड़ लेती है, तो इधर का किनारा उधर और उधर का इधर दीखने लगता है। एक जंक्शन पर पास-पास खड़ी हुई दो गाड़ियों में से आरंभ में एक छोटे-से मोड़ पर दिशाओं में थोड़ा-सा अंतर बनता है। धीरे-धीरे यह अंतर इतना बढ़ जाता है कि एक दिल्ली से चलकर कलकत्ता जा पहुँचती है और दूसरी बंबई। दिल्ली में उन दोनों के बीच जरा-सा अंतर था, पर अंत में दोनों के बीच सैकड़ों मील का अंतर पड़ जाता है। मानव जीवन में भी यही तथ्य काम करता है। व्यक्तियों के दृष्टिकोण में थोड़ा-थोड़ा अंतर होता है पर वह जरा-सा ही अंतर जीवन की परिस्थितियों में भारी भिन्नता प्रस्तुत कर देता है।

आरंभ छोटा—अंत बड़ा

बच्चा आरंभ में पैसा चुराने की आदत सीखता है, बड़ा होने पर वह कुछ बढ़ी-चढ़ी गड़बड़ी करने लगता है, समयानुसार बड़े हाथ मारने की क्षमता प्राप्त करता है और यदि परिस्थितियाँ अनुकूल रहें, तो एक दिन नामी चोर होकर जेलखाने में जा पहुँचता है। सभी उसे घृणा करते हैं, कोई अपना नहीं रह जाता। सर्वत्र निंदा, असहयोग, घृणा ही उसे प्राप्त होती है और कठिनाइयों से पार निकलने का कोई रास्ता नहीं दीखता। एक-दूसरा उसी का साथी बच्चा ईमानदारी पर दृढ़ आस्था जमाता है। माँ-बाप उस पर पूरा भरोसा करते हैं, अध्यापक उस पर प्रेम और गर्व करते हैं, बड़ा होने पर जहाँ वह कारोबार करता है, वहाँ उसका सम्मान देवता की तरह होता है और अपने कृपालुओं की सहायता से बहुत ऊँची स्थिति तक जा पहुँचता है। आरंभ में इन दोनों बालकों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वभाव में थोड़ा अंतर था। एक-दो पैसा चुराने न चुराने या उससे खरीदी जा सकने वाली वस्तु के मिलने न मिलने का कोई बड़ा महत्त्व न था, पर इस भिन्नता ने जब अपनी परिपक्वता प्राप्त की तो दोनों में इतना अंतर आ गया कि एक लोक सम्मान का और दूसरा लोक-भर्त्सना और यंत्रणा का भागीदार बना।

बुराई और भलाई की परस्पर विरोधी वृत्तियाँ आरंभ में बहुत छोटे रूप में होती हैं, पर उनका परिपोषण होते रहने से धीरे-धीरे बड़ा विशाल रूप बन जाता है। व्यभिचार का आरंभ हँसी-दिल्लगी या छोटी उच्छृंखलता से होता है, इस मार्ग पर बढ़ते हुए कदम किसी नारी को वेश्या बना सकते हैं। इसके विपरीत यदि सदाचार के प्रति थोड़ी दृढ़ता रहे तो वही वृत्ति उसे आदर्श पतिव्रता के रूप में अजर-अमर बना सकती है। कामचोरी और आलस्य की वृत्ति आरंभ में छोटी-छोटी उपेक्षा या टालमटूल के रूप में दिखाई पड़ती है पर अंत में वही व्यक्ति आलस्य, प्रमाद और लापरवाही में अपना सब कुछ गँवाकर दर-दर ठोकरें खाते-फिरने की स्थिति में पहुँच जाता है। एक दूसरा व्यक्ति जिसे परिश्रम में अपना गौरव और चमकता भविष्य दीखता है, निरंतर हँसी-खुशी के साथ परिश्रम करता रहता है और इसी पुरुषार्थ के बल पर वह उन्नति के उच्च शिखर पर जा पहुँचा होता है।

अविश्वास और संदेह

हर किसी पर अविश्वास करने वाले, सबको संदेह और तुच्छता की दृष्टि से देखने वाले व्यक्ति अपने मन में सोचते हैं कि हम बहुत बुद्धिमान् हैं, किसी की बातों में नहीं आते और चौकस रहकर अपनी जरा भी हानि नहीं होने देते पर वस्तुतः यह उनकी भारी भूल है। अविश्वासी को किसी का सच्चा प्रेम नहीं मिल सकता। भावना छिपती नहीं, जब दूसरे को यह मालूम पड़ता है कि यह हमारे प्रति अविश्वास करता है तो वह भी सच्चा प्रेम नहीं कर सकता और न सहानुभूति रखता है। ऐसी प्रकृति के व्यक्ति आमतौर से मित्रविहीन देखे गये हैं। माना कि विश्वास में खतरा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यदि खरे-खोटे की परख न करके हर किसी पर विश्वास करने लगा जाये तो उसमें ठगे जाने का खतरा भी है। पर साथ ही यह भी निश्चित है कि किसी ने कभी दूसरों को अपना बनाया है तो उसे उस पर पूरा विश्वास अवश्य करना पड़ा है। एक व्यक्ति दूसरे का गुलाम तभी बनता है, जब उसमें अपने लिए सच्ची सहानुभूति एवं आस्था अनुभव करता है। दांपत्य जीवन में, भाई-भाइयों में जहाँ भी सच्ची आत्मीयता पाई जायेगी वहाँ उसके मूल में विश्वास, वफादारी और गहरा आत्मभाव अवश्य होगा। अविश्वास के वातावरण में एक ऐसी घुटन रहती है कि मनुष्य वहाँ से अलग हट कर ही संतोष की साँस ले पाता है। परायों को अपना बनाने और अपनों को पराया बनाने में यह विश्वास एवं अविश्वास ही प्रमुख कारण रहा होता है।

छिद्रान्वेषण की दुष्प्रवृत्ति

छिद्रान्वेषण की वृत्ति अपने अंदर हो तो संसार के सभी मनुष्य दुष्ट-दुराचारी दिखाई देंगे। ढूँढ़ने पर दोष तो भगवान् में भी मिल सकते हैं, न हों तो थोपे जा सकते हैं। कोई हानि होने या आपत्ति आने पर लोग ऐसा करते भी हैं। कई तो अपने ऊपर आई हुई आपत्ति का कारण तक पूजा को मान लेते हैं और उसी पर सारा दोष थोपकर छोड़-छाड़कर अलग हो जाते हैं। मनुष्यों में दोष ढूँढ़ते रहने पर तो उनमें असंख्य दोष निकाले या सोचे जा सकते हैं। ऐसी छिद्रान्वेषी प्रकृति के लोगों को सारी दुनिया बुराइयों से भरी हुई दुष्ट, दुराचारी और अपने प्रति शत्रुता रखने वाली दिखाई देती है। उन्हें अपने चारों ओर नारकीय वातावरण दृष्टिगोचर होता है। निंदा और आलोचना के अतिरिक्त कभी किसी के प्रति अच्छे भाव वे प्रकट ही नहीं कर पाते, किसी की प्रशंसा उनके मुख से निकलती ही नहीं। ऐसे लोग अपनी इस क्षुद्रता के कारण ही सबके बुरे बने रहते हैं। पीठ पीछे की हुई निंदा नमक-मिर्च मिलकर उस आदमी के पास जा पहुँचती है, जिसके बारे में बुरा अभिमत प्रकट किया गया था। आमतौर पर सुनने वाले लोग अपनी विशेषता प्रकट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करने के लिए उस सुनी हुई बुराई को उस तक पहुँचा देते हैं, जिसके संबंध में कटु अभिमत प्रकट किया गया था। ऐसी दशा में वह भी प्रतिशोध की भावना से शत्रुता का ही रुख धारण करता है और धीरे-धीरे उसके विरोधी एवं शत्रुओं की संख्या बढ़ती जाती है। रूठे बैठे रहने वाले, मुँह फुलाकर बात करने वाले, भौंहें चढ़ाये रहने वाले और कर्कश स्वर में बोलने वाले व्यक्ति किसी के मन में अपने लिए आदर भाव प्राप्त नहीं कर सकते, उन्हें बदले में द्वेष, घृणा, विरोध ही उपलब्ध होते हैं। अपना मन हर घड़ी खिन्न, संतप्त और क्षुभित रहता है, उसकी जलन से होने वाले शारीरिक एवं मानसिक दुष्परिणामों की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती।

गुण ग्राहकता ही श्रेष्ठ है

जिनको दूसरों के गुण देखने की आदत है, वे बुरे लोगों में भी चतुरता, मुस्तैदी, पुरुषार्थ, साहस आदि गुणों को देखते हैं और उनकी उन विशेषताओं की प्रशंसा करते हैं। यह ठीक है कि बुराइयों का प्रतिरोध किया जाना चाहिए, उन्हें रोका जाना चाहिए। पर यह भी ठीक है कि किसी को निंदा करके या चिढ़ाने से नहीं सुधारा जा सकता। उन परिस्थितियों, समस्याओं और मनोवृत्तियों को सुधारने के लिए प्रयत्न करना होगा, जिनके कारण बुराई उत्पन्न होती है। आमतौर से मनुष्य उससे प्रभावित रहता है, जो उसकी किसी न किसी अंश में प्रशंसा करता है और उसमें जो थोड़ी बहुत अच्छाई है उसका आदर करता है। मनुष्य अपने विरोधी की नहीं प्रशंसक की बात मान सकता है और यदि सुधार संभव है तो उसी के द्वारा संभव है, जिनके प्रति उसके मन में सद्भावना जमी हुई है। यह सद्भावना जमाए रहने में वे ही सफल हो सकते हैं, जो सद्भावनायुक्त, गुणग्राही एवं प्रशंसक हैं। इस विशेषता के कारण मनुष्य अजात-शत्रु हो जाता है, जो अपने बुरे स्वभाव के कारण शत्रुता करना चाहते हैं, वे भी देर तक नहीं कर पाते। सज्जनता के सामने उन्हें एक दिन परास्त ही होना पड़ता है। ऐसे अगणित उदाहरण आए दिन आँखों के सामने उपस्थित होते रहते हैं, जिनमें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सज्जनता के हथियार से दुर्जनों को परास्त ही नहीं किया गया वरन् उनका हृदय-परिवर्तन करके सज्जनता का अनुयायी भी बना लिया गया। शत्रुओं की संख्या घटाने और मित्रों की संख्या बढ़ाने का सबसे उत्तम तरीका यह है कि हम दूसरों की अच्छाइयाँ ढूँढ़ना और उनकी प्रशंसा करना सीखें। इससे दूसरों पर तो अच्छा प्रभाव पड़ता ही है, अपना मन भी प्रसन्नता अनुभव करता है।

दो परस्पर विरोधी मार्ग

गुबरीले कीड़े का और भौंरे का उदाहरण स्पष्ट है। गंदा कीड़ा केवल गंदगी, गोबर और विष्ठा की तलाश में बगीचा ढूँढ़ डालता है और अपनी अभीष्ट वस्तु ढूँढ़कर ही चैन लेता है। इसके विपरीत भौंरा फूलों पर ही दृष्टि रखता है। उन्हीं पर बैठता है और सुगंधि का आनंद लाभ करता है। उसे पता भी नहीं चलता कि बाग में कहीं गोबर पड़ा हुआ है भी या नहीं। बगीचे में गोबर भी पड़ा रहता है और फूल भी होते हैं पर गंदा कीड़ा अपनी मनोवृत्ति के अनुरूप चीज ढूँढ़कर अपने आपको उस गंदगी से गंदा करता है और दूसरों की दृष्टि में घृणित भी बनता है। भौंरे की मनोवृत्ति उस गंदे कीड़े से भिन्न होती है इसलिए उसे गुलाब के सुगंधित पुष्पों का रस भी मिलता है और कवियों द्वारा प्रशंसा का अधिकारी भी बनता है। हममें से कुछ लोग गंदे गुबरीले कीड़े का उदाहरण बनते हैं और कुछ भौंरों के पद-चिह्नों पर चलते हैं। इन दोनों मार्गों में से हम भी अपने लिए कोई एक मार्ग चुन सकते हैं और उसी के अनुरूप घृणित एवं उत्कृष्ट परिस्थितियाँ प्राप्त कर सकते हैं। छिद्रान्वेषण गंदे गुबरीले कीड़े की मनोवृत्ति है और गुण ग्राहकता सुरुचिपूर्ण भौंरे की, जो अपने को पसंद लगे उसे आसानी से स्वभाव का अंग बना सकते हैं।

आवेश और अधीरता

जरा-सी प्रतिकूलता को सहन न कर सकने वाले आवेशग्रस्त, उत्तेजित, अधीर और उतावले मनुष्य सदा गलत सोचते और गलत काम करते हैं। उत्तेजना एक प्रकार का दिमागी बुखार है। जिस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रकार बुखार आने पर देह का सारा कार्यक्रम लड़खड़ा जाता है, उसी प्रकार आवेश आने पर मस्तिष्क की विचारणा एवं निर्णय प्रक्रिया अस्त-व्यस्त हो जाती है; उस स्थिति में कोई व्यक्ति सही निर्णय नहीं कर सकता। आवेशग्रस्त मनुष्य प्रायः न करने योग्य ऐसे काम कर डालते हैं, जिनके लिए पीछे सदा पश्चात्ताप ही करते रहना पड़ता है। आत्महत्याएँ इन्हीं परिस्थितियों में होती हैं। कहनी-अनकहनी कह बैठते हैं। मारपीट, गाली-गलौज, लड़ाई-झगड़े, कत्ल आदि के दुःखद कार्य भी उत्तेजना के वातावरण में ही बन पड़ते हैं। अधीरता भी एक प्रकार का आवेश ही है। बहुत जल्दी मनमानी सफलता अत्यंत सरलतापूर्वक मिल जाने के सपने बाल बुद्धि के लोग देखा करते हैं। वे यह नहीं सोचते कि महत्त्वपूर्ण सफलताएँ तब मिला करती हैं, जबकि व्यक्ति श्रमशीलता, पुरुषार्थ, साहस, धैर्य एवं सद्गुणों की अग्नि परीक्षा से गुजरकर, अपने आपको उसके उपयुक्त सिद्ध कर देता है। जल्दीबाजी में बनता कुछ नहीं, बिगड़ता बहुत कुछ है, इसलिए धैर्य को, संतुलन और शांति को एक श्रेष्ठ मानवीय गुण माना गया है। कठिनाइयों से हर किसी को पाला पड़ता है, विघ्नों से रहित कोई काम नहीं। तुर्त-फुर्त सफलता किसे मिली है ? किसके सब साथी सज्जन और सद्गुणी होते हैं ?

हर समझदार आदमी को सहनशीलता, धैर्य और समझौते का मार्ग अपनाना पड़ता है। जो प्राप्त है उसमें प्रसन्नता अनुभव करते हुए अधिक के लिए प्रयत्नशील रहना, बुद्धिमानी की बात है पर यह परले सिरे की मूर्खता है कि अपनी कल्पना के अनुरूप सब कुछ न मिल जाने पर मनुष्य खिन्न-दुःखी और असंतुष्ट ही बना रहे। सबकी सब इच्छाएँ कभी पूरी नहीं हो सकतीं। अधूरे में भी जो संतोष कर सकता है, उसी को इस संसार में थोड़ी-सी प्रसन्नता उपलब्ध हो सकती है। अन्यथा असंतोष और तृष्णा की आग में जल मरने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है। अधीर, असंतोषी और महत्त्वाकांक्षी मनुष्य जितने दुःखी देखे जाते हैं, उतनी जलन, दर्द और पीड़ा से पीड़ित घायल और बीमारों को भी नहीं होती। संतोष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का मरहम लगाकर कोई भी व्यक्ति इस जलन से छुटकारा प्राप्त कर सकता है।

कुढ़न की असाध्य बीमारी

कुढ़न एक ऐसी बीमारी है जिसका कोई इलाज नहीं। अपनी स्थिति को दूसरों की तुलना में हीन मानकर, कितने ही व्यक्ति असंतोष में कुढ़ते रहते हैं ? पुरुषार्थ के अभाव में प्रयत्नपूर्वक वे उस ऊँची स्थिति तक पहुँचने का साहस तो करते नहीं, उलटे जो आगे बढ़े हुए हैं, उनसे ईर्ष्या करने लगते हैं। उन्हें लगता है कि यदि आगे बढ़े हुए की टाँग पकड़कर पीछे घसीट लिया जाये या आगे बढ़ने से रोक दिया जाये तो विषमता की स्थिति दूर हो सकती है। ईर्ष्या में यही भाव छिपा रहता है। दूसरों की प्रशंसा या बढ़ती सहन न कर सकने में ईर्ष्यालु महत्त्वाकांक्षा छिपी रहती है। वह अपने से बड़े समझे जाने वालों की तुलना में अपने को हीन समझा जाना पसंद नहीं करता। इस कमी को प्रयत्न और पुरुषार्थ द्वारा स्वयं उन्नति करके पूरा किया जा सकता है, पर इस कठिन मार्ग पर चलने की अपेक्षा लोग यही ठीक समझते हैं कि आगे बढ़े हुओं को पीछे घसीटा जाये, उनकी निंदा की जाए या हानि पहुँचाई जाये। ईर्ष्यालु लोग ऐसा ही कुछ किया करते हैं। कुछ आगे बढ़े हुए लोग अपने से छोटों को बढ़ते नहीं देखना चाहते। वे सोचते हैं यह यदि बढ़कर मेरी बराबर आ जायेंगे तो फिर मेरी क्या विशेषता रहेगी ? इसलिए बढ़ते हुओं को ऊपर उठने से पहले ही दबा देना चाहिए।

क्षुद्रता की ठंडी आग से बचें

आज इसी प्रकार की क्षुद्र मनोवृत्तियों का साम्राज्य है। कुढ़न और ईर्ष्या की आग में झुलसते रहने वाले व्यक्ति अपना मानसिक अहित तो करते ही हैं। अपनी जलन बुझाने के लिए जो षड्यंत्र रचते हैं, उसमें उनकी इतनी शक्ति खर्च होती रहती है, जिसकी बचत करके उपयोगी मार्ग में लगाया गया होता तो अपनी बहुत उन्नति हुई होती। लोगों का जितना समय और मनोयोग इन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दुष्प्रवृत्तियों में लगता है, यदि उतना आत्म-कल्याण अथवा दूसरों की सेवा-सहायता में लगता तो कितना बड़ा हित साधन हो सकता था। ईर्ष्या और कुढ़न की मूर्खता पर जितना ही गंभीरता से विचार किया जाता है, उतनी ही उसकी व्यर्थता और हानि स्पष्ट रूप से परिलक्षित होने लगती है।

इन द्वेष-वृत्तियों का परित्याग करके यदि मनुष्य अपने अंदर सत्प्रवृत्तियों को बढ़ाने में लग जाए तो उसकी दुनिया आज की अपेक्षा कल दूसरी ही हो सकती है। दृष्टिकोण के बदलने से दृश्य बदलते हैं। नाव के मुड़ने से किनारे पलट जाते हैं। हमें इस प्रकार का सुधार अपने आप में निरंतर करते चलना चाहिए। सुधार के लिए हर दिन शुभ है, उसके लिए कोई आयु अधिक नहीं। बूढ़े और मौत के मुँह में खड़े हुए व्यक्ति भी यदि अपने में सुधार आरंभ करें तो उन्हें भी आशाजनक सफलता प्राप्त हो सकती है। फिर जिनके सामने अभी लंबा जीवन पड़ा है, वे तो इस आत्म-सुधार की प्रक्रिया को धीरे-धीरे चलाते रहें तो भी अपने जीवनक्रम का कायाकल्प ही कर सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सद्‌गुण भी हमारे ध्यान में रहें

हमारा ध्यान जिस वस्तु पर अधिक जाता है, वह प्रमुखता प्राप्त कर लेती है और जिस ओर उपेक्षा बरती जाती है वह बात गौण एवं महत्त्वहीन बन जाती है। जिधर अपनी अभिरुचि मुड़ती है, जो प्रिय लगता है, जिसे प्राप्त करने की इच्छा रहती है, वह सब कितना ही महत्त्वहीन क्यों न हो पर प्रमुखता प्राप्त कर लेता है और मस्तिष्क का अधिकांश भाग उसी विचारधारा में निमग्न रहता है। जिस दिशा में विचार चलेंगे वैसे ही काम होंगे और धीरे-धीरे सारा जीवन उसी ढाँचे में ढल जायेगा। जिन्होंने अपने जीवन को स्थायी दिशा में विकसित किया है, उधर उनका पूरा-पूरा ध्यान रहा है। उपेक्षित मार्ग में भी कभी कोई प्रगति कर सका हो, ऐसा देखने-सुनने में नहीं आता।

सबसे बड़ी संपत्ति

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य के पास सबसे बड़ी पूँजी सद्‌गुणों की है। जिसके पास जितने सद्‌गुण हैं, वह उतना ही बड़ा अमीर है। रुपया के बदले बाजार में हर चीज खरीदी जा सकती है। इसी प्रकार सद्‌गुणों की पूँजी से किसी भी दिशा में अभीष्ट प्रगति की जा सकती है। गुणहीन व्यक्ति अपनी व्यर्थता, निरर्थकता के कारण सबकी दृष्टि में हीन और हेय बने रहते हैं; कोई उनकी पूछ नहीं करता, उनकी ओर ध्यान नहीं देता, बेचारे अपनी जिंदगी जीते और अपनी मौत मरते रहते हैं। ऐसे लोगों के लिए किसी प्रकार जिंदगी के दिन काट लेना ही पर्याप्त होता है। ये लोगों की दृष्टि में उपहास या दया के पात्र बने रहते हैं। किसी महत्त्व के कार्य में उनकी कोई पूछ नहीं होती, सदा पीछे ही धकेले जाते रहते हैं।

दुर्गुणी व्यक्ति बहुधा स्वार्थी होते हैं। वे दूसरों से चाहते तो बहुत हैं, पर बदले में देने के लिए उनके पास कुछ नहीं होता। इसलिए वे डरा-धमकाकर अपना प्रयोजन सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। गुंडे, उद्‌दंड, उच्छृंखल, चोर, डाकू, लुटेरे, झगड़ालू प्रकृति के लोग अपनी हानि पहुँचाने की क्षमता का प्रदर्शन करके, दुर्बल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मन वालों को आतंकित कर लेते हैं और फिर उनसे अपना स्वार्थ साधने की चेष्टा करते हैं। पर काठ की हाँड़ी देर तक नहीं चलती। सभी लोग उनके विरोधी होते हैं और घृणा के भाव रखते हैं। जब भी अवसर मिलता है प्रतिशोध ले लिया जाता है। यदि ये दुर्गुणी लोग किसी मुसीबत में फँस जायें, तब तो हर कोई घी के दीपक जलाता है और यह प्रयत्न करता है कि इसे अधिक से अधिक मुसीबत उठानी पड़े। दुर्गुणी का कभी कोई सच्चा मित्र नहीं हो सकता, क्योंकि किसी के मन में उनके प्रति श्रद्धा या सद्भावना नहीं होती, इसके बिना मैत्री की जड़ कभी गहरी नहीं हो सकती।

प्रगति अपने बलबूते पर होती है। सच्ची मैत्री और सहानुभूति तो सद्गुणी में मिलती है। दुर्गुणी तो वह सब कुछ खो बैठता है। डरा-धमकाकर एक बार किसी से कुछ काम करा भी लिया जाये तो भी वह निरंतर कैसे संभव हो सकता है ? दूसरों की सहानुभूति और सहायता से वंचित रहने के कारण, ये लोग किसी महत्त्वपूर्ण सफलता के अधिकारी नहीं बन पाते। सब ओर से घृणा की वर्षा होने के कारण उनका आत्मा भीतर ही भीतर दबा हुआ-सा, मरा हुआ-सा, चोर की तरह भय और लज्जा से घिरा हुआ-सा बना रहता है। जिसका अंतःकरण लज्जा और संकोच के भार से दब गया है, उसके लिए प्रगति के सभी द्वार अवरुद्ध हो जाते हैं।

दुर्गुणों का दुष्परिणाम

अपनी ही बुराइयों के कारण दुर्गुणी व्यक्ति अपना सर्वनाश करता रहता है। अपव्ययी अपनी ही बुरी आदतों में अपनी संपत्ति गँवा बैठता है और फिर दर-दर का भिखारी बना ठोकरें खाता फिरता है। व्यसनी सारा समय निरर्थक के शौक पूरे करने में बर्बाद करता रहता है, जिस बहुमूल्य समय में वह कुछ कहने लायक काम कर सकता था, वह तो व्यसन पूरे करने में ही चला जाता है। समय के अभाव में कोई महत्त्वपूर्ण कार्य उससे बन कब पड़ता है ?

चटोरे जिह्वा-लोलुप लोग स्वाद के पीछे पागल बने दिन भर चटर-पटर खाते रहते हैं और फिर बेमौत मरते हैं। बीमारियाँ घेरती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चली जाती हैं, दवाओं से उन्हें मिटाने की कोशिश में पैसा तो गँवाते हैं, पर अपनी आदतों पर काबू नहीं करते। ऐसी दशा में इलाज में पैसे लगाकर भी उन्हें अस्वस्थता से छुटकारा नहीं मिलता। काम-वासना में अपना शरीर, स्वास्थ्य और सौंदर्य खो बैठने वालों की एक बड़ी संख्या चाहे जहाँ देखी जा सकती है। वे भोगों को भोग-कर मौज-मजा लूटना चाहते हैं, पर गरीब स्वयं ही लुट जाते हैं। पाते तो कुछ नहीं, खो सब कुछ बैठते हैं। क्रोधी भी क्या कुछ लाभ में रहता है ? उत्तेजना और आवेश में अपना खून जलाता है, न कहने योग्य कह बैठने से अपनों को पराया बना लेता है और घृणा-द्वेष की कँटीली दीवारें अपने लिए चारों ओर खड़ी करता है।

ईर्ष्यालु, निंदक, चुगलखोर सबकी आँखों में अपना सम्मान खो बैठते हैं। उन्हें अविश्वासी, अप्रमाणिक और ओछी तबियत का समझा जाता है। कोई उनसे घुलता-मिलता नहीं, सभी सशंक बने रहते हैं। ऐसे लोग भीतर ही भीतर अपनी स्थिति पर असंतुष्ट, उद्विग्न और खिन्न भी रहते हैं। उनका शरीर और मन अधःपतन की दिशा में ही गिरता चला जाता है। दुर्गुणों की वृद्धि होना मानव जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है। वस्तुतः यही सबसे बुरी किस्म की कुरूपता है, जिसे देखकर हर ओर घृणा और तिरस्कार का वातावरण उठ खड़ा होता है।

सच्ची दौलत और अमीरी

धन को धन नहीं मानना चाहिए। वह तो आता है और चला जाता है। परिस्थितियों के झटके बड़े-बड़े धनीमानियों को नीचा करवा देते हैं। गरीब के अमीर बनने में देर लग सकती है पर लगातार के दो-चार थपेड़े लगने मात्र से अमीर की स्थिति गरीब से भी दयनीय हो जाती है। व्यापार में हानि, दुर्घटना, कुसमय, मुकदमा, बीमारी, लूट आदि कितने ही ऐसे कारण हैं, जो अच्छी आर्थिक स्थिति को उलट-पलटकर रख देते हैं, ऐसी दशा में गुणहीन व्यक्ति निर्धन हो जाने पर पुनः उठ खड़ा होने में असमर्थ ही रहता है। पर जिसके भीतर सद्गुणों की पूँजी भरी पड़ी है, वह पुनः अपना खोया हुआ वैभव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्राप्त कर लेता है। आत्मबल और आत्म-विश्वास, उसे दैवी सहायता की तरह सदा प्रगति का मार्ग दिखाते हैं। अपने मधुर स्वभाव के कारण वह जहाँ भी जाता है, वह अपना स्थान बना लेता है। अपनी विशेषताओं से वह सभी को प्रभावित करता है और सभी की सहानुभूति पाता है। दूसरों को प्रभावित करने की और उसकी सफलता का प्रधान कारण तो अपने सद्गुण ही होते हैं। जिसके पास यह विशेषता होगी, उसके लिए पराए अपने बन जाएँगे और शत्रुओं के मित्र बनने में देर न लगेगी।

जीवन के आधार स्तंभ सद्गुण हैं। अपने गुण, कर्म, स्वभाव को श्रेष्ठ बना लेना, अपनी आदतों को श्रेष्ठ सज्जनों की तरह ढाल लेना—वस्तुतः ऐसी बड़ी सफलता है, जिसकी तुलना किसी भी अन्य सांसारिक लाभ से नहीं की जा सकती। इसलिए सबसे अधिक ध्यान हमें इस बात पर देना चाहिए कि हम गुणहीन ही न बने रहें, सद्गुणों की शक्ति और विशेषताओं से अपने को सुसज्जित करने का निरंतर प्रयत्न करें। दुर्गुणों को ढूँढ़-ढूँढ़कर खोजें और उन्हें खटमलों की तरह अपने संपर्क से दूर हटाने की सदैव चेष्टा करते रहें।

पढ़ें, कहें, सुनें और सोचें

सद्गुणों के विकास का उचित मार्ग यह है कि उन्हीं के संबंध में विशेष रूप से विचार किया करें, वैसा ही पढ़ें, वैसा ही कहें, वैसा ही सोचें जो सद्गुणों के बढ़ाने में सत्प्रवृत्तियों को ऊँचा उठाने में सहायक हों। सद्गुणों को अपनाने से अपने उत्थान और आनंद का मार्ग कितना प्रशस्त हो सकता है, इसका चिंतन और मनन निरंतर करना चाहिए। किसी वस्तु के लाभ सोचने से उसे प्राप्त करने की इच्छा होती है और यदि उसे जो हानि हो सकती है उसका विचार आरंभ कर दिया जाये तो वही बहुत बुरी और त्याज्य प्रतीत होने लगेगी। किसी व्यक्ति की अच्छाइयों पर यदि विचार करें तो वही देवता दिखाई देगा, पर यदि उसकी बुराइयाँ ढूँढ़ने लगें तो वह भी इतनी अधिक मिल जायेंगी कि साक्षात् शैतान की तरह वह दीखने लगेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विवेकशीलता के आधार पर जिसे भी हम उपयोगी पायें, जिसे प्राप्त करना आवश्यक समझें, उसकी उपयोगिता का अधिकाधिक चिंतन करें। माहात्म्यों का वर्णन इसीलिए किया जाता है कि किसी कार्य के अच्छे पहलू अपनी समझ में आएँ और अभिरुचि उत्पन्न हो। कथा वार्ता का सारा आधार यही तो होता है कि आध्यात्मिक विषयों की उपयोगिता और उनसे प्राप्त होने वाले लाभों को समझने से प्रवृत्तियाँ उस ओर झुकें। जहाँ भी मनुष्य लाभ देखता है, जिधर भी उसे आकर्षण दीखता है, उधर ही मन झुकने लगता है। सद्गुणों के माहात्म्य को हम जितनी गंभीरता से सोचेंगे, उनके सत्परिणामों पर जितना अधिक विचार करेंगे, उतना ही उन्हें प्राप्त करने की आकांक्षा प्रबल होगी। इस प्रबलता को प्रकारांतर से आत्मकल्याण की, जीवन विकास की प्रेरणा भी कह सकते हैं। इसी पर हमारे भविष्य की उज्ज्वलता बहुत कुछ निर्भर रहती है।

बीजांकुरों को खोजें और सींचें

अपने अंदर सद्गुणों के जितने बीजांकुर दिखाई पड़ें, जो अच्छाइयाँ और सत्प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ें, उन्हें खोजते रहना चाहिए। जो मिले उस पर प्रसन्न होना चाहिए और उन्हें सींचने-बढ़ाने में लग जाना चाहिए। घास-पात के बीच यदि कोई अच्छा पेड़-पौधा उगा होता है, तो उसे देखकर चतुर किसान प्रसन्न होता है और उसकी सुरक्षा तथा अभिवृद्धि की व्यवस्था जुटाता है, ताकि इस छोटे पौधे के विशाल वृक्ष बन जाने से उपलब्ध होने वाले लाभों से वह लाभान्वित हो सके। हमें भी अपने सद्गुणों को इसी प्रकार खोजना चाहिए। जो अंकुर उगा हुआ है यदि उसकी आवश्यक देख-भाल की जाती रहे तो वह जरूर बढ़ेगा और एक दिन पुष्प-पल्लवों से हरा-भरा होकर चित्त में आह्लाद उत्पन्न करेगा।

सदा अपने दोष-दुर्गुण ही ढूँढ़ते रहना बहुत बुरी बात है। ठीक है कि अपनी त्रुटियों से बेखबर न रहें, उन्हें खोजें और निकाल बाहर करें। पर निरंतर केवल उसी दिशा में मस्तिष्क को लगाए रहा जायेगा तो अगणित बुराइयाँ ही बुराइयाँ अपने अंदर सूझ पड़ती रहेंगी, तब चित्त में निराशा उपजेगी और अपने को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दुष्ट-दुराचारी मान बैठने की भावना जड़ पकड़ेगी। जिस प्रकार अपने आपको, शिवोऽहम्, सच्चिदानंदोऽहम्, सोऽहम् आदि की उच्च ब्रह्मभावना करने से आत्मा स्वसंकेतों के आधार पर ब्राह्मी स्थिति में अवस्थित होकर अद्वैत लक्ष्य की ओर अग्रसर होती है, उसी प्रकार अपने आपको निरंतर पापी, दुष्ट, दुराचारी मानते रहने से उसी के प्रमाण खोज-खोज कर अपनी निकृष्टता की ओर दृष्टि करते रहने से आत्मिक स्तर गिरता है। जैसा हम सोचते हैं वैसे ही बनते और ढलते हैं, यदि अपनी बुराइयों को ही सोचते रहा जायेगा तो धीरे-धीरे अपना रूप वैसा ही बनता जाएगा।

सावधानी की आवश्यकता

आत्मशोधन का कार्य बड़ी सावधानी और संतुलित मनःस्थिति से ही किया जाना चाहिए। एकांगी आलोचना उचित नहीं। न केवल दोष ही देखें और न केवल गुणों का ही विचार करें। वरन् दृष्टि यह रखें कि जो बुराइयाँ दीखें उनके लिए अपनी ताड़ना करें और जो अच्छाइयाँ सूझ पड़ें, उनसे प्रसन्नता अनुभव करें—प्रोत्साहन प्राप्त करें और संतोष व्यक्त करें। अच्छाइयों के बढ़ाते चलने से बुराई स्वतः घटती हैं। केवल बुराई को छोड़ने भर की बात सोची जाये और अच्छाई बढ़ाने की ओर ध्यान न हो तो प्रयोजन सिद्ध न होगा। पानी से भरे बर्तन में यदि कंकड़-पत्थर डाल दिये जायें तो उतना ही पानी बर्तन से बाहर निकल जाएगा। मन रूपी बर्तन में सद्गुणों की जितनी प्रतिष्ठापना होती चलेगी उतने ही दोष-दुर्गुण अपने आप समाप्त होते चलेंगे।

व्यभिचार छोड़ेंगे—यह सोचने की अपेक्षा यह कहना अच्छा है कि ब्रह्मचर्य पालन करेंगे। चोरी छोड़ेंगे—यह कहने की अपेक्षा यों सोचना चाहिए कि ईमानदारी का पवित्र जीवन बितायेंगे। आलस्य में न पड़े रहेंगे—यों न कहकर यों कहना चाहिए कि स्फूर्ति और श्रमशीलता का वरण करेंगे। बात एक ही है पर निषेधात्मक पक्ष को मनःक्षेत्र में स्थान देने की अपेक्षा यह उत्तम है कि रचनात्मक पक्ष की विचारधारा से मस्तिष्क को प्रभावित किया जाये। दुष्टता का उन्मूलन करेंगे, यों सोचने में उन्मूलन के लिए जिस क्रोध, विनाश,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विध्वंस की आवश्यकता है, उसकी तैयारी में मन लगेगा। पर यदि सज्जनता का प्रसार करेंगे, यह अपना लक्ष्य हो तो सज्जनता के उपयुक्त, शिष्टाचार, प्रेम, उदारता, मधुरता, त्याग, सहिष्णुता आदि के भाव मन में भ्रमण करेंगे। एक ही बात के भले और बुरे दो पहलू होते हैं। उन दोनों में से हमें बुरा नहीं, भला पहलू ही अपने लिए चुनने का प्रयत्न करना चाहिए।

श्रेष्ठताओं को बढ़ाया जाये

हम सज्जन बनेंगे, श्रेष्ठतायें बढ़ायेंगे, सद्गुणों का विकास करेंगे; यही अपनी आकांक्षाएँ रहनी चाहिए। सद्गुण यदि थोड़ी मात्रा में भी अपने अंदर मौजूद हैं तो भविष्य में उनका विकास होने पर अपना भाग्य और भविष्य बहुत ही उज्ज्वल होने की संभावना सहज ही व्यक्त की जा सकती है। माना कि आज अपने अंदर सद्गुण कम हैं, छोटे हैं, दुर्बल हैं पर यही क्या कम है कि वे मौजूद हैं और यह क्या कम है कि हम उन्हें बढ़ाने की बात सोचते हैं। पौधा नन्हा सही पर चतुर माली यदि तत्परतापूर्वक उनकी सेवा करेगा तो वह आज न सही कल सही विशाल वृक्ष बनने ही वाला है। संसार में कोई विभूति ऐसी नहीं, जो तीव्र आकांक्षा और प्रबल पुरुषार्थ के आधार पर प्राप्त न की जा सकती हो। सद्गुणों की बहुमूल्य संपत्ति मानव जीवन की सबसे बड़ी विभूति मानी जाती है। उसे प्राप्त करना कठिन तो है पर कठिनाई उन्हीं के लिए है, जो उधर ध्यान नहीं देते। जिसने अपने मन और मस्तिष्क को श्रेष्ठता का महत्त्व समझने और उसे प्राप्त करने के लिए अभिमुख कर रखा है, उन्हें उनका लक्ष्य प्राप्त होगा ही। वे श्रेष्ठ सज्जन अपने को परम सौभाग्यशाली अनुभव करेंगे ही।

❐❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुसंग से आत्मरक्षा की आवश्यकता

पौधे खाद और पानी देने से बढ़ते हैं। प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिलने से वे पनपती हैं। भली और बुरी दोनों ही प्रकार की प्रवृत्तियाँ अपने भीतर रहती हैं, उनमें से जिन्हें विकसित होने का अवसर मिलता है, वह बढ़ती और फलती-फूलती हैं। जिन्हें ऐसा अवसर नहीं मिलता वह मुरझाई रहती हैं और धीरे-धीरे मृतप्रायः अवस्था में जा पहुँचती हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि जिन प्रवृत्तियों को हम उपयोगी एवं आवश्यक समझते हैं, उनके प्रोत्साहन की व्यवस्था करें।

संपर्क का प्रभाव

दृढ़ निश्चयी और आत्मविश्वासी विरले ही हैं, अधिकांश मनुष्य तो निकटवर्ती व्यक्तियों और परिस्थितियों के आकर्षण एवं प्रोत्साहन से प्रभावित होकर अपनी गतिविधियाँ प्रस्तुत करते हैं। देखा गया है कि संगति का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। जैसे लोगों के साथ संपर्क एवं संबंध रहता है, उनके गुण-दोषों के प्रति भी सहानुभूति उत्पन्न होती है और उनका अनुकरण करने की इच्छा उठने लगती है। बुरे लोगों के संपर्क में आकर अनेकों भोले-भाले व्यक्ति अनेकों बुराइयाँ सीख लेते हैं और कुमार्ग पर चलने लगते हैं। नशेबाजी का आरंभ प्रायः ऐसे ही होता है। नशीली चीजें न तो स्वादिष्ट होती हैं और न उपयोगी। उनका जायका भी बुरा होता है और पैसा भी खर्च करना पड़ता है। किसी उपयोगिता के कारण लोग नशा पीना आरंभ नहीं करते वरन् सौ में से निन्यानवे बार यार-दोस्तों के आग्रह से या उनकी देखा-देखी यह बुरी लत आरंभ होती है और धीरे-धीरे वह आदत में इतनी गहराई तक उतर जाती है कि फिर छुड़ाये नहीं छूटती।

दुष्प्रवृत्तियों की छाया

जुआ खेलना, गाली देना, आलस्य में पड़े रहना, ताश, शतरंज, चौपड़, कैरम आदि में वक्त बर्बाद करना, बढ़-चढ़कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शेखी मारना, फैशन बनाना आदि कितनी ही बातें ऐसी हैं, जो यार-दोस्तों के द्वारा ही उपहार में मिलती हैं। जिनके साथ दोस्ती होती है उनकी आदतों के साथ भी दोस्ती बढ़ने लगती है। उनकी इच्छा, अनुरोध एवं प्रवृत्ति के साथ-साथ चलने में दोस्ती पक्की होती दीखती है इसलिए प्रभावशाली व्यक्ति के संपर्क में आने वाले उसके गुण-दोषों को भी सीख लेते हैं।

व्यभिचार आमतौर से ऐसे ही पनपता है। आरंभिक जीवन में हर कोई सदाचारी होता है। पाप से, विशेषतया व्यभिचार संबंधी पाप से हर किसी को बहुत डर लगता है, क्योंकि हमारी धार्मिक और सामाजिक मान्यताएँ इसका बहुत विरोध करती हैं। आंतरिक और सामाजिक दोनों ही प्रकार के भय, संकोच एवं लज्जा के कारण मनोविकार रहते हुए भी इस कुमार्ग पर सहसा कदम उठा सकना कठिन होता है। पर कुसंग में वह झिझक छूट जाती है। प्रारंभ वार्ता में अश्लील बातों में रस लेने से होता है और अंत पतन के गहन गर्त में गिरने के साथ होते देखा गया है। कुसंगति में ही यह पतन पनपता है। भोले बच्चे और बच्चियाँ दुष्ट-दुराचारी लोगों के संपर्क में आकर अपना भविष्य अंधकारमय बनाते हैं और छूत की बीमारी की तरह यह एक से दूसरे को लगती चली जाती है।

सत्संगति का सत्परिणाम

अच्छी संगति का भी प्रभाव होता ही है। प्रभावशाली व्यक्तित्व अपने समीपवर्ती लोगों पर असर जरूर छोड़ते हैं। ऋषियों के आश्रमों में सिंह और गाय एक घाट पर पानी पिया करते थे, इसका कारण यही था कि प्रेम, अहिंसा और सद्भावना से भरा हुआ जो प्रबल भावना प्रवाह यहाँ बहता था, उससे हिंस्र-पशु भी प्रभावित हुए बिना न रहते थे। चंदन के समीपवर्ती छोटे-बड़े अन्य पेड़-पौधे भी सुगंधित हो जाते हैं। फूल टूट-टूटकर जिस भूमि पर गिरते रहते हैं, उस मिट्टी में भी खुशबू आने लगती है, फिर सद्गुणी और सज्जनों के संपर्क में आने वालों पर वैसा ही प्रभाव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पड़ेगा। सुसंगति को पारस की उपमा दी गई है। लोहा पारसमणि को छूकर सोना हो जाता है, सज्जनों के संपर्क में साधारण व्यक्ति भी महत्ता को प्राप्त करते देखे गये हैं। सत्पुरुषों के संपर्क से मनुष्य की सत्प्रवृत्तियाँ बढ़ती हैं। सूर्यमुखी का फूल उधर ही मुड़ता रहता है, जिधर सूर्य घूमता है। प्रभात होते ही कमल की कली का मुख खुल जाता है। श्रेष्ठ व्यक्तियों का प्रभाव पड़ते ही मनुष्य की अंतरात्मा में छिपी हुई सत्प्रवृत्तियाँ भी उसी प्रकार खिलने और विकसित होने लगती हैं।

बुरे वातावरण से दूर रहें

व्यक्तियों के द्वारा व्यक्तियों पर पड़ने वाले प्रभाव की महत्ता को समझते हुए हमें निरंतर ध्यान रखना चाहिए कि अपना संपर्क बुरी आदत वाले लोगों के साथ न रखें। वे प्रत्यक्ष कुछ भी न कहें पर परोक्ष रूप से उनका प्रभाव अपने ऊपर पड़ता है। कम से कम जो बुराई उनमें है, उनसे घृणा तो तुरंत ही घट जाती है। शराब से अभी अपने को घोर घृणा है पर यदि अपने दो मित्र शराब के आदी होंगे और उनकी वह आदत अपने सामने ही चरितार्थ होती रहेगी तो अपने मन में जो घोर घृणा थी, वह थोड़े ही दिनों में समाप्त हो जायेगी। इतना ही नहीं शराब को उठाने, धरने, खरीदने, लाने की भी झिझक जाती रहेगी और एक दिन उसे पीने लगने का भी अवसर आ सकता है, भले ही वे दोस्त उसके लिए कुछ भी आग्रह न करें पर दोस्ती और संपर्क के फलस्वरूप इतना प्रभाव तो अपने आप ही पड़ता है।

अच्छे व्यक्ति चाहे कुछ भी न कहें, कोई शिक्षा या आदेश भी न दें, पर उनके जीवन की स्वच्छता, शांति, पवित्रता एवं महत्ता स्वयमेव समीपवर्ती लोगों को यह सिखाती है कि इस मार्ग पर चलते हुए आदर्श एवं श्रेष्ठ जीवन व्यतीत किया जा सकता है। अच्छे लोगों के निकट का जो उत्कृष्ट वातावरण रहता है, उसमें अच्छाइयाँ पनपती हैं। श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की और बुराइयाँ छोड़ देने की इच्छाएँ स्वयमेव उठने लगती हैं। कितने ही दोष-दुर्गुण तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उस उत्तम वातावरण के कारण अपने आप ही छूट जाते हैं, उसके कारण अपने को स्वयं ही लज्जा और ग्लानि होने लगती है, जिससे उन्हें छोड़ देने के लिए ही अग्रसर होना पड़ता है।

तीर्थ यात्रा का उद्देश्य

प्राचीनकाल में तीर्थ यात्रा का एक प्रमुख उद्देश्य यह था कि उत्कृष्ट चरित्र के, आदर्श जीवन व्यतीत करने वाले महापुरुष, ऋषि, तपस्वी जहाँ रहते हैं, वहाँ चलकर उनके सान्निध्य में श्रेष्ठ वातावरण का लाभ उठाया जाये। तीर्थ वह स्थान थे जहाँ महामानव निवास करते थे और आगंतुकों को उत्कृष्ट जीवन की प्रेरणा प्रदान किया करते थे। इसी लाभ की आशा से सुदूर प्रदेशों की कठिन यात्रा करके, लोग उन तीर्थों में पहुँचते थे और वहाँ के नदी-सरोवर में स्नान, देवालयों के दर्शन करने के अतिरिक्त देवत्व की सजीव प्रतिमाओं की ज्ञान गंगा में अंतःकरण को नहलाने का भी लाभ प्राप्त करते थे। आज वह परिस्थितियाँ नहीं रहीं। तीर्थ केवल जलाशयों और देवालयों के बाह्य उपकरणों तक सीमित रह गये। फिर भी लोग बड़ी संख्या में अभी भी वहाँ पहुँचते हैं, इससे प्रतीत होता है कि सत्संग की पुण्य-परंपरा को किसी समय कितना अधिक महत्त्व मिला हुआ था, जिसकी रूढ़ि भी आज इतने समय पश्चात् भी, इतने विशाल परिमाण में विद्यमान है।

आत्मरक्षा के लिए उपेक्षा

हर साल रावण का पुतला जलाने और रामचंद्र जी को गद्दी पर बिठाने की रामलीला जगह-जगह होती है। इसका तात्पर्य यह है कि बुरे व्यक्तियों से दूर रहने और अच्छों के संपर्क में आने की हमारी प्रवृत्ति निरंतर बढ़ती रहे। संपर्क बढ़ाते समय हमें सदा ही यह स्मरण रखना चाहिए कि यह व्यक्ति गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से किस श्रेणी का है ? यदि उसमें बुराइयाँ अधिक और अच्छाइयाँ कम दिखाई दें तो अच्छा यही है कि उससे घनिष्ठता न बढ़ने दें। स्त्री-बच्चों को तो विशेषतया उनके संपर्क में आने से रोकें, क्योंकि वे बहुत भावुक एवं भोले होते हैं। चतुर चालाक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यक्ति आसानी से उन्हें बहका सकते हैं और उनमें अपनी बुरी आदतें प्रविष्ट कर सकते हैं। शिष्टाचार निबाहना बात दूसरी है। जरूरत पड़ने पर काम की बात भलमनसाहत के साथ हर किसी से करनी चाहिए। यह तो शिष्टाचार की माँग है। पर इतने से अधिक आगे यदि घनिष्ठता की ओर कदम बढ़ाते हैं तो सौ बार सोचना चाहिए कि वह व्यक्ति इसके उपयुक्त भी है या नहीं। अकेले बैठे रहना अच्छा है, समय को अच्छी पुस्तकें पढ़कर या हरे जंगलों में घूमकर निकाल लेना अच्छा है, पर निकम्मे लोगों के साथ हा हा, हू हू करते हुए चांडाल चौकड़ी जमाना ठीक नहीं है। बुराई से बचने के लिए यह जरूरी है कि हम बुरे लोगों से बचे रहें।

स्त्री-बच्चों की सुरक्षा

आज की एक अत्यंत विषम समस्या यह है कि हम बुरे लोगों के द्वारा निरंतर फेंके जाने वाले दुष्प्रभाव से अपनी और अपने बच्चों की रक्षा कैसे करें ? वयस्क व्यक्ति तो समझदार भी होते हैं, अपना भला-बुरा सोच भी सकते हैं, पर स्त्री बच्चों में यह बुद्धि भी ठीक तरह विकसित नहीं हो पाती, उनके लिए कुसंग विष की तरह घातक सिद्ध होता है। सभ्य घरानों के अनेकों बच्चे कुसंग में बिगड़ते हैं और वे ऐसे बिगड़ते हैं कि अपना और अपने परिवार का सर्वनाश ही कर बैठते हैं। घर से पैसे चुराकर मटरगस्ती के लिए दोस्तों के साथ भाग खड़े होने की अगणित घटनाएँ आए दिन सुनने में आती रहती हैं। घर में छोटी-मोटी कहा-सुनी हो जाने पर भाग खड़े होना तो एक बहाना होता है, वस्तुतः पहले से ही दोस्त लोग स्वेच्छाचार की शिक्षा उन्हें देते रहते हैं और कोई छोटी-मोटी नाराजी का कारण प्रस्तुत होते ही वह शिक्षा सार्थक हो जाती है। कितने ही लड़के घर रहते हुए भी आवारागर्दी में दिन बिताते हैं। दूसरे आवारा लड़कों का साथ ही इनका प्रमुख कारण होता है। स्त्रियों का संपर्क यदि ऐसी नीच औरतों में रहे तो वे घर में ईर्ष्या-द्वेष के बीज बोती रहती हैं। असंतोष उत्पन्न करने वालों, कलह भड़काने वालों, निराशा एवं खिन्नता उत्पन्न करने वालों के तौर-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तरीके ऐसे होते हैं, जिनके कारण बने घर बिगड़ते देखे गये हैं। बिच्छू के काटने से जिस प्रकार सावधान रहा जाता है, उसी प्रकार कुसंग से भी बचाव रखा जाना चाहिए।

अखरने वाला सूनापन

साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह सदा अकेला नहीं रह सकता। उसे जनसंपर्क से ही सुख मिलता है और सूनापन अखरता है। इसलिए अन्य जीवनोपयोगी आवश्यक साधन जुटाने के समान ही सुसंगति का भी आयोजन करना चाहिए। व्यस्त जीवन वाले व्यक्तियों ने इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए क्लबों की पद्धति निकाली है। समान विचारों और समान स्तर के लोग अपना एक संघ एवं क्लब बनाते हैं। नियत समय पर सब लोग इकट्ठे होकर, मनोरंजन एवं ज्ञानवर्द्धन करते हैं। इस प्रकार सूनापन भी नहीं अखरता और संगति का लाभ भी मिलता रहता है। धार्मिक दृष्टि से जहाँ तक सत्संगों का आयोजन रहता है। प्राचीन काल में गुरु और शिष्य भी सत्संग करते थे। गुरुकुलों में केवल पढ़ना-लिखना ही नहीं सिखाया जाता था, वरन् जीवनोपयोगी महत्त्वपूर्ण विषयों पर मार्मिक विचार-विनिमय भी होता था। शिक्षा प्रणाली सफल होती थी। अब केवल मात्र पढ़ने की व्यवस्था विद्यालयों में रह जाने से बालकों के आंतरिक विकास की एक भारी कमी रह ही जाती है।

व्यस्तता आज हर आदमी को परेशान रखे हुए है। समय का सभी को अभाव है। दुर्गुणी लोग तो निठल्ले रह भी सकते हैं पर सद्गुणी लोग तो एक-एक क्षण को बहुमूल्य समझकर निरंतर कार्य में व्यस्त रहते हैं। इसलिए कुसंग की अपेक्षा सत्संग प्राप्त करना आज अत्यधिक कठिन हो रहा है, फिर भी इसके लिए प्रयत्न करना चाहिए और जब भी, जितना भी अवसर मिल सकता हो श्रेष्ठ पुरुषों की संगति का लाभ उठाना चाहिए। सभा-सम्मेलनों के माध्यम से यदा-कदा सद्विचारों की प्राप्ति होती रहती है। यद्यपि उतने मात्र से वक्ताओं से व्यक्तिगत संपर्क में आकर, उनका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चारित्रिक प्रभाव ग्रहण करने का अवसर नहीं मिल पाता तो भी विचारों का कुछ लाभ तो मिलता ही है। जिन सभा-सम्मेलनों में जीवन विकास का उपयोगी शिक्षण प्राप्त होने की संभावना हो उनमें सम्मिलित होने का प्रयत्न करते रहना चाहिए।

सज्जनता से संपर्क बढ़े

यह एक तथ्य है कि कुसंग से बचना और सत्संग का लाभ उठाना, दुष्प्रवृत्तियों के शमन और सत्प्रवृत्तियों को विकसित करने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है। इस ओर उपेक्षा तनिक भी नहीं करनी चाहिए। यदि अपना संपर्क दुष्ट-दुराचारी लोगों के साथ बन गया है तो उसे शिथिल करते चलना चाहिए और यदि सत्पुरुषों से अपना थोड़ा भी परिचय है तो उसे घनिष्टता की दिशा में विकसित करना चाहिए। संपर्क से उत्पन्न होने वाले प्रभाव से हम अपरिचित न रहें, आज की परिस्थितियों में जबकि दोष-दुर्गुणों का ही चारों ओर साम्राज्य छाया हुआ है। इस संबंध में सतर्क रहने की आवश्यकता है।

आत्मविश्वास और दृढ़ चरित्र की ऐसी मजबूत नींव अपनी मनोभूमि में जमानी चाहिए कि बुरे लोगों की बुराई उससे टकरा कर उसी प्रकार विफल हो जाये जैसे—गैंडे की खाल से बनी ढाल से टकराकर तलवार का वार विफल हो जाता है। विवेकशीलता और आत्मगौरव का ध्यान रखते हुए सभी दुष्प्रभावों को निरस्त करते रहना चाहिए, जो चारों ओर से निरंतर अपने ऊपर हमला करते रहते हैं। उनकी ओर घृणा और तुच्छता के भाव रखकर, हेय व्यक्तियों के दुष्कर्मों का हमें तिरस्कार करते रहना चाहिए। कभी भी उनके सामने आत्मसमर्पण नहीं करना चाहिए। पाप के प्रति घृणा और पुण्य के प्रति श्रद्धा रखकर, हम अपनी सत्प्रवृत्तियों को विकसित करते रह सकते हैं और साथ ही दुष्प्रवृत्तियों से आत्मरक्षा कर सकने में समर्थ भी हो सकते हैं।

❑❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रशंसा और प्रोत्साहन का महत्त्व

जिस प्रकार दूसरों को अपना समय, धन या सलाह देकर उनका कुछ न कुछ भला हम कर सकते हैं, उसी प्रकार प्रोत्साहन देकर भी अनेकों की भलाई कर सकना संभव हो सकता है।

मनुष्य का मन सदा द्विविधा में डूबा रहता है। आशा-निराशा के झूले में झूलता हुआ, वह आगे-पीछे होता रहता है। पाप और पुण्य की प्रवृत्तियाँ भी धूप-छाँह की तरह उस पर काली-सफेद छाया डालती रहती हैं। सद्गुणों और दुर्गुणों के ज्वार-भाटे भी आते रहते हैं। इन परस्पर विरोधी वृत्तियों में जिसे आश्रय मिल जाता है वही जड़ पकड़ लेती है और जिसकी उपेक्षा होती है वह शांत और समाप्त होने लगती है।

प्रोत्साहन की उपयोगिता

इन कोमल भावनाओं का विकास और विनाश दूसरों के प्रोत्साहन अथवा विरोध से कुछ संबंधित रहता है। साधारणतः लोग अपने बारे में कुछ ठीक विश्लेषण नहीं कर पाते। इसके लिए वे दूसरों की सम्मति पर अवलंबित रहते हैं। जब दूसरे लोग अपनी प्रशंसा करते हैं तो मन प्रफुल्लित होता है, गर्व अनुभव होता है और लगता है कि हम वस्तुतः प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। पर जब औरों के मुँह से अपनी निंदा, असफलता और तुच्छता की बात सुनते हैं तो दुःख होता है, मन टूटता है, निराशा आती है। प्रशंसा करने वाले के प्रति कृतज्ञता इसलिए मन में उठती है, क्योंकि उसने हमारे सद्गुणों की चर्चा करके, मानसिक उत्थान में भारी योग दिया है। वह हमें मित्र और प्रिय लगता है। पर जो अपनी निंदा करते हैं वे शत्रु दीखते हैं, बुरे लगते हैं, क्योंकि उन्होंने अपना बुरा पहलू सामने प्रस्तुत करके मन में निराशा और खिन्नता उत्पन्न कर दी।

आत्म निरीक्षण की दृष्टि से अपने दोष-दुर्गुणों को ढूँढ़ना उचित है। किन्हीं घनिष्ठ मित्र को एकांत में उनकी अनुपयुक्त गतिविधियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को सुधारने के लिए परामर्श देना भी उचित है। ऐसा करते समय हर हालत में यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि व्यक्तित्व का निराशात्मक चित्रण न किया जाये। किसी को भी लगातार खराब, अयोग्य, पापी, दुर्गुणी, दुष्ट, मूर्ख कहा जाता रहेगा तो उसका अंतर्मन धीरे-धीरे उन कही जाने वाली बातों को सत्य स्वीकार करने लगेगा। यदि यह मान लिया जाये कि हम वस्तुतः अयोग्य हैं, बुरे हैं तो फिर मनोभूमि ऐसी ढलने लग जायेगी कि जिसमें वह दोष-दुर्गुण स्वतः पैदा हो जाये। ऐसी स्थिति में हिम्मत टूट जाती है, निराशा घेर लेती है और कोई काम करते हुए मन भीतर ही भीतर सकपकाता रहता है कि कहीं काम बिगड़ न जाए और मूर्ख न बनना पड़े। इस सकपकाहट में हाथ-पैर फूल जाते हैं और बने काम भी बिगड़ने लगते हैं।

प्रेरणा का प्रभाव

कहते हैं कि एक बार कुछ चालाक लड़कों ने छुट्टी पाने के लिए षड्यंत्र रचा कि मास्टर को बीमार बनाया जाये और छुट्टी होने पर मस्ती की जाये। उनमें से एक ने मास्टर के पास जाकर गंभीरता से कहा—'गुरुजी आप बीमार मालूम पड़ते हैं।' मास्टर ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। कुछ देर बाद दूसरे लड़के ने उनके पास जाकर चिंता व्यक्त की—'आज तो आपका चेहरा बहुत उदास है, आँखें लाल हो रही हैं और बीमारी जैसे लक्षण प्रतीत होते है।' इसी प्रकार एक-एक करके और लड़के भी आए और उन्होंने भी वही बात दुहराई। बेचारे मास्टर के मन पर उनकी छाप पड़ी और वह सचमुच ही अपने आपको बीमार अनुभव करने लगा और स्कूल की छुट्टी करके घर चला गया। लड़कों ने अपनी चालाकी से मनोरथ पूरा कर लिया।

विश्वास की शक्ति

जर्मनी के एक वैज्ञानिक ने दूसरों की बात का मनुष्य के मन पर किस हद तक बुरा प्रभाव पड़ सकता है ? इसका परीक्षण करने के लिए एक मृत्यु दंड वाले कैदी को चुना और उसे विश्वास की शक्ति द्वारा मार डालने का प्रयोग किया। कैदी को एक मेज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर लिटा दिया गया। आँखों पर पट्टी बाँध दी गई। गले के पास एक जरा-सी पिन चुभो दी गई। पानी की एक हलकी धारा गले को छूती हुई बहती रहे ऐसी नली सटा दी गई। नीचे टपकने वाले पानी को इकट्ठा करने के लिए एक बाल्टी रखी गई। कैदी को कहा गया कि उसके रक्त की एक आवश्यक कार्य के लिए जरूरत है, इसलिए मृत्यु दंड की यह व्यवस्था की गई है कि कष्ट भी कम हो, सारा रक्त निकल जाने से मृत्यु भी हो जाये और आवश्यक कार्य के लिए रक्त भी प्राप्त हो जाये। इसलिए वह चुपचाप लेटा रहे। कुछ ही देर में उसकी मृत्यु शांतिपूर्वक हो जायेगी।

कैदी ने वैज्ञानिक की बात पर विश्वास कर लिया। गले के पास से नली द्वारा बहते हुए और नीचे बाल्टी में टपकते हुए पानी को वह अपना रक्त समझने लगा। डाक्टर लोग बार-बार उसकी नाड़ी देखते और झूठ-मूठ यह कहते कि इतना रक्त निकल चुका, अब इतना और रहा है, इतनी देर में बेहोशी आने वाली है और इतनी देर में मृत्यु हो जायेगी। कैदी डॉक्टरों के कथन पर विश्वास करता गया, अंततः ठीक समय पर उसकी मृत्यु हो गई। तब वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला कि विश्वास के आधार पर किसी व्यक्ति को इतना प्रभावित किया जा सकता है कि उसकी मृत्यु तक हो जाये।

ठगी का षड्यंत्र

पंचतंत्र में एक कथा आती है कि एक व्यक्ति अपने कंधे पर बकरी लादे कहीं जा रहा था। ठगों ने उसे बहकाकर बकरी प्राप्त करने का षड्यंत्र बनाया। रास्ते में सब ठग दूर-दूर बिखर गये। एक ठग रास्ते में उस व्यक्ति को मिला, उसने कहा, "कंधे पर कुत्ता रखकर कहाँ लिये जा रहे हो ?" पथिक ने उत्तर दिया, "यह तो बकरी है।" ठग ने कहा—किसी जादूगर ने तुम्हें भ्रमित करके बकरी के बदले कुत्ता दे दिया मालूम पड़ता है। यदि तुम्हें संदेह हो आगे रास्ते में मिलने वाले यात्रियों से पूछना। पथिक के मन में संदेह उत्पन्न हो गया। उसने कुछ दूर पर मिले यात्री से पूछा। मेरे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कंधे पर क्या है ? उस यात्रीवेशी ठग ने पूर्व निश्चित षड्यंत्र के अनुसार उत्तर दिया—कुत्ता। अब तो उसका संदेह और भी बढ़ा और सोचने लगा सचमुच मुझे जादू से भ्रमित करके बकरी के बदले कुत्ता दे दिया गया है। आगे कुछ-कुछ दूरी पर दूसरे और दो ठग मिले। उनसे पूछा तो उन्होंने भी बकरी को कुत्ता बताया। अंत में पथिक को विश्वास हो गया कि यह बकरी नहीं कुत्ता है। अंततः वह उसे रास्ते में ही छोड़कर चल दिया। ठगों ने वह छोड़ी हुई बकरी प्राप्त कर ली और अपनी मनोवैज्ञानिक चतुरता का लाभ उठाया।

मान्यताओं का प्रभाव

भेड़ों के झुंड में पले हुए सिंह शावक की कथा प्रसिद्ध है जो अपने को भेड़ ही समझता था और घास खाता था। दूसरे सिंह द्वारा उद्‌बोधन करने पर ही उसे आत्मज्ञान हुआ था और तब वह पुनः अपने को सिंह समझने और वैसा ही आचरण करने में समर्थ हुआ था। हम सब इसी प्रकार की भेड़ें बने हुए हैं। जैसा हमने अपने को समझा है, दूसरों ने जैसा कुछ हमें हमारा स्वरूप समझाया है वैसे ही तो हम बने और ढले हैं। करोड़ों अछूत अपने से उच्च वर्ण वालों को छूने और उनके साथ बैठने में संकोच करते हैं, लोगों द्वारा उन्हें अछूत कहे जाने पर वे सचमुच अपने को वैसा ही समझने भी लगते हैं। भूत का भय ऐसी ही भ्रांतियों पर निर्भर है। दूसरों से भूतों की कहानियाँ सुनते-सुनते लोग उस बात पर विश्वास करने लगते हैं। छोटी-मोटी बीमारी को भूत की करतूत मान लेते हैं और फिर सयाने ओझा, जब भूत-बाधा की पुष्टि करते हैं तो वह बात और भी गहराई तक मन में बैठ जाती है। फिर वह भूत प्राण लेकर ही पीछा छोड़ता है। विश्वास की शक्ति अपार है। दूसरों के कहने का मनुष्य पर यह प्रभाव पड़ता है कि वह अपने को सचमुच ही वैसा मानने लगता है। सूने मकानों में, चूहों की खटपट में और सुनसान रात में झाड़ी की छाया में भूत नाचते दीखते हैं। उनसे डरकर कई तो बीमार होते और मरते तक देखे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गये हैं। डर अपने आप में एक तथ्य है, जो विष से कम नहीं अधिक ही घातक सिद्ध होता है।

बालकों की मनोदशा

व्यक्ति अपने बारे में जैसी ही निंदा-प्रशंसा की, छोटे या बड़े होने की, नर या नारी होने की बातें सुनता रहता है तो उसकी मान्यता अपने बारे में वैसी ही बन जाती है। बच्चे जन्म से यह नहीं जानते कि वह लड़की है या लड़का। पर जब घर वाले लड़की-लड़कों के बीच भिन्न प्रकार के वस्त्र, व्यवहार एवं भाषा में बात करते हैं, तब वे अपनी भिन्नता पर विश्वास कर लेते हैं। यदि उनके साथ यह भेद न बरता जाये और उन्हें अंतर समझने का अवसर न मिले, तो वे सब प्रकार समता का आचरण करने लगेंगे। अति प्यार और प्रशंसा से बालक जहाँ जिद्दी और अहंकारी बनते हैं, वहाँ वे बार-बार निंदा एवं तिरस्कार से अपनी दीनता और तुच्छता भी अनुभव करने लगते हैं। जिन बच्चों को आरंभिक जीवन में बार-बार बेवकूफ, नालायक, बदमाश आदि कहा जाता रहा है, उनका व्यक्तित्व जीवन में प्रभावशाली बन न सकेगा। जिन बच्चों को बचपन में स्नेह और सम्मान नहीं मिल पाता, वे बड़े होने पर निकृष्ट प्रवृत्तियों से ग्रसित बन जाते हैं। बच्चों के लिए जहाँ अच्छे लालन-पालन की, अच्छे आहार-विहार की आवश्यकता रहती है, वहीं यह भी नितांत आवश्यक होता है कि उन्हें स्नेह और सम्मान की मात्रा प्राप्त होती रहे। व्यक्तित्व का विकास और निखार प्रोत्साहन और प्रशंसा के आधार पर होता है। अन्न और जल जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिए आवश्यक हैं, उसी प्रकार मानसिक विकास के लिए प्रशंसा और प्रोत्साहन की उपयोगिता मानी गई है।

बच्चे हों या बड़े उपर्युक्त आवश्यकता सभी में समान रूप से बनी रहती है। ऐसे मनस्वी तो कोई-कोई ही देखे जाते हैं, जो दूसरों की प्रशंसा का ध्यान न करके अपने प्रबल आत्मविश्वास के आधार पर अपना उत्कर्ष स्वयं करते हैं और विपन्न परिस्थितियों में भी साहस को बनाए रहते हैं। साधारणतः तो यही परंपरा चलती है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कि प्रेरणा और प्रशंसा से प्रोत्साहित होकर लोग अपने मन को बढ़ाते और घटाते रहते हैं।

अच्छाइयाँ ढूँढ़े प्रशंसा करें

हमें अपने सभी स्वजन-संबंधियों की, परिचित-अपरिचितों की सत्प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करते रहना चाहिए। ढूँढ़ने पर हर किसी में कुछ गुण मिलते हैं, अच्छाइयों से रहित इस धरती पर कोई व्यक्ति पैदा नहीं हुआ। जिसमें जो सद्गुण दीख पड़ें उनकी चर्चा उस व्यक्ति के सामने की जाए कि वह इन गुणों को बढ़ाते हुए एक दिन बहुत उन्नतिशील बन सकता है, तो निश्चय ही इस प्रशंसा का प्रभाव उस पर पड़े बिना न रहेगा। प्रशंसक बनकर हम हर व्यक्ति के मित्र बन सकते हैं। उसे समझाने और सुधारने में भी सफल हो सकते हैं। पर यदि निंदा और भर्त्सना करना ही हमने सीखा है तो सब कोई अपने शत्रु बन जाएँगे और अपनी सीख को भी दुर्भावना मानकर उसके प्रतिकूल आचरण करेंगे।

सुधार की दृष्टि से कभी-कभी मधुर शब्दों में दोषों को बहुत ही आत्मीयता से एकांत में बता देना भी उन्हें सुधारने की बात कही जा सकती है, पर यह सब बहुत ही सावधानी से आत्मीयता और सौजन्य के वातावरण में कहा जाना चाहिए और समझाने के बाद अंत में फिर एक बार अपनी सद्भावना और आत्मीयता की सफाई दे देनी चाहिए। कारण यह है कि कोई व्यक्ति यह मान ले कि अमुक व्यक्ति मुझसे घृणा करता है तो फिर वह उसके प्रति शत्रुता जैसी दुर्भावना रखने लगता है। तब उसकी सलाह को भी वह दो कौड़ी का महत्त्व देता है। इसलिए सुधारात्मक, आलोचनात्मक चर्चा बहुत ही सावधानी से, नपे-तुले और स्नेह-शिष्टाचार मिश्रित मधुर शब्दों में ही करनी चाहिए और ऐसे अवसर कभी-कभी ही आने देने चाहिए।

हम निंदक नहीं, प्रशंसक बनें

आमतौर से हमें प्रशंसक की ही भूमिका प्रस्तुत करते रहना चाहिए, जिससे उनके सद्गुण बढ़ें। साहस, आत्मविश्वास बढ़ाकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही किसी को श्रेष्ठता के कठिन सन्मार्ग पर चलाया जाना संभव हो सकता है। दमन और दंड से, निंदा और तिरस्कार से कोई दुर्गुण दब तो जाते हैं, पर अवसर मिलने पर वे प्रतिहिंसा के साथ और भी भयंकर रूप में प्रकट होते हैं। दोषों का उन्मूलन तो गुणों की वृद्धि से ही संभव है। गुण को बढ़ाने में प्रोत्साहन और प्रशंसा का मार्ग सर्वश्रेष्ठ है। स्वच्छ वायु फेंफड़ों में भरने से पुरानी गंदी वायु को बाहर निकालना ही पड़ता है। सद्भावनाएँ बढ़ने से दुर्भावनाएँ घटती ही हैं। सुधार का यही मार्ग अधिक प्रामाणिक और सुनिश्चित सिद्ध होता है।

शत्रुओं की संख्या घटाने और मित्रों की संख्या बढ़ाने का सबसे सरल और सबसे प्रभावशाली तरीका यह है कि हम दूसरों के गुणों को देखें, अच्छाइयों की चर्चा करें और अपनी प्रसन्नता एवं भविष्य में और प्रगति की आशा व्यक्त करें। यह स्वभाव बना लेने पर हम दूसरों को अच्छाई के मार्ग पर बहुत आगे बढ़ा सकते हैं, बहुत सुधार सकते हैं और उनके मनोबल में भारी अभिवृद्धि कर सकते हैं। बिना कौड़ी, छदाम खर्च किये दूसरों का भारी उपकार कर सकने का यह गुण यदि अपने में विकसित हो जाये तो परमार्थ का बहुत पुण्य प्राप्त हो, साथ ही अपने मित्रों की संख्या अत्यधिक हो जाने से उन्नति, प्रगति, सहयोग और सम्मान का मार्ग भी प्रशस्त बने। अपने स्वभाव, दृष्टिकोण और संभाषण में हमें इतना सुधार तो कर लेना चाहिए। जीवन विद्या के इस अत्यधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य को हमें हृदयंगम कर ही लेना चाहिए।

शत्रुता की मित्रता में परिणत

कथा है कि विश्वामित्र ने वशिष्ठ के पुत्रों को मार डाला और वे छिपकर यह सुनने लगे कि देखें वशिष्ठ मेरे बारे में क्या कहते हैं। वशिष्ठ जी अपनी धर्मपत्नी के शोक को शांत करते हुए यही समझा रहे थे कि "विश्वामित्र बड़े तपस्वी हैं। यह दुष्कर्म तो वे किसी आवेश में कर बैठे हैं। हमें उनसे प्रतिशोध नहीं लेना चाहिए। उनकी श्रेष्ठता कभी-न-कभी निखरेगी और उससे संसार का बड़ा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हित साधन होगा। राज्य त्यागकर तपस्या में प्रवृत्त होने वाले विश्वामित्र स्वभावतः दुष्ट नहीं हो सकते। यह दुष्कर्म तो उनसे भूल में ही बना होगा।" कुटिया के पीछे छिपे विश्वामित्र ने जब वशिष्ठ के मुँह से अपनी प्रशंसा सुनी तो वे पानी-पानी हो गये और वशिष्ठ के चरणों पर गिरकर अपनी भूल के लिए फूट-फूट कर रोने लगे। सुधार का यही सबसे प्रभावशाली तरीका है।

अपने घर के स्त्री-बच्चों में, भाई-भतीजों में जो भी सद्गुण हमें दीखें, उनकी मुक्त कंठ से प्रशंसा करनी चाहिए। प्रोत्साहन और प्रशंसा करने में जिसकी जीभ रुकती है, वह सबसे निकृष्ट कोटि का कंजूस है। जेब से पैसा खर्च नहीं कर सकते, समय लगाकर सेवा नहीं कर सकते तो जबान हिलाकर अच्छी, उत्साह भरी, चित्त को सांत्वना और साहस प्रदान करने वाली बातें तो कह ही सकते हैं। हमारा यही रवैया होना चाहिए। गुण देखें, गुणों की चर्चा करें, गुणवानों को प्रोत्साहित करें तो अपना यह स्वभाव दूसरों के लिए ही नहीं, अपने लिए भी परम मंगलमय सिद्ध हो सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आलस्य में समय न गवाएँ

हीरा मूल्यवान् होते हुए भी उसकी ठीक कीमत जौहरी की दुकान पर ही प्राप्त होती है। बच्चों के खेल-खिलौनों में वह काँच के एक टुकड़े की तरह पड़ा रह सकता है, पर उसका कोई गौरव और महत्त्व वहाँ प्रकट नहीं होता। मनुष्य का जीवन मूल्यवान् होते हुए भी उसकी कदर तब खुलती है, जब उसका मूल्यांकन किए हुए कार्यों के आधार पर किया जाता है। किसी प्रकार दिन काट लेना और साँसें पूरी कर लेना एक बात है, यदि जीवन का पूरा लाभ उठा लें तो दूसरी। जिसे अपना जीवन व्यर्थ नहीं गँवाना है, भार की तरह जिंदगी का बोझ किसी प्रकार ढोते ही रहना नहीं है उसे यह प्रयत्न करना होता है कि मानव जीवन के बहुमूल्य क्षणों का सदुपयोग कर लिया जाये।

तेजी और चमक का माध्यम

हथियारों की धार तब तेज होती है, जब शान के पत्थर पर घिसकर उन पर धार धरी जाती है। रगड़ के बिना चमक नहीं आती। मैले-कुचैले बर्तनों को मिट्टी में माँजकर स्वच्छ और चमकदार बनाया जाता है। मनुष्य का जीवन भी परिश्रम की धार धरने से ही चमकदार बनता है। लोहे के मामूली टुकड़े खराद पर खरादे जाने से बहुमूल्य उपयोगी पुर्जे बन जाते हैं, जो किसी मशीन के अंग बनकर बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं। मनुष्य जीवन लोहे का टुकड़ा कहा जाये तो परिश्रम को खराद मानना पड़ता है। जो जितना परिश्रमी है, वह उतना ही अपने जीवन को सार्थक बना लेता है।

तामसिक प्रकृति का प्रधान लक्षण क्रोध नहीं आलस्य है। क्रोध की हानियों को लोग प्रत्यक्ष देखते हैं, इसलिए क्रोधी को तमोगुणी कहते हैं। पर गहराई में विचार किया जाए तो क्रोध की अपेक्षा आलस्य की हानि अधिक है। क्रोध से रक्त सूखता है, द्वेष बढ़ता है, अस्त-व्यस्तता उत्पन्न होती हैं। क्रोध से अनेकों हानियाँ हैं,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर सजीवता बने रहने का एक उपयोग तो उसमें भी है। किंतु आलस्य में तो वह भी नहीं है। जिसे श्रम से अरुचि है, वह तो एक प्रकार का मुर्दा ही कहा जायेगा। जीवन के चिह्न हैं प्रेरणा, स्फूर्ति, उत्साह, लगन, प्रसन्नता आदि। जिसमें से यह तत्त्व घट गये हैं, काम करने की बात सुनकर, जिसका जी दुःखी होता है, जिसे पड़े रहना और किसी प्रकार वक्त गुजारते रहना प्रिय है, उस आलसी को जीवितमृत ही कहा जायेगा।

समय काटा न जाये

यों समय काटने के लिए निकम्मे और निठल्ले आदमी भी कुछ न कुछ काम निकालते हैं। गप्पें हाँकने, मटरगश्ती करने, ताश खेलने, सिनेमा देखने, बेकार काम में चौधरी बनने, दूसरों के कामों में अकारण टाँग अड़ाने की, यारबाजी की आदत आलसी लोगों में पाई जाती है। उन्हीं के जैसे अन्य निठल्ले लोग चौकड़ी जमा कर बैठ जाते हैं और यारबाजी के शगल चलने लगते हैं। उस चौकड़ी में प्रेम, सिद्धांत, कार्यक्रम एवं कारण का कोई आधार तो होता नहीं, समय काटने के लिए ही इकट्ठे होते हैं। बेकार की बातों में, व्यसनों में इस सम्मेलन से वृद्धि ही होती है। इस प्रकार की चौकड़ी जमना, इन निठल्लों के दोष और दुर्गुणों को बढ़ाने में ही सहायक होता है।

बेकारी अर्थात् बर्बादी

कहावत है—"खाली दिमाग शैतान की दुकान।" जो बेकार रहेगा उसे शैतानी सूझेगी। कुछ दिन पहले इस देश में राजा, रईस, अमीर, उमराव, जमींदार, साहूकार, महंत, मठाधीश बहुत थे। उनके पास आमदनी बहुत थी और नौकर-चाकरों के बलबूते पर उनका व्यापार चलता रहता था। काम का कोई उत्तरदायित्व सिर पर न होने से उनके पास समय बहुत बचता था। इस बचे हुए समय का उपयोग आमतौर से खुराफातों में होता था। बहुत कम लोग इन वर्गों में ऐसे थे, जो अपने समय को किसी मूल्यवान् कार्य में लगाते थे। अब यह वर्ग घट रहे हैं। परिस्थितियों ने उन्हें श्रम करने और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुधरने के लिए विवश किया है। वह विवशता उपयोगी भी है और आवश्यक भी। बेकारी की समस्या इसीलिए खतरनाक नहीं मानी जाती कि उन दिनों आदमी कमाता नहीं वरन् मुख्यतया इसलिए उसे भयंकर मानते हैं कि बेकार आदमी को उत्पात ही सूझेंगे। बुरे विचार उसके मस्तिष्क में उठेंगे और वह बुरे कामों की ओर अग्रसर होगा। बुराई का आज चारों ओर बाहुल्य है। उसी का प्रसार एवं आकर्षण भी प्रबल है, बेकार आदमी सहज ही उस ओर आकर्षित होते हैं। कार्यव्यस्त व्यक्ति फुरसत न मिलने कें कारण बुराइयों से बचा रहता है। पर बेकार आदमी के लिए तो सर्वनाश का द्वार खुला पड़ा रहता है।

आलस्य से विनाश

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

बेकारी का कारण सदा काम का अभाव ही नहीं, बहुधा आलस्य भी होता है। नौकरी के लिए दर-दर ठोकरें खाते-फिरने वालों में से अधिकांश वे होते हैं, जो ऊँची आमदनी की, आरामतलब की, बिना मेहनत की नौकरी चाहते हैं, श्रम करने में जिनका जी दुःखता है, मेहनत-मजदूरी से जिन्हें अपनी शान और इज्जत घटती मालूम पड़ती है। उनके लिए बाबूगीरी की नौकरियाँ मिलना मुश्किल हो सकती हैं, पर परिश्रम करने वाले के लिए काम की कहीं कमी नहीं है। ज्यादा पैसे का नहीं, बड़ा न सही परंतु हर आदमी को हर जगह काम मिल सकता है और बहुत न सही पर थोड़ा तो वह कमा ही सकता है। थोड़ी भी कमाई न हो तो समय की बेकारी तो किसी काम में लगे रहने से बच ही जाती है। खुराफात में मन दौड़ाने का अवसर नहीं मिलता, यह भी क्या कुछ कम लाभ है। पुरानी कहावत है कि—"कुछ न कुछ किया कर। कुछ न हो तो पाजामा उधेड़कर सिया कर।" बेकारी का वक्त बेकार बातों में गँवाने की अपेक्षा यह अच्छा है कि पाजामा उधेड़ने और सीने की कला का अभ्यास होता रहे और उस कार्य में हाथ सध जाये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कोई काम न था। पर उन्होंने अपनी सूझ-बूझ और उद्योगशीलता के आधार पर हर जगह काम प्राप्त कर लिया। आरंभ छोटे-से किया, पीछे अपनी मेहनत और बुद्धिमत्ता के आधार पर अच्छी स्थिति प्राप्त कर ली। न तो उन्होंने किसी के आगे हाथ पसारा और न कहीं नौकरी के लिए ठोकरें खाईं। कारीगरों की हर क्षेत्र में आवश्यकता है। देश में उद्योग-धंधे बढ़ रहे हैं, उनके लिए कुशल कारीगरों की भारी कमी रहती है। उन्हें आजीविका भी अच्छी मिलती है और स्वास्थ भी ठीक रहता है। बाबूगीरी की अपेक्षा लोग मेहनतकश बनने को तैयार हों तो उनकी शान-शेखी में ही थोड़ी कमी हो सकती है, पर लाभ उन्हें भी होगा और सारे समाज की भी।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अनुत्साह और अरुचि

आलस्य में हमारा आधे से अधिक समय बर्बाद होता है। अनुत्साह और अरुचिपूर्वक किया हुआ कोई भी काम दूना समय लेता है और परिणाम में आधा पूरा हो पाता है। जेल के कैदी की मनोवृत्ति से किया हुआ काम कुछ-कुछ तभी अच्छा रह सकता है, जब उस पर दंड की कठोर व्यवस्था रहे। अन्यथा वह सब कार्य ढीला-पोला और काना-कुबड़ा ही बन सकेगा। शारीरिक आलस्य, वस्तुतः मानसिक आलस्य की उपज होता है। जो लोग खिच-खिच-खिच-खिच करते तो सारे दिन हैं, पर कार्य का परिणाम जरा-सा दिखाई देता है, उन्हें अनुत्साही और आलसी ही कहा जायेगा। कितने ही लोग बहुत काम होने और फुरसत न मिलने का रोना रोया करते हैं। वस्तुतः उन्हें काम की ठीक व्यवस्था नहीं आती। यदि समय का ठीक विभाग करके, उचित समय में उचित कार्य किया जाये तो अबकी अपेक्षा हम दूना, चौगुना काम कर सकते हैं। विश्व के श्रम संगठन की रिपोर्ट है कि भारतीय मजदूर की अपेक्षा अमरीकी मजदूर प्रायः साढ़े तीन गुना अधिक काम करता है। पूरे परिश्रम से काम करने पर परिणाम भी अधिक होता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है और उसका लाभ श्रमिक तथा कराने वाले दोनों को ही मिलता है। काम की गति मंद कर देने में तो दोनों को ही हानि होती है।

जड़ता की ओर न बढ़ें

सरकारी दफ्तरों में काम की गति मंद कर देने का इन दिनों एक नया फैशन चला है। बाबू लोग इस कोशिश में रहते हैं कि उन्हें कम से कम काम करना पड़े। जानकारों का कथन है कि पचास वर्ष पूर्व जितना काम एक बाबू निपटाता था, अब दो भी उतना नहीं करते। इस प्रकार जड़ता की ओर अन्य वर्ग भी चल रहे हैं। इसका परिणाम न व्यक्ति के लिए श्रेयस्कर है न राष्ट्र के लिए। पारिश्रमिक अधिक लिया या दिया जाना चाहिए पर श्रम में जड़ता उत्पन्न करना प्रत्येक दृष्टि से अनुपयुक्त है।

जिन लोगों ने जीवन में कोई महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं, उन्होंने समय और श्रम का महत्त्व पहचाना है। एक क्षण भी बिना बेकार गँवाये वे पुरुषार्थ में संलग्न रहे हैं। यह सोचना गलत है कि पड़े रहने से स्वास्थ्य बनता और श्रम करने से बिगड़ता है। सही बात इससे बिल्कुल उलटी है। परिश्रमी ज्यादा दिन जीते हैं, अधिक निरोग रहते हैं, जबकि आलसी के अंग-प्रत्यंगों में जड़ता का प्रवेश हो जाने से जीवनी शक्ति घटती और दुर्बलता, बीमारी और अकाल मृत्यु की संभावना तेजी से बढ़ती है। स्त्रियों में जब तक चक्की पीसने, पानी खींचने, गोबर थापने आदि का परिश्रम करने की आदत बनी रही, तब तक उनका स्वास्थ्य काफी अच्छा रहता था और प्रसव हँसते-खेलते हो जाता था। अब जब कि उन कामों को महिलाएँ अपनी शान के खिलाफ समझती हैं, तो बीमारियों की शिकार बनी रहती हैं, प्रसव बहुत ही कष्टदायक और कई बार तो प्राणघातक होते हैं। इस प्रकार आलस्य का उन्हें महँगा मूल्य चुकाना पड़ रहा है। हर काम के लिए कुली और हर कदम के लिए सवारी ढूँढ़ने वाले 'बड़े आदमी' भी इस प्रकार अपने स्वास्थ्य को बुरी तरह नष्ट करते चले जा रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बुढ़ापा अकर्मण्यता के लिए नहीं

बुढ़ापे का बहाना लेकर काम से जी चुराना यह बुरी और भोंड़ी आदत है। बुढ़ापे में कठोर काम करने में बेशक कठिनाई होती है, पर हल्के काम तो मरते दम तक करते रहा जा सकता है। गाँधी जी की मृत्यु ८० वर्ष की आयु में हुई थी, वे उन दिनों भी पूरे सम्थ काम करते थे। विनोबा ७० वर्ष की आयु में देश के कोने-कोने में नैतिक क्रांति का संदेश सुनाते रहे। राजगोपालाचार्य ८० वर्ष में कांग्रेस को पलटाने का हौंसला दिखाते रहे। पंडित नेहरू ७२ वर्ष की आयु में नौजवानों की तरह अठारह घंटा काम किया करते थे। संसार में सभी विचारशील व्यक्ति, जिन्हें जीवन का मूल्य और महत्त्व मालूम है, बिना जवानी-बुढ़ापे का ख्याल किये निरंतर कार्य संलग्न रहते हैं। श्रम किस प्रकार का हो, यह शारीरिक और मानसिक स्थिति को देखते हुए बदला जा सकता है, पर नियमित रूप से कुछ उपयोगी काम तो मरते समय तक करते ही रहना चाहिए। बेकारी से बड़ी विपत्ति दूसरी नहीं है। यह सोचना नितांत मूर्खता है कि जो बैठे रहते हैं, जिनके दिन आराम से कटते हैं, वे भाग्यवान् हैं। वस्तुतः उन्हें अभागे ही कहना चाहिए, क्योंकि समय और सामर्थ्य रहते हुए भी वे श्रम जैसे मित्र का तिरस्कार करके, जीवन के बहुमूल्य क्षणों को व्यर्थ गँवा रहे हैं, उनका कोई भी लाभ नहीं उठा पा रहे हैं।

आमतौर से हमें जितना काम करना पड़ता है, यदि उसे उत्साह और व्यवस्था के वातावरण में किया जाये तो वह अब की अपेक्षा आधे समय में पूरा हो सकता है। उत्साह और मनोयोग के साथ जो कार्य किया जाता है, वह मनोरंजन ही बन जाता है और उसमें थकान नहीं आती। खिलाड़ी लोग गेंद खेलने में कितनी भाग-दौड़ करते हैं, पर उन्हें थकान नहीं आती। जो भी काम भार समझकर न किया जायेगा, मनोरंजन की तरह निपटाया जायेगा वह आनंद प्रदान करेगा और उत्साह भी; थकान तो उससे आयेगी ही नहीं। यदि मनोरंजन के लिए, खेल-कूद के लिए कोई समय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निकालना हो तो वह भी निर्धारित और निश्चित होना चाहिए। थोड़े समय का मनोरंजन लाभदायक हो सकता है, पर खेलकूद और मनोरंजन की बात ही सदा सोचते रहना और शरीर एवं मस्तिष्क को परिश्रम से बचाये फिरना अबुद्धिमत्तापूर्ण ही कहा जायेगा।

जीवन का सदुपयोग

आजीविका उपार्जन के लिए नियमित समय के अतिरिक्त हर आदमी के पास काफी समय बचता है। उसे अध्ययन में, अपनी योग्यता बढ़ाने में, व्यवस्था में, सफाई में, सेवा-कार्यों में, परमार्थ में या ऐसे ही अन्य उपयोगी कार्यों में लगाया जा सकता है। एकमात्र आजीविका कमाना ही समय का सदुपयोग नहीं है। अपने में वे अन्य विशेषताएँ भी उत्पन्न करनी चाहिए, जो आत्मिक दृष्टि से हमें उच्च कोटि के सत्पुरुषों की श्रेणी में पहुँचाती हैं। अगले जन्म के लिए श्रेष्ठ संस्कार धारण करके जाने से ही अपने उत्कर्ष की प्रक्रिया आगे चलती रह सकती है। इसकी तैयारी श्रेष्ठ कर्मों को अपनाए रहने से ही होती है। निरालस्य होकर हमें उस प्रकार के कार्यों में भी अपना समय लगाते रहना चाहिए। समय ही मानव जीवन की सच्ची संपत्ति है। जिस प्रकार हम अपना एक आना भी व्यर्थ नहीं खोते, उसी प्रकार समय की भी पूरी सँभाल रखनी चाहिए और हर क्षण का उचित लाभ उठाने के लिए उसे श्रम के साथ संलग्न रखे रहना चाहिए।

❐❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रम से ही जीवन निखरता है

जिन वस्तुओं से जितना अधिक काम लिया जाता है, वह उतनी ही चमकीली बनती हैं। बेकार पड़ी हुई वस्तुओं को जंग लग जाती है। जो मशीन काम में आती रहती हैं, वे जल्दी ही खराब नहीं होतीं। बेकार पड़ी हुई मशीन कुछ ही समय में बेकार हो जाती हैं। उनके बाह्य आकार से लेकर आंतरिक सूक्ष्म पुर्जे तक खराब, अनुपयोगी हो जाते हैं। मानव शरीर तो अन्य मशीनों से बहुत ही महत्त्वपूर्ण, चेतन और जड़ की सम्मिलित रचना का सर्वोपरि नमूना है। उद्योग के अभाव में, बेकारी में शरीर और मानसिक स्थितियाँ विकृत हो जाती हैं, मनुष्य को मानसिक और शारीरिक रोगों का शिकार होना पड़ता है।

श्रम ही चमकता है

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

उद्यमशील व्यक्तियों का मुखमंडल सदैव चमकता हुआ दिखाई देता है और अकर्मण्य व्यक्ति सदैव क्लांत, उद्विग्न, दुःखी और खोटी कल्पनाओं में फँसे देखे जाते हैं। परिश्रमी ही सबसे अधिक सुखी, प्रसन्न और संतुष्ट रहते हैं। वे भले ही भौतिक संपत्ति, समृद्धि में बड़े न हों किंतु उनका आंतरिक धन, जिसमें मानसिक संतोष, हल्केपन और प्रसन्नता का वे अनुभव करते हैं, वह संसार की सबसे बड़ी संपत्ति है।

परिश्रम से ही स्वास्थ्य में सुधार होता है। उद्यमी व्यक्ति थककर अपनी शय्या में प्रवेश करता है, उसे स्वास्थ्यवर्धक उत्तम नींद आती है। प्रातः उठने पर वे तरोताजगी, प्रफुल्लता, शक्ति, प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। आलसी, अकर्मण्य ही दुःस्वप्नों, अनिद्रा में पड़े हुए सुबह भी आलस्य, चिंता, भार-सा महसूस करते हुए उठते हैं।

परिश्रम, कर्म ही जीवन की स्थिति का कारण है। अकर्मण्यता, आलस्य मृत्यु की ओर अग्रसर होने का प्रयत्न है। गतिहीन (स्पंदन रहित) लाश को लोग जल्दी ही नष्ट कर डालते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं। जब तक सोना है, तब तक सोते रहे किंतु जागते हुए रहकर आलस्य में, उद्योगहीनता में समय बिताना पतन, मृत्यु को निमंत्रण देना है।

आवश्यकता की पूर्ति के लिए

परिश्रम, उद्योग जीवन की प्राथमिक आवश्यकता है, जिसकी पूर्ति के बिना अन्य आवश्यकताओं के लिए कोई स्थान नहीं है। भोजन, वस्त्र आदि जीवन की सभी आवश्यकताओं के लिए श्रम किया जाए, श्रम से ही इनकी प्राप्ति की जाए। बिना श्रम के अपनी आवश्यकता पूर्ण करना चोरी है। जिस तरह चोर किसी की धन-संपत्ति चुराकर अपनी आवश्यकताएँ पूर्ण करता है, वैसे ही श्रम के अभाव में जीवन की साधन-संपत्ति जुटाना चोरी के साथ ही दूसरों का शोषण है, क्योंकि साधनों का अस्तित्व श्रम से ही है। दूसरों के श्रम से उपार्जित वस्तुओं का उपभोग, बिना श्रम का बदला चुकाए करना चोरी, शोषण तो है ही। अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसी न किसी रूप में श्रम करना आवश्यक है।

रोटी के लिए श्रम सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए महात्मा टाल्सटाय और उनके पूर्व के चिंतकों ने एक नई प्रेरणा मानव जाति को दी है। भारतीय जीवन व्यवस्था में तो हमारे ऋषियों ने पहले ही इसका व्यवस्थित कार्यक्रम बनाया था और उसके अभ्यास के लिए जीवन के प्रारंभ के पच्चीस वर्षों में ब्रह्मचारी को गुरु के आश्रम में रहकर कठोर श्रम करना पड़ता था। महाराजा जनक जैसे तत्त्वज्ञानी भी हल चलाकर जीवन निर्वाह की वस्तुएँ उपलब्ध करते थे। आध्यात्मिक साधनाओं में लीन ऋषि-मुनि भी वन के कंदमूल, फल, अथवा खेत में बिखरे पड़े रहने वाले दानों से जीवन निर्वाह कर अपना संपूर्ण समय लोककल्याणार्थ आध्यात्मिक साधनाओं में बिताते थे। महर्षि दुर्वासा, कणाद, पिप्पलाद आदि इसी आदर्श के प्रतिष्ठापक थे। किंतु हम श्रम के इस महत्त्व को भूल गये और इसी कारण आलस्य, अकर्मण्यता से हमारा पतन हुआ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ज्ञान और कर्म का संबंध

ज्ञानी, ज्ञान की बातें कहना मात्र अपना काम समझने लगे। ब्राह्मण दान, दक्षिणा, भिक्षा को अपना अधिकार-सा समझने लगे। राजा-महाराजा अपने आपको धरती पर भगवान् का रूप समझने लगे। वणिक वृत्ति के लोगों ने बिना श्रम के तिकड़म, चालाकी, बुद्धि के चातुर्य को अपना पेशा मान लिया। उत्पादन का सारा बोझ किसान पर पड़ गया। किसान का शोषण होने लगा और उसे समाज का निम्न अंग मान लिया गया। फलतः आज तक भी किसान अपनी दीनावस्था में पड़े हुए हैं। अकर्मण्यता, आलस्य आदि ने हमारे पौरुष को ही नष्ट कर दिया; पुरुषार्थ, स्वाभिमान, उत्साह को दबा दिया। बिना श्रम के हमारा उत्थान भी नहीं हो सकता। भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, चोरी, बेईमानी, मिलावट, धोखादेही और इसके साथ ही फिजूलखर्ची, अपव्यय, फैशन-परस्ती का अस्तित्व उन कुसंस्कारों का परिणाम ही है, जिनका परिष्कार श्रम की प्रतिष्ठा करने पर ही होगा।

पश्चिमी देशों ने श्रम के बल पर अपनी भौतिक और शारीरिक क्षमताओं से सर्वोपरि स्थान प्राप्त कर लिया। वे कुछ ही वर्षों में संसार के शक्तिशाली और समृद्ध राष्ट्र बन गये। यह हमारे लिए अनुकरणीय है।

दबाव से नहीं प्रेमपूर्वक

श्रम स्वेच्छापूर्वक किया जाना चाहिए। दबाव द्वारा अथवा किसी भय के कारण श्रम एक भार बन जाता है और जीवन के आकर्षण को नष्ट कर देता है। श्रम में जो सुखद आनंद मिलना चाहिए वह नहीं मिलता। दबाव से मनुष्य का शरीर काम में लगा रहता है किंतु मन साथ नहीं देता। ऐसी अवस्था में काम को टालने अथवा उसको जैसे-तैसे पूरा करने की भावना अथवा सुघड़ता से करने की लगन में अभाव से कार्य के उपयुक्त परिणाम की आशा नहीं की जा सकती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्रम से प्रेम करना ही श्रम का सही आधार है। प्रेमपूर्वक खूब श्रम करना और श्रम से उत्पन्न आमदनी, उत्पादन का भाग अपनी जरूरी आवश्यकता की पूर्ति में लगाकर शेष को समाज की सेवा में, जनकल्याण में लगा देना और फिर श्रम करने के लिए तैयार रहना श्रम की प्रतिष्ठा के लिए आवश्यक है। आवश्यकता से अधिक उत्पादन का संग्रह करते रहने से जब आवश्यकता पड़ने पर सरलता से उसकी पूर्ति हो जाती है, तो श्रम की आवश्यकता महसूस नहीं होती और मनुष्य श्रम से जी चुराने लगता है। इसीलिए भारतीय जीवन दर्शन में परिग्रह का निषेध करके दान, त्याग, परोपकार को आवश्यक धर्म-कर्तव्य बताया गया है, जिससे मनुष्य के पास कुछ संग्रह ही न हो और वह श्रम के लिए सदैव तैयार रहे।

इस तरह श्रम अस्तेय के सिद्धांत का निष्कर्ष है और अपरिग्रह की सिद्धि का साधन है। श्रमशील चोर नहीं होता वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करता है। वही अपरिग्रही हो सकता है, क्योंकि त्याग, दान आदि के लिए उसके पास सच्ची कमाई है। हजारों आदमियों के श्रम से उत्पन्न साधन-संपत्ति का मालिक बनने वाला एक करोड़पति यदि एक लाख रुपये समाज सेवा अथवा दान आदि में लगा देता है, तो वह कोई बड़ी बात नहीं हुई। उसका पुण्य एक लोक-दिखावा मात्र है, वास्तविक पुण्य नहीं। इसके विपरीत अपने श्रम से उत्पादन करने वाला एक किसान लोक-कल्याण के कार्यों में कुछ रुपये भी लगा देगा, तो सिद्धांततः वह बड़ा परोपकारी, समाजसेवक, परमार्थप्रिय माना जाना चाहिए।

श्रम के वरदान

श्रम से जीवन में सुख, शांति, संतोष प्राप्त होता है, क्योंकि अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति का आधार मनुष्य स्वयं होता है। स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता एवं श्रमशीलता ही मनुष्य को सच्ची आत्म-शांति प्रदान करते हैं। शोषक, चोर, परावलंबी सदैव असंतुष्ट, दुःखी, परेशान, क्लेशयुक्त देखे जाते हैं। गाँव का एक किसान अधिक सीधा, सरल, उत्साही और प्रसन्न रहता है, बनिस्बत एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चोर बाजारी करने वाले, रिश्वतखोर, धोखाधड़ी करने वाले के। श्रम और स्वास्थ्य का तो अन्योन्याश्रय संबंध है। अकर्मण्य, आलसी, दूसरों के श्रम पर जीने वाले सदैव रोगी, निर्बल, क्षीणकाय देखे जा सकते हैं। शहरी जीवन चाहे वह अंधेरे में रहने से, लीपा-पोती करने से, वायु भर जाने से कितना ही सफेद, मोटा, ताजा-आकर्षक दिखाई दे, किंतु गाँव के दुबले-पतले कृषक के सामने उसके स्वास्थ्य का खोखलापन सरलता से जाना जा सकता है। क्षय, बुखार, दमा, पेट के रोग, स्नायविक विकार, जितने शहरी जीवन में घुसे हुए हैं, उतने देहाती जीवन में नहीं देखे जाते। देहात आज भी श्रमशीलता के मंदिर बने हुए हैं, जिनकी तीर्थ यात्रा करे बिना हमारे समाज और राष्ट्र का उत्थान नहीं हो सकता। श्रम-केंद्र देहातों को महत्त्व देकर ही हम अपने अस्तित्व को कायम रख सकते हैं। शहरों में श्रम की उपेक्षा करके जो कृत्रिम वातावरण बना, फैशन-परस्ती बढ़ी, विलासिता पनपी, उसी ने वहाँ स्वास्थ्य संकट पैदा कर दिया।

सादगी और सरलता का मार्ग

श्रम और स्वास्थ्य की तरह नैतिक सद्गुण तथा सादगी का भी निकटतम संबंध है। जहाँ श्रम होगा, मिट्टी, खान, जंगल और निर्माण केंद्र में काम होता होगा, वहाँ बनाव शृंगार की फैशन-परस्ती की कोई गुंजायश नहीं है। ग्रामीण जनता को कहाँ फुरसत है इसके लिए। कभी देखा है किसी खेत, गौशाला में काम करती ग्रामीण स्त्री को फैशन की चमक-दमक भरी साड़ी पहने, मुँह पर तरह-तरह के रंग पोते। किसी किसान को कभी देखा है—मोजे, चमकदार जूते चढ़ाए, क्रीज्ड पैंट, कोट, टाई, हैट लगाए, आँखों पर चश्मा चढ़ाए, जब वह अपने हल पर काम करता है। वही सीधा-साधा परिधान "चार रोटी—एक लंगोटी" और उस पर भी हँसता-गाता प्रफुल्लतापूर्ण जीवन। बादलों को देखकर वह मस्ती, खेतों की हरियाली छटा में से नवरक्त का संचार ये श्रमदेव के अमूल्य वरदान उन्हें ही प्राप्त होते हैं।

❑❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्तव्य—धर्म की मर्यादा तोड़िए मत

परमात्मा ने मनुष्य को अन्य प्राणियों की अपेक्षा विशेष बुद्धि-शक्ति दी है। इस संसार में जितनी भी महत्त्वपूर्ण शक्तियाँ हैं, उनमें बुद्धि-शक्ति ही सर्वोपरि है। मानव जाति की अब तक की इतनी उन्नति के पीछे उसकी बौद्धिक विशेषता का चमत्कार ही सन्निहित है।

इतनी बड़ी शक्ति देकर मनुष्य को परमात्मा ने कुछ उत्तरदायित्वों में भी बाँधा है, ताकि दी हुई शक्ति का दुरुपयोग न हो। इन उत्तरदायित्वों का नाम है—कर्तव्य-धर्म।

नियंत्रण की आवश्यकता

रेलगाड़ी के इंजिन में विशेष शक्ति होती है, यह अपने मार्ग से भटक पड़े तो अनर्थ उत्पन्न कर सकता है। इसलिए जमीन पर दो पटरी बिछा दी गई हैं और इंजिन को उसी पर चलते रहने की व्यवस्था बनाई गई है। बिजली में बहुत शक्ति रहती है, वह शक्ति इधर-उधर न बिखर पड़े इसलिए उसका नियंत्रण रखना आवश्यक है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह प्रबंध किया गया है कि बिजली तार में ही होकर प्रवाहित हो और वह तार भी ऊपर से ढका रहे। नहर में पानी की तेज धारा बहती है। उस पानी को नियंत्रण में न रखा जाये तो उससे गाँव के गाँव डूब सकते हैं। इस खतरे की सुरक्षा के लिए नहर की दोनों पटरियाँ काफी चौड़ी और काफी मजबूत बनाई जाती हैं। हर शक्तिशाली तत्त्व पर नियंत्रण आवश्यक होता है। अनियंत्रित रहने देने पर तो शक्तिशाली वस्तुएँ अनर्थ ही पैदा कर सकती हैं। मनुष्य को यदि परमात्मा ने नियंत्रित रखा होता, उस पर धर्म-कर्तव्यों का उत्तरदायित्व न रखा होता तो निश्चय ही मानव प्राणी इस सृष्टि का सबसे भयंकर, सबसे अनर्थकारी प्राणी सिद्ध हुआ होता।

अशक्त या स्वल्प शक्ति वाले पदार्थ या जीव अनियंत्रित रह सकते हैं, क्योंकि उनके द्वारा बहुत थोड़ी हानि की संभावना रहती है। फिर जिनकी वे हानि कर सकते हैं, उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आवश्यक शक्ति मिली होती है। इसलिए उस स्वच्छंदता में नियंत्रण और संतुलन का एक नियम काम करता रहता है। कीड़े-मकोड़े, मक्खी-मच्छर, कुत्ता-बिल्ली प्रभृति छोटे जीवों पर कोई बंधन नहीं रहते पर बैल, घोड़ा, ऊँट, हाथी आदि बड़े जानवरों को नाक की रस्सी (नाथ), लगाम, नकेल, अंकुश आदि के आधार पर नियंत्रण में रखा जाता है, यदि यह प्रतिबंध न हो तो वह शक्तिशाली जानवर लाभकारक सिद्ध होने की अपेक्षा हानि ही उत्पन्न करेंगे।

उच्छृंखलता के दुष्परिणाम

अनियंत्रित मनुष्य कितना घातक हो सकता है, इसकी कल्पना मात्र से सिहरन होती है। जिन असुरों, दानवों, दस्युओं, दुरात्माओं के कुकृत्यों से मानव सभ्यता कलंकित होती रही है, वे शक्ल-सूरत से तो मनुष्य ही थे, पर उन्होंने स्वेच्छाचार अपनाया, मर्यादाओं को तोड़ा, न धर्म का विचार किया न कर्तव्य का। शक्तियों के मद में जो कुछ उन्हें सूझा, जिसमें लाभ दिखा वही करते रहे, फलस्वरूप उनका जीवन सब प्रकार घृणित और निकृष्ट बना। उनके द्वारा असंख्यों का उत्पीड़न हुआ और समाज की शांति व्यवस्था में भारी व्यवधान उत्पन्न होता रहा। असुरता का अर्थ ही उच्छृंखलता है।

मर्यादाओं का उल्लंघन करने की घटनाएँ, दुर्घटना कहलाती हैं और उनके फलस्वरूप सर्वत्र विक्षोभ ही उत्पन्न होता है। सूर्य, चंद्रमा, ग्रह, नक्षत्र, पृथ्वी सभी अपनी नियत कक्षा और धुरी पर घूमते हैं, एक-दूसरे के साथ आकर्षण शक्ति में बँधे रहते हैं और एक नियत व्यवस्था के अनुरूप अपना कार्यक्रम जारी रखते हैं। यदि वे नियत नियंत्रण को तोड़कर स्वेच्छा बरतने की चेष्टा करें तो उसका परिणाम प्रलय ही हो सकता है। यह ग्रह मार्ग में भटक जाएँगे और एक-दूसरे से टकराकर विनाश की प्रक्रिया उत्पन्न कर देंगे। मनुष्य भी जब अपने कर्तव्य मार्ग से भटकता है तो अपना ही नहीं दूसरे अनेकों का भी नाश करता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मार्गदर्शक अंतःचेतना

परमात्मा ने हर मनुष्य की अंतरात्मा में एक मार्गदर्शक चेतना की प्रतिष्ठा की है, जो उसे उचित कर्म करने की प्रेरणा एवं अनुचित करने पर भर्त्सना करती रहती है। कर्तव्य पालन के कार्य धर्म या पुण्य कहलाते हैं, उनके करते ही तत्क्षण करने वाले को प्रसन्नता एवं शांति का अनुभव होता है। इसके विपरीत यदि स्वेच्छाचार बरता गया है, धर्म-मर्यादाओं को तोड़ा गया है, स्वार्थ के लिए अनीति का आचरण किया गया है, तो अंतरात्मा में लज्जा, संकोच, पश्चात्ताप, भय और ग्लानि का भाव उत्पन्न होगा। भीतर-ही-भीतर अशांति रहेगी और ऐसा लगेगा मानो अपना अंतरात्मा ही अपने को धिक्कार रहा है। इस आत्म प्रतारणा की पीड़ा को भुलाने के लिए अपराधी प्रवृत्ति के लोग नशेबाजी का सहारा लेते हैं। फिर भी चैन कहाँ पाप-वृत्तियाँ जलती हुई अग्नि की तरह हैं जो पहले वहीं जलन पैदा करती है जहाँ उसे स्थान मिलता है।

शरीर में क्षय, उपदंश, दमा, गठिया, कुष्ठ, लकवा आदि रोग हो जाने पर स्वास्थ्य नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। अशांति और बेचैनी बनी रहती है। रुग्ण शरीर को लेकर मनुष्य कुछ कर नहीं पाता, घर वाले परेशान होते हैं, आर्थिक स्थिति बिगड़ती है और यदि रोग की स्थिति सुधरे नहीं तो जीवन भार रूप हो जाता है। शरीर की तरह ही मन में भी कई रोग उत्पन्न होते हैं और वे सारे मानसिक संस्थान की स्वस्थता को नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं। आत्म प्रतारणा सबसे बड़ी मानसिक व्याधि है। जिसका मन अपने दुष्कर्मों के लिए अपने आपको धिक्कारता रहेगा, वह कभी आंतरिक दृष्टि से सशक्त न रह सकेगा। उसे अनेक मानसिक दोष-दुर्गुण घेरेंगे और धीरे-धीरे अनेक मनोविकारों से ग्रस्त होता जायेगा।

अनिद्रा, दुःस्वप्न, चिड़चिड़ापन, आवेश, उत्तेजना, क्रोध, चिंता, भय, ईर्ष्या, आशंका, संशय, अविश्वास, आलस्य, निराशा आदि कितने ही मानसिक रोग आत्म प्रतारणा की व्यथा से पीड़ित मनुष्य को लग जाते हैं। पाप-कर्मों के लिए अपना अंतरात्मा जिसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धिक्कारता और प्रताडित करता रहता है, वह मनुष्य सोते-जागते कभी चैन नहीं पा सकता। दमा और दर्द के रोगों की भाँति पापी को भी न रात में न दिन में कभी चैन मिलता है। भीतर ही भीतर अपने आप ही अपनी शांति को कुतरता रहता है।

आत्म प्रतारणा और अशांति

मर्यादाओं का उल्लंघन करके लोग तात्कालिक थोड़ा लाभ उठाते देखे जाते हैं। दूरगामी परिणामों को न सोचकर लोग तुरंत के लाभ को देखते हैं। बेईमानी से धन कमाने, दंभ से अहंकार बढ़ाने और अनुपयुक्त भोगों के भोगने से जो क्षणिक सुख मिलता है, वह परिणाम में भारी विपत्ति बनकर सामने आता है। मानसिक स्वास्थ्य को नष्ट कर डालने और आध्यात्मिक महत्ता एवं विशेषताओं को समाप्त करने में सबसे बड़ा कारण आत्म प्रतारणा है। ओले पड़ने से जिस प्रकार खेती की फसल नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार आत्म-प्रतारणा की चोटें पड़ते रहने से मन और अंतःकरण के सभी श्रेष्ठ तत्त्व नष्ट हो जाते हैं और ऐसा मनुष्य प्रेत-पिशाचों जैसी श्मशान मनोभूमि लेकर निरंतर विक्षुब्ध विचरता रहता है।

धर्म-कर्तव्यों की मर्यादा को तोड़ने वाले उच्छृंखल, कुमार्गगामी मनुष्य की गतिविधियों को रोकने के लिए उन्हें दंड देने के लिए समाज और शासन की ओर से जो प्रतिरोधात्मक व्यवस्था हुई है, उससे सर्वथा बचे रहना संभव नहीं। धूर्तता के बल पर आज कितने ही अपराधी प्रवृत्ति के लोग सामाजिक भर्त्सना से और कानूनी दंड से बच निकलने में सफल होते रहते हैं, पर यही चाल सदा सफल होती रहेगी ऐसी बात नहीं है। असत्य का आवरण अंततः फटता ही है और अनीति अपनाने वाले के सामने न सही पीछे उसकी निंदा होती ही है। जनमानस में व्याप्त घृणा का सूक्ष्म प्रभाव उस मनुष्य पर अदृश्य रूप से पड़ता है, जिससे अहितकर परिणाम ही सामने आते हैं। राजदंड से बचे रहने के लिए ऐसे लोग रिश्वत में बहुत खर्च करते हैं, निरंतर डरे और दबे रहते हैं, उनका कोई सच्चा मित्र नहीं रहता। जो लोग उनसे लाभ उठाते हैं, वे भी भीतर-ही-भीतर घृणा करते हैं और समय आने पर शत्रु बन जाते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं। जिनका आत्मा धिक्कारेगा उसके लिए देर-सबेर में सभी कोई धिक्कारने वाले बन जायेंगे। ऐसी धिक्कार एकत्रित करके यदि मनुष्य जीवित रहा तो उसका जीवन न जीने के बराबर है।

कर्तव्य समझें, उत्तरदायित्व निबाहें

नियंत्रण में रहना आवश्यक है। मनुष्य के लिए यही उचित है कि वह ईश्वरीय मर्यादाओं का पालन करे। अपने उत्तरदायित्वों को समझे और कर्तव्यों को निबाहे। नीति, सदाचार और धर्म का पालन करते हुए सीमित लाभ में संतोष करना पड़ सकता है, गरीबी और सादगी का जीवन बिताना पड़ सकता है, पर उसमें चैन अधिक है। अनीति अपनाकर अधिक धन एकत्रित कर लेना संभव है, पर ऐसा धन अपने साथ इतने उपद्रव लेकर साथ आता है कि उनसे निपटना भारी त्रासदायक सिद्ध होता है। दंभ और अहंकार का प्रदर्शन करके, लोगों के ऊपर जो रौब जमाया जाता है, उससे आतंक और कौतूहल हो सकता है, पर श्रद्धा और प्रतिष्ठा का दर्शन भी दुर्लभ रहेगा। विलासिता और वासना का अनुपयुक्त भोग भोगने वाला अपना शारीरिक, मानसिक और सामाजिक संतुलन नष्ट करके खोखला ही बनता जाता है। परलोक और पुनर्जन्म को अंधकारमय बनाकर, आत्मा को असंतुष्ट और परमात्मा को अप्रसन्न रखकर क्षणिक सुखों के लिए अनीति का मार्ग अपनाना किसी भी दृष्टि से दूरदर्शिता नहीं कहा जा सकता।

बुद्धिमत्ता इसी में है कि हम धर्म का, कर्तव्य पालन का महत्त्व समझें, सदाचार की मर्यादाओं का उल्लंघन न करें। स्वयं शांतिपूर्वक जियें और दूसरों को सुखपूर्वक जीने दें। यह सब नियंत्रण की नीति को अपनाने से ही संभव हो सकता है। कर्तव्य और धर्म का अंकुश परमात्मा ने हमारे ऊपर इसीलिए रखा है कि सन्मार्ग से भटके नहीं। इन नियंत्रणों को तोड़ने की चेष्टा करना अपने और दूसरों के लिए महती विपत्तियों को आमंत्रित करने की मूर्खता करना ही गिना जायेगा।

❐❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफलता ही नहीं—असफलता भी

कार्यों का परिणाम मिलता है, यह एक ध्रुव सत्य है। कोई भी क्रिया-प्रतिक्रिया से रहित नहीं है। जो कुछ किया जाता है, उसका प्रतिफल भी अवश्य होता है; पर यह प्रतिफल कब, कितनी मात्रा में, कैसा होगा ? उसका रूप ठीक तरह निश्चित नहीं किया जा सकता। यह बातें परिस्थितियों पर भी निर्भर रहती हैं। साइकिल चलाने में कितनी देर में कितनी दूर पहुँच जाएँगे, उसका एक उत्तर नहीं हो सकता, क्योंकि साथ में और भी कितनी ही बातों से इसका उत्तर संबंधित है। सड़क खराब है या अच्छी ? हवा सामने की है या पीछे की ? चलाने वाले का स्वास्थ्य कैसा है ? साइकिल अच्छी हालत में है या खराब हालत में ? इन बातों की अनुकूलता-प्रतिकूलता जानकर ही यह अनुमान किया जा सकता है कि यात्रा कितनी देर में पूरी होगी ?

प्रयत्न और परिस्थितियाँ

हम जो सफलता चाहते हैं, जिसके लिए प्रयत्नशील हैं वह कामना कब तक पूरी हो जायेगी, इसका उत्तर सोचने से पूर्व अन्य परिस्थितियों को भुलाया नहीं जा सकता। अपना स्वभाव, सूझ-बूझ, श्रमशीलता, योग्यता, दूसरों का सहयोग, सामाजिक परिस्थितियाँ, साधनों का अच्छा-बुरा होना, सिर पर लदे हुए तात्कालिक उत्तरदायित्व, प्रगति की गुंजायश, स्वास्थ्य आदि अनेक बातों से सफलता संबंधित रहती है और सब बातें सदा अपने अनुकूल ही नहीं रहती, इसलिए केवल इसी आधार पर सफलता की आशा नहीं की जा सकती कि हमने प्रयत्न पूरा किया तो सफलता भी निश्चित रूप से नियत समय पर मिल ही जानी चाहिए।

एक विद्यार्थी बहुत परिश्रमी और ठीक प्रकार पढ़ने-लिखने वाला है और विद्याध्ययन में अपनी ओर से कुछ त्रुटि नहीं रहने देता, पर परिस्थितियाँ यदि उसके प्रतिकूल रहती हैं तो परीक्षाफल संदिग्ध हो जाता है। स्वास्थ्य का यकायक बिगड़ जाना, घर में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कोई आघात लगाने वाली शोक-संताप भरी दुर्घटना हो जाना, किसी कारण मन का खिन्न या क्षुभित रहना, अध्यापक का सुशिक्षित न होना, समय पर पुस्तक का न मिल सकना, बुरे साथियों द्वारा पढ़ाई के समय ध्यान बँटाने वाला उच्छृंखल वातावरण बने रहना, घर से विद्यालय बहुत दूर होने पर चलते-चलते थक जाना, प्रश्न-पत्र में अप्रत्याशित विषयों का आ जाना, परीक्षक की असावधानी या कठोरता, परीक्षा काल में कोई आकस्मिक उद्वेग आदि कितने ही कारण ऐसे हो सकते हैं, जिनसे परिश्रमी और ठीक तरह पढ़ने वाले विद्यार्थी को भी असफलता का मुँह देखना पड़े।

इसी प्रकार सफलता के ऐसे कारण भी हो सकते हैं, जिनके कारण कम परिश्रम करने वाला छात्र भी उत्तीर्ण हो जाए। सुशिक्षित अध्यापक, प्रसन्नतादायक वातावरण, अच्छे साथी, आसान प्रश्न-पत्र, उदार परीक्षक, सामयिक सूझ-बूझ, परीक्षा समय का वातावरण, पर्चे आउट होना या नकल आदि का अनैतिक लाभ आदि कितने ही कारण ऐसे हो सकते हैं, जिनके कारण ऐसे विद्यार्थी अच्छी श्रेणी में उत्तीर्ण हों, जिनके श्रम को देखते हुए असफलता की ही आशा की जाती थी।

श्रम का सत्परिणाम

यों श्रम का सत्परिणाम एक सुनिश्चित तथ्य है। मेहनत कभी भी बेकार नहीं जाती। उसका सुफल मिलता ही है। श्रमशील की योग्यता, प्रतिभा, क्षमता एवं सूझ-बूझ निरंतर बढ़ती ही जाती है और उसका लाभ प्रकारांतर से मिलता ही है। इसी प्रकार आलसी को कोई आकस्मिक सफलता मिल भी जाये तो उससे तात्कालिक प्रसन्नता प्राप्त की जा सकती है, पर उन विशेषताओं से वंचित ही रहना पड़ेगा, जो कठोर श्रम और गहन अध्यवसाय के कारण अपने को प्राप्त हो सकती थीं। आजकल अनीति का बोलबाला है। अनैतिक उपायों को काम में लाकर सफलता प्राप्त कर लेते हैं और नीति तथा मर्यादाओं का पालन करने वालों को उनके मुकाबले में पीछे रहना पड़ता है। ऐसी दशा में कई लोग जल्दी सफलता प्राप्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करने के लिए अनीति का मार्ग अपनाते हैं, पर वहाँ भी अनिश्चितता। हर चोर, लखपती कहाँ बन पाता है ? उनमें से भी कितनों को ही हाथ-पैर तुड़वा बैठने या जेल में चक्की पीसते-पीसते मरते रहने का दुर्भाग्य भुगतना पड़ता है। इसलिए यह भी नहीं कहा जा सकता कि बुराई पर उतारू हो जाने से सफलता अवश्य ही, थोड़े दिन में ही मिल जाएगी।

संसार की नियत विधि-व्यवस्था

यदि श्रम का सत्परिणाम सुनिश्चित न होता तो कोई क्यों श्रमशीलता का कष्टसाध्य मार्ग अपनाता ? कृषि, व्यापार, उद्योग, शिल्प, शिक्षा आदि में करोड़ों आदमी निरंतर पूर्ण तत्परता के साथ लगे रहते हैं और प्रतिफल भी उनको मिलता ही है। किसान खेती से ही तो गुजारा करते हैं, कारखानों को लाभ होता ही है। विद्या प्राप्त करने पर अच्छी जीविका मिलती ही है। यदि ऐसा न होता तो सभी लोग अनिश्चितता अनुभव करते और किसी भी कार्य पद्धति पर लोगों का मन न जमता। पर ऐसा है नहीं। यह सारा संसार एक नियत विधि-व्यवस्था पर चल रहा है। पुरुषार्थी को विजय-लक्ष्मी वरण करती है और अकर्मण्य के पल्ले दीनता, दरिद्रता बँधी रहती है। इस विधान पर विश्वास करके, प्रत्येक व्यक्ति कार्य-संलग्न हो रहा है और कष्ट-साध्य लगते हुए भी प्रयत्न में संलग्न रहता है।

इतना होते हुए भी अपवादों की कमी नहीं रहती, पुरुषार्थियों को असफलता और आलसियों को आकस्मिक लाभ की घटनाएँ भी घटित होती रहती हैं। यद्यपि ऐसा कम और कभी-कभी ही होता है, पर होता अवश्य है। संख्या में थोड़ी रहने के कारण इन्हें अपवाद कहा जाता है। यह अपवाद भी कई बार मनुष्य के मन को विचलित और क्षुब्ध कर दिया करते हैं। जिन्हें ऐसी ही उलटी परिस्थितियों से पाला पड़ा है, वे पुरुषार्थ की व्यर्थता और भाग्य के सर्वोपरि होने की बात सोचने लगते हैं। कई बार तो ऐसे लोग हतोत्साह और निराश होकर ऐसा भी सोचने लगते हैं कि—"अपने बलबूते कुछ बनने वाला नहीं है, जो कुछ होना होगा भाग्य से ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होगा, जब दिन फिरेंगे तभी कुछ लाभ होगा। हमारा हाथ-पैर पीटना बेकार है। तकदीर के आगे बेचारी तदबीर क्या कर सकती है ?''

भाग्य और पुरुषार्थ

ऐसा सोचना न तो उचित है और न आवश्यक। भाग्य भी पुरुषार्थ का ही साथ देता है। अकर्मण्य लोग आकस्मिक सुयोग किसी प्रकार प्राप्त कर लें, तो देर तक उसका लाभ नहीं उठा सकते। क्षमता पर ही स्थिरता अवलंबित है। अयोग्य व्यक्ति जब कार्य क्षेत्र में उतरते हैं, तो उन्हें खोटे सिक्के की तरह अलग फेंक दिया जाता है। आकस्मिक सौभाग्य किसी अयोग्य को मिल तो सकता है। पर वह देर तक उसके पास टिका नहीं रह सकता। जिसने श्रम करके जो कमाया है, वही उसका सदुपयोग भी कर सकता है। 'माल मुफ्त—दिल बेरहम' वाली कहावत के अनुसार अनायास प्राप्त हुई सफलताएँ देर तक नहीं ठहरतीं, वे किसी न किसी मार्ग में जल्दी ही विदा हो जाती हैं। अपव्यय की आदत उन्हें ही पड़ती है, जिन्हें बिना मेहनत की कमाई हाथ लगी है। फिजूलखर्ची और असावधानी बरतने से तो समुद्र का जल भी समाप्त हो सकता है। फिर छोटी-छोटी सफलताओं का टिके रहना तो संभव ही कैसे हो सकता है ?

हम अपवादों पर ध्यान न दें। स्थिर व्यवस्था और विधान के प्रति आस्था रखें। कर्म तत्परतापूर्वक करें, उसमें तनिक भी असावधानी न होने दें। पर सफलता के लिए उतावले न हों। अमुक समय तक, अमुक मात्रा में सफलता मिल ही जानी चाहिए, यह कोई निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता। परिस्थितियाँ और घटनाएँ उसमें विघ्न डाल सकती हैं और मंजिल तक पहुँचने में देर लग सकती है। बीच-बीच में कई अवसर असफलता के मिल सकते हैं। लंबा रास्ता लगातार चलते हुए कहाँ पार होता है ? बीच-बीच में रुकना भी तो पड़ता है। चलते रहने से मंजिल कटती है तो उसे प्रगति कह सकते हैं। पर निरंतर चलना, निरंतर प्रगति भी कहाँ संभव है ? कुछ देर रुकना और सुस्तानः भी तो पडता है। जितनी देर रुके उतनी देर यही सोचते रहना उचित नहीं कि इस समय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हमारा भाग्य साथ नहीं दे रहा है, प्रगति रुक रही है, सफलता नहीं मिल रही है। प्रगति की भाँति अवरोध भी प्रकृति का नियम है। दिन में काम करने के बाद रात को सोना भी तो पड़ता है।

अहंकार और असावधानी पर नियंत्रण

हमें प्रत्येक पग पर सफलता ही मिले—यह कोई आवश्यक बात नहीं। असफलता में जो आघात लगता है, उससे अधिक सावधानी बरतने और अधिक तत्परतापूर्वक श्रम करने की प्रेरणा मिलती है। भूल-सुधारने का मौका भी इन्हीं झटकों से मिलता है अन्यथा लगातार सफलता के मद में उन्मत्त मनुष्य को समस्याओं, अहंकार जनित असावधानी और अकर्मण्यता के मकड़े के जाल में फँसना पड़ सकता है।

लक्ष्य को सोच-विचार कर नियत करना चाहिए और फिर उस पर दृढ़तापूर्वक चलते रहना चाहिए। मनुष्य का धर्म कर्तव्य कर्म करते रहना है। इसे न करने पर वह "कर्तव्य घात" के पाप का भागी बनता है। इसलिए हर व्यक्ति को बिना एक क्षण भी गँवाये अपने जीवनोद्देश्य की प्राप्ति के लिए निर्धारित कर्तव्य पथ पर चलते रहना चाहिए। यह मान्यता सर्वथा सत्य है कि सत्कर्म का सत्परिणाम ही मिलता है। साथ ही यह भी मानकर चलना चाहिए कि हमारा हर कदम सफलता और प्रगति के लिए ही नहीं होता। कितने ही कारण इस संसार में ऐसे मौजूद रहते हैं, जो प्रगति को रोकते हैं और जितनी जल्दी हम चाहते हैं, उतनी जल्दी सफलता प्राप्त नहीं कर पाते। बाधाओं की मंजिलें पार करने में जो लोग अपने धैर्य और साहस का परिचय देते हैं, घबराते और असंतुलित नहीं होते, वे ही दृढ़ चरित्र और स्वस्थ मानस वाले कहला सकने के अधिकारी होते हैं। धैर्य और साहस ही तो मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता है। असफलता इसी विशेषता को परखने आया करती है और जो उसकी परीक्षा में उत्तीर्ण होता है, उसे इतना मनोबल देकर जाती है जिसके आधार पर उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँच सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रयत्न करें, पर विचलित न हों

हमें सफलता के लिए शक्ति भर प्रयत्न करना चाहिए। पर असफलता के लिए भी जी में गुंजायश रखनी चाहिए। प्रगति के पथ पर चलने वाले हर व्यक्ति को इस धूप-छाँह का सामना करना पड़ा है। हर कदम सफलता से ही भरा मिले ऐसी आशा केवल बाल-बुद्धि वालों को शोभा देती है, विवेकशीलों को नहीं। केवल सफलता की आशा करना और उसके न मिलने पर सिर धुनना अथवा निराश हो बैठना, ओछे, उथले और बचकाने स्वभाव का चिह्न है। जिंदगी जीने की विद्या का एक महत्त्वपूर्ण पाठ यह है कि हम न छोटी-मोटी सफलताओं से हर्षोन्मत्त हों और न असफलताओं को देखकर हिम्मत हारें। दिन और रात की भाँति असफलता का चक्र भी चलते ही रहने वाला है। एक-सी तरह की वस्तु सदा मिले—यह असंभव है। आशा हमें आरंभ से ही नहीं करनी चाहिए और असफलता के लिए भी अपने कार्यक्रम में उचित गुंजायश रखे रहना चाहिए और उसका भी वैसा स्वागत करना चाहिए जैसा सांयकालीन संध्या का करते हैं। प्रातःकाल की ऊषा भी उतनी ही सुंदर होती है, जितनी सायंकाल की संध्या। सफलताओं में, सुख-सुविधाओं की जैसी आशा केंद्रित रहती है वैसी ही आत्म-सुधार की, धीर-वीर बनाने की प्रेरणा असफलता में भी सन्निहित है। वस्तुतः ये दोनों आपस में सगी बहनें हैं, कुशल क्षेम पूछने और परस्पर मिलने अक्सर आया करती हैं। इनके प्रेमालाप में हम बाधक क्यों बनें ? अपनी कर्तव्य परायणता का आतिथ्य प्रस्तुत करते हुए इन दोनों का ही उचित स्वागत क्यों न किया करें ?

❐❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महत्त्वाकांक्षाएँ और असंतोष

आज अधिकाधिक सफलता जल्दी से जल्दी प्राप्त करने के लिए व्यक्ति लालायित है। यह लालसा इतनी अधिक है कि वह अपनी उचित मर्यादाओं से कहीं अधिक चाहता है, यह नहीं सोचता कि मेरी योग्यता, श्रमशीलता तथा सामर्थ्य की तुलना में जो कुछ मिला हुआ है, वह संतोषजनक है या नहीं ? हर व्यक्ति असंतुष्ट दिखाई पड़ता है। इसका कारण एक ही है कि वह जितना प्राप्त हो चुका है, हो रहा है उसे अपर्याप्त मानता है और अधिक वस्तुएँ प्राप्त करने के लिए लालायित है। जितनी आकांक्षा करता है, उसकी तुलना में उसे जितना कम मिला हुआ होता है, उतना ही वह दुःखी और असंतुष्ट रहता है। असंतोष एक प्रकार का दर्द है, जिससे मनुष्य को उसी प्रकार की बेचैनी बनी रहती है जैसे— आँख का दर्द, पेट का दर्द, कान का दर्द, दाढ़ का दर्द होने पर होती है। हम अपने चारों ओर ऐसे ही दर्दमंदों का समूह इकट्ठे हुआ देखते हैं।

असंतोष से अवनति

उन्नति की आकांक्षा एक बात है और असंतोष बिल्कुल दूसरी। उन्नतिशील व्यक्ति आशा, उत्साह, धैर्य और साहस को साथ लेकर प्रसन्न मुखमुद्रा और स्थिर चित्त के साथ आगे बढ़ते हैं। गहरे पानी में उतरते हुए हाथी जिस प्रकार अपना एक-एक कदम बहुत सँभाल-सँभाल कर रखता है और जहाँ गड्ढा दीखता है, वहाँ से तुरंत पैर पीछे हटा लेता है, उसी प्रकार प्रत्येक उन्नतिशील व्यक्ति सँभाल-सँभाल कर अपना प्रत्येक कदम आगे बढ़ाता है। स्वस्थ चित्त एवं उद्वेगरहित व्यक्ति ही वर्तमान कठिनाइयों का सही कारण ढूँढ़ सकने में समर्थ हो सकता है। उसी की सूझ-बूझ ठीक तरह काम करती है और वही कठिनाइयों एवं बाधाओं का निराकरण कर सकने में समर्थ होता है और वही प्रतिकूल परिस्थितियों में देर तक दृढ़तापूर्वक खड़ा रह सकता है। जिसमें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इतनी दृढ़ता न होगी वह अधीर व्यक्ति कभी किसी महत्त्वपूर्ण सफलता का अधिकारी न हो सकेगा।

उतावली और जल्दबाजी

उतावले और जल्दबाज, असंतुष्ट और उद्विग्न व्यक्ति एक प्रकार के 'अधपगले' कहे जा सकते हैं। वे जो कुछ चाहते हैं उसे तुरंत ही प्राप्त हो जाने की कल्पना किया करते हैं। यदि जरा भी देर लगती है तो अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं और प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक गुण मानसिक स्थिरता को खोकर असंतोषरूपी उस भारी विपत्ति को कंधे पर ओढ़ लेते हैं, जिसका भार लेकर उन्नति की दिशा में कोई आदमी देर तक नहीं चल सकता। असंतोष एक प्रकार का मानसिक बुखार है। जिस प्रकार बुखार का रोगी शारीरिक और मानसिक दोनों ही दृष्टियों से अशक्त हो जाता है, खड़े होते ही उसके पैर लड़खड़ा जाते हैं, कुछ ही देर पढ़ने, बोलने या सोचने से सिर दर्द करने लगता है, उसी प्रकार असंतोष से ग्रसित मानसिक रोगी भी कुछ कर-धर नहीं सकता। उसे कुढ़न ही हर घड़ी घेरे रहती है। क्षुब्ध और उत्तेजित मन से वह अंट-शंट बातें ही सोच सकता है। दूसरों पर दोषारोपण करके अपने द्वेष और क्रोध को बढ़ाते रहना ही उससे बन पड़ता है। अपनी मानसिक स्थिति जिन्होंने इस प्रकार की असंतुलित बना ली है वे व्यक्ति अपने उद्वेग की उलझन में उलझे पड़े रहते हैं। उनकी सारी शक्तियाँ कुढ़न, द्वेष, असंतोष, छिद्रान्वेषण, दोषारोपण, प्रतिशोध, निंदा, ईर्ष्या आदि में ही नष्ट होती रहती हैं। प्रगति के पथ पर बढ़ने के लिए जिन सद्गुणों की आवश्यकता है, वह इन असंतुष्ट व्यक्तियों को तिलांजलि देकर, अपने आप पलायन कर जाते हैं और वह अभागा एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा दुर्भाग्य अपने सामने उपस्थित होते देखता रहता है।

तुच्छता से महत्ता की ओर

उन्नति की आकांक्षा एक बहुत ही उचित, स्वाभाविक एवं आध्यात्मिक मनोवृत्ति है। तुच्छता से आगे बढ़कर महत्ता को प्राप्त करना प्रत्येक मानव प्राणी का स्वाभाविक कर्तव्य है। जीवन की पूर्णता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए इस प्रकार की अभिलाषा का होना उचित भी है और आवश्यक एवं प्रशंसनीय भी। पर यह आकांक्षा तभी सफल हो सकती है जब धैर्य, साहस, विवेक और पुरुषार्थ का समुचित सम्मिश्रण उसके साथ हो। प्रसन्न मन और स्थिर चित्त रहना, इस मार्ग पर चलने वाले पथिक के लिए नितांत आवश्यक है। वैज्ञानिक शोध करने वाले शोधकर्ता जीवन भर किसी शोध में लगे रहते हैं और एक प्रकार से सफलता नहीं मिलती तो दूसरा-तीसरा मार्ग सोचते हैं, पर लगे उसी कार्य में रहते हैं। धैर्य में रत्ती भर भी कमी नहीं आने देते, असंतोष की एक रेखा भी उनके चेहरे पर नहीं होती। काम को काम समझकर वे करते रहने को ही अपने संतोष का आधार बनाए रहते हैं और वर्षों बीत जाने पर भी यदि सफलता न मिले तो खिन्नता की एक शिकन माथे पर नहीं पड़ने देते। यही स्थिति जिस किसी के मनःक्षेत्र की होगी केवल वही इस संसार में कोई महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकेगा, केवल वही कोई बड़ी सफलता प्राप्त कर सकेगा।

कुढ़न की ओछी आदत

असंतुष्ट व्यक्ति एक ओछा व्यक्ति है, जो प्रगति पथ पर बढ़ने की तैयारी में अपनी शक्ति को लगाने की अपेक्षा उसे कुढ़न में नष्ट करता रहता है। इस संसार की रचना कल्पवृक्ष के समान नहीं हुई है कि जो कुछ हम चाहें वह तुरंत ही मिल जाया करे। यह कर्मभूमि है। यहाँ हर किसी को अपना रास्ता आप बनाना पड़ता है, अपनी योग्यता और विशेषता का प्रमाण प्रस्तुत किये बिना कोई किसी महत्त्वपूर्ण स्थान पर नहीं पहुँच सकता। यहाँ हर किसी को परीक्षा की अग्नि में तपाया जाता है और जो इस कसौटी पर खरा उतरता है उसी को प्रामाणिक एवं विश्वस्त माना जाता है। ऐसे ही लोगों का दुनिया सहयोग करती है और उसे ही प्रगति के प्रवेश द्वार में घुसने की अनुमति प्रदान करती है। कुढ़न और असंतोष किसी भी व्यक्ति के कुपात्र होने का सबसे बड़ा प्रमाण है। कुपात्रों का, टूटे और गंदे बर्तनों का स्थान सदा कूड़े के ढेर में रहा है। हम भी यदि अपनी कुपात्रता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सिद्ध करेंगे तो सम्मान के स्थान पर नहीं पहुँचने दिये जाएँगे, कूड़े के ढेर में ही पड़े रहेंगे।

संतोष और उल्लास

इस संसार का यह नियम है कि हँसमुख, प्रसन्नचित्त, आशावादी, उत्साही और संतुष्ट व्यक्ति के पीछे-पीछे लोग फिरते हैं, क्योंकि हर व्यक्ति अपने जीवन में कुछ दुःख और चिंता छिपाये बैठा रहता है। वह अपना मन हल्का करने के लिए ऐसा सहारा ढूँढ़ता है, जहाँ उसके घावों को कुरेदा न जाए, मरहम लगे। मनोरंजन के लिए लोग इसीलिए अपना बहुत-सा समय और धन खर्च करते हैं। सिनेमा, खेल, तमाशे, मेले-ठेले, सैर, यात्रा आदि मनोरंजनों की आवश्यकता इसी दृष्टि से मानी जाती है। उनके दूसरे लाभ भी हो सकते हैं, पर प्रधान उद्देश्य यही रहता है। यही आवश्यकता लोग उस व्यक्ति से पूरी करना चाहते हैं, जो संतुष्ट और प्रसन्न दीखता है। खिले हुए गुलाब के चारों ओर भौंरे इसलिए मँड़राते रहते हैं, क्योंकि फूल अपने आप में सर्वांगपूर्ण, विकसित, प्रसन्न और सफल दिखाई देता है। सूखे, मुरझाए, कुचले हुए और सड़े-गले फूल पर भौंरा तो क्या कोई मक्खी भी नहीं बैठती, उसे उपेक्षा, उपहास और तिरस्कार के गर्त में फेंक दिया जाता है।

मुँह फुलाए, रूठे-बैठे रहने वाले और चिड़चिड़ाते-बड़बड़ाते रहने वाले नर-नारी अपने समीपवर्ती लोगों की सहानुभूति खो बैठते हैं। उनसे सब लोग डरने और कतराने लगते हैं। चेचक और हैजा के रोगी से सब कोई अपना बचाव करते हैं कि कहीं यह छूत हमें भी न लग जाए। असंतुष्ट और खिन्न मनुष्य से झूठी सहानुभूति कोई भले ही प्रकट कर दे, वस्तुतः मन ही मन उससे घृणा करते हैं और बचने की कोशिश करते हैं। कुढ़ने वाले व्यक्ति की कष्ट-कथा सुनकर कौन आदमी अपने दुःख को बढ़ाना चाहेगा ? यहाँ तो सबको मनोरंजन की चाह है—हँसोड़ और प्रसन्नमुख व्यक्ति की तलाश है। उसके समीप रहकर लोग अपना मनोरंजन करना चाहते हैं। मनहूस-सी शक्ल बनाये बैठे रहने वाले और दुःख-दुर्भाग्य का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रोना रोते रहने वाले लोगों के पास अपना मन क्षुब्ध करने के लिए भला कौन तैयार होगा ? संत और महापुरुषों की बात दूसरी है, वे दुःखियों के लिए अपना प्राण भी दे सकते हैं, पर सामान्य लोग तो उनसे बचने की ही कोशिश करेंगे ?

सद्गुणों का प्रतिफल

उन्नति कोई उपहार नहीं है, जो छत फाड़कर अनायास ही हमारे घर में बरस पड़े। उसके लिए मनुष्य को कठोर प्रयत्न करने पड़ते हैं, प्रतीक्षा करनी पड़ती है और एक मार्ग अवरुद्ध हो जाए तो दूसरा सोचना पड़ता है। गुण, योग्यता और क्षमता ही सफलता का मूल्य है, जिसमें जितनी क्षमता होगी उसे उतना लाभ मिलेगा। कभी-कभी इसके अपवाद भी हो सकते हैं पर आमतौर से होता यही है कि उत्कृष्टता को प्राथमिकता मिलती है। दूध को गरम करते ही उसका अच्छा अंश मलाई के रूप में ऊपर तैरने लगता है। जिन व्यक्तियों का व्यक्तित्व जितना सुव्यवस्थित होता है, उन्हें उतनी ही आसानी से, उतनी ही बड़ी महत्ता एवं सफलता उपलब्ध हो जाती है। खेलकूद की प्रतियोगिताओं में जो खिलाड़ी अधिक सामर्थ्यवान् होते हैं, वे ही बाजी जीतते और पुरस्कार पाते हैं। परीक्षा में अच्छे नंबर लाने वाले अपनी प्रतिभा का उचित परिणाम अनायास ही प्राप्त कर लेते हैं। यदि हम अपनी योग्यता बढ़ाने का प्रयत्न करें, गुण, कर्म, स्वभाव को सुव्यवस्थित बनाएँ तो असंतोष के कारणों का स्वयं ही समाधान होता चलेगा।

गरीबी धन की नहीं मन की

गरीबी दुनिया में वस्तुतः इतनी अधिक नहीं है जितनी कि दिखाई पड़ती है। मनुष्य प्रचुर धन का स्वामी बनने के, अनंत ऐश्वर्य का सुखोपभोग करने के सपने देखा करता है। अपने से बड़े लोगों के साथ अपनी तुलना करके खिन्न होता है कि मैं भी इतना ही बड़ा क्यों न हो जाऊँ ? बस, ईर्ष्या और तृष्णा की आग प्रचंड वेग से उसके मन में जलने लगती है। कपड़ों में लगी आग से जलता हुआ मनुष्य कोई और उपाय न देखकर कुँआ में कूद पड़ने को भी इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आशा से तैयार हो जाता है कि मेरी जलन मिट जाएगी। इसी प्रकार जिसका मन महत्त्वाकांक्षाओं की तृष्णा में बुरी तरह जल रहा है, उसके लिए कुकर्म के कुएँ में कूद पड़ना भी कुछ आश्चर्य की बात नहीं है।

मनुष्य अनेकों वस्तु चाहता है। अपने से बड़े और सुखी संपन्न स्थिति के लोगों को देखकर यह इच्छा उत्पन्न होती है कि हमारे पास भी इतना ही वैभव और ऐश्वर्य क्यों न हो ? इस प्रकार की तृष्णा ही असंतोष का कारण देखी जाती है। हमें चाहिए कि अपने से नीचे, गिरे हुए, दुःखी और गरीबों से अपनी तुलना करते हुए संतोष की साँस लें कि परमात्मा ने हमें अनेकों से कमजोर भले ही बनाया हो पर असंख्यों से ऊँचा भी रखा है। असंतोष के यदि दस कारण जीवन में होते हैं तो सौ कारण संतोष के भी होते हैं। जो कुछ संतोष के कारण हमें प्राप्त हैं, उन पर विचार करें और उनसे अपना चित्त प्रसन्न रखने का प्रयत्न करें तो दृष्टिकोण के बदलते ही मन की खिन्नता का प्रत्यावर्तन प्रसन्नता और उल्लास में हो जाता है। हर इच्छा किसी की भी पूरी नहीं हुई। सबको, जो कुछ है उसी पर सब्र करके अधिक प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते रहना पड़ता है। यही क्रम शांतिदायक है, इसी को अपनाकर हम संतोष के अधिकारी बन सकते हैं।

अमीरी नहीं महानता

महत्त्वाकांक्षा गुणों की होनी चाहिए। हम दूसरों की अपेक्षा अधिक विद्वान्, अधिक स्वस्थ, अधिक संयमी, अधिक सेवाभावी, अधिक सभ्य, अधिक सहिष्णु, अधिक धार्मिक बनें, यह प्रतिस्पर्धाएँ यदि चलने लगें तो व्यक्ति का पतन नहीं उत्थान ही होगा। तुच्छ कीट-पतंग की तरह निम्न श्रेणी का जीवन-यापन न करके, हम नर-रत्नों की श्रेणी में अपना नाम अंकित करें, महापुरुषों जैसे आदर्श उपस्थित करें। जीवन का लक्ष्य पूर्ण करके जीवन मुक्ति का आनंद प्राप्त करें—ऐसी महत्त्वाकांक्षाएँ यदि मन में जाग्रत् रहें और उनके लिए हम प्रयत्न करें, तो उसका प्रतिफल ऐसा हो सकता है जिसके आधार पर सभ्य-समाज की रचना और युग-निर्माण का उद्देश्य पूर्ण हो सके।

❐❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐषणाएँ नहीं महानता अभीष्ट

धन के संबंध में असंतोष लोभ बनकर फूटता है। वासना का असंतोष काम कहलाता है। स्वामित्व का असंतोष मोह कहलाता है। अहंकार की पूर्ति में कहीं त्रुटि रह जाने का असंतोष क्रोध कहलाता है। मानसिक शत्रुओं का, पाप एवं दुष्कर्मों का सारा परिवार असंतोष से ही अपना शोषण पाता है। परिवारों का मधुर मेल-मिलाप इसी के कारण नष्ट होता है। दांपत्य जीवन की प्रेम प्रतीति में पलीता लगाने वाला यही दुष्ट है। शांति और प्रेम के साथ मधुर जीवनयापन करते हुए आनंद की सरिता बहाने और अपना तथा दूसरों का कल्याण करने में संलग्न होने की अपेक्षा वैभव इकट्ठा करने की हविश में देश-विदेश मारे-मारे फिरने और प्रेत- पलीत की तरह निरंतर व्यस्त-व्यथित रहने में यह असंतोष ही एकमात्र कारण हो सकता है।

असंतोष को प्रगति का चिह्न मानना सर्वथा भूल है। उससे आकांक्षाओं को उत्तेजना तो अवश्य मिलती है पर उनकी पूर्ति कदापि नहीं हो सकती। कोई महत्त्वपूर्ण सफलता बिना व्यक्तित्व के आवश्यक गुणों में अभिवृद्धि किए कदापि संभव नहीं हो सकती और इन गुणों का बढ़ाना शांतचित्त, आत्म-निरीक्षण, आवश्यक धैर्य और निरंतर अभ्यास से ही संभव है। इन्हें बढ़ा सकना उद्विग्न असंतोषी के लिए किस प्रकार शक्य हो सकता है ? वह बावला तो आज ही, अभी ही, सब कुछ पाने की तृष्णा में सब पर हावी होने का उपक्रम बनाए रहता है। उसे इतनी फुरसत कहाँ है, जो आत्म-निरीक्षण करे और अपने अंदर उन महापुरुषों जैसे गुणों को बढ़ाये जिनके आधार पर महान् कार्यों की पूर्ति हुआ करती है और मनुष्य उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँचा करता है।

तीन ऐषणाएँ

असंतोष का असुर तीन रूप बनाकर मायावी दुष्टता के साथ हमारे सामने प्रस्तुत होता रहता है और प्रेम तथा आनंद के साथ जीवनयापन कर सकने वाली सहनशीलता में पलीता लगाता रहता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(१) वित्तेषणा (२) पुत्रेषणा (३) लोकेषणा—असंतोष के यही तीन स्वरूप हैं। धन, वासना और अहंता की तृष्णा जब अमर्यादित हो उठती है तो उसे ऐषणा कहा जाता है। उचित प्रयत्न के साथ उचित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उचित रीति से धन कमाया जाना उचित है। यह प्रशंसनीय और आवश्यक भी है, क्योंकि इसके बिना अपने शरीर और परिवार का निर्वाह नहीं हो सकता। जिन्होंने गृहस्थ धर्म अपना लिया है और विवाहित जीवनयापन कर रहे हैं उनका उचित मर्यादा के अंतर्गत संतानोत्पादन की दृष्टि रखकर कामोपभोग भी उचित है। अपने पीछे अपने स्मारक के रूप में समाज के श्रेष्ठ नागरिकों को श्रद्धांजलि अर्पित करके जाना ही संतानोत्पादन का उद्देश्य है। काम सेवन उसका एक विनोद भरा शुभारंभ मात्र है।

हम शुभ कार्य करके दूसरों की दृष्टि में अपना सम्मान स्थिर करें और अपने आत्म-गौरव के अनुरूप सेवा और सदाचार भरा उत्कृष्ट जीवनयापन करते हुए श्रद्धा के भाजन बनें, यह यशस्वी होने की आकांक्षा भी उचित है, क्योंकि इसी से प्रेरित होकर मनुष्य कष्टसाध्य शुभकर्मों को करने के लिए तैयार होता है। पर यह तीनों ही आवश्यकताएँ पूर्ण कर सकना असंतोष और अधीरता से संभव नहीं। इससे तो मनुष्य मर्यादाएँ छोड़कर उच्छृंखलतापूर्वक अनुचित मार्ग अपना लेता है।

वित्तेषणा की डाकिन—औचित्य और मर्यादा

धन, वासना और अहंता की उचित और व्यवस्थित प्रगति तो विवेक एवं दूरदर्शिता के आधार पर ही संभव हो सकती है। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम आज की स्थिति पर संतोष अनुभव करते हुए मन को प्रसन्नता से, आशा से, उत्साह से परिपूर्ण रखें, जिससे प्रगति का कठिन मार्ग पार करते हुए हम दिन-दिन ऊँचे उठ सकने की स्थिति को प्राप्त कर सकें। असंतुष्ट व्यक्ति एक प्रकार का उन्मत्त होता है, जो स्वयं परेशान रहता है और दूसरों को परेशान करता है। परिस्थितियों के साथ समझौता करके ही इस संसार में सबको काम चलाना पड़ता है। परिस्थितियों को अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुरूप ढालने में लगा रहना चाहिए पर साथ ही अपने को भी परिस्थितियों के अनुरूप ढालना चाहिए।

हमें तीनों ऐषणाओं से बचते हुए आनंद, उल्लास, प्रेम और संतोष का नैतिक जीवन व्यतीत करने की ही इच्छा करनी चाहिए। बड़ा आदमी बनने की महत्त्वाकांक्षा वाले व्यक्ति इस संसार में अत्यधिक हानिकारक सिद्ध होते हैं। आततायी उपद्रवकारियों की तरह वे दूसरों को पददलित करते हुए, उनकी लाशों पर ही चढ़कर बड़े बन पाते हैं। इसलिए भौतिक विभूतियों की तृष्णा को अध्यात्मवाद की दृष्टि से सदा ही हेय माना जाता रहा है। उसे रोकने और नियंत्रित रखने के लिए पग-पग पर शिक्षण दिया जाता रहा है। समाज का संतुलन महत्त्वाकांक्षी लोग ही बिगाड़ते हैं, इसलिए इन मानसिक रोगियों से ऐसे ही सतर्क रहना चाहिए जैसे ईंट मारने वाले पागलों से बचा जाता है।

धन की मृग मरीचिका

आज धन के लिए हर व्यक्ति प्यासा-सा फिरता है। धन, अधिक धन और अधिक धन—यह एक ही पुकार हर दिल और दिमाग में से उठती सुनाई देती है। धर्म-ध्वजी संत-महंतों से लेकर जेबकट और चोर-डाकुओं तक हर वर्ग के लोग धन की आकांक्षा से अपने-अपने चरखे चलाते रहते हैं। विचारणीय बात है कि क्या धन की उतनी ही आवश्यकता है, क्या गरीबी इस सीमा तक पहुँच गई है कि मनुष्य को निरंतर धन के लिए उद्विग्न हुए बिना काम न चले ? बात ऐसी बिल्कुल भी नहीं है। भगवान् ने इतनी वस्तुएँ और साधन सामग्री इस धरती पर पहले से ही पैदा कर रखी है कि मिल-बाँटकर मनुष्य अपना गुजारा कर सकें और शांति तथा आनंद के साथ हिल-मिलकर प्रेमपूर्वक जीवनयापन करते हुए लक्ष्य प्राप्ति के लिए अग्रसर हो सकें!

रोटी, कपड़ा और मकान मनुष्य जीवन की प्रधान भौतिक आवश्यकताएँ इतनी छोटी और थोड़ी हैं कि बड़ी आसानी से थोड़े ही समय के उचित श्रम में उन्हें पूरा कर सकते हैं। गरीब कहे जाने वाले लोग भी इन तीनों आवश्यकताओं को पूरा कर लेते हैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और संतोषपूर्वक हँसते-खेलते जीवन व्यतीत करते रहते हैं। इसके विपरीत वे लोग हैं, जिनके यहाँ सब कुछ होते हुए भी दिन-रात धन की हाय-हाय लगी रहती है। अशांति, बेचैनी, चिंता और परेशानी से रहित जिनका एक क्षण भी व्यतीत नहीं होता। ऐसे लोग वस्तुतः बड़े दयनीय हैं। बेचारे न जीवन का मूल्य समझ सके और न उसका लाभ प्राप्त कर सके। इन अभागों की दुर्दशा पर केवल दुःख के आँसू ही बहाए जा सकते हैं। असंतोष की आग में जलते रहने वाले यह अमीर वस्तुतः विशाल अस्पताल के कीमती पलंगों पर पड़े हुए वह रोगी हैं जो आग से झुलसे हुए हैं, जिनके बाहर और भीतर आग ही जलने की पीड़ा दे रही है। कीमती इमारत एवं बहुमूल्य पलंग का—क्या सुख इन बेचारों को मिल सकेगा ?

सादगी का मितव्ययी जीवन

भारत गरीब देश है, यहाँ पर आदमी की औसत आमदनी बहुत थोड़ी है। हमारा उत्पादन कम है। योग्यता और क्षमता भी स्वल्प है। ऐसी दशा में राष्ट्रीय आय का स्वल्प होना स्वाभाविक है। इसलिए हममें से हर एक को यह प्रयत्न करना चाहिए कि उतना ही खर्च अपने ऊपर करें जितना कि मध्यम वर्ग के भारतीय नागरिकों को अपने ऊपर करना उचित है। यदि कुछ लोग अपने ऊपर अधिक खर्च करेंगे, अधिक जमा करने की सोचेंगे तो उनके कार्यों से दूसरों को उतना ही अभावग्रस्त रहना पड़ेगा। एक ऊँची मीनार खड़ी करने पर जमीन में उतना ही गहरा गड्ढा कहीं न कहीं करना पड़ता है। एक व्यक्ति धनी तभी हो सकता है जब दूसरे अनेकों के हिस्से की राष्ट्रीय आय का भाग अपने नीचे दबा लें। इस प्रवृत्ति के फलस्वरूप दूसरे अनेकों को अभावग्रस्त एवं गरीब रहने के लिए विवश होना पड़ता है। इसलिए संग्रह की, विलासिता की प्रवृत्ति को हेय माना गया है। अध्यात्मवाद के अपरिग्रह से लेकर भौतिकवादी साम्यवाद तक सभी न्यायसंगत दृष्टिकोण का निष्कर्ष एक ही है कि हर व्यक्ति को उतनी ही सुख-सुविधा प्राप्त रहे जितनी कि उस समाज के मध्यवर्गीय नागरिकों को प्राप्त होती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गरीब और अमीर के बीच का अंतर

वर्तमान अर्थतंत्र के कारण यदि किसी व्यक्ति की आमदनी अधिक होती है तो उसका कर्तव्य है कि उसे समाज को पुनः दान आदि के रूप में लौटा दें। हाथ में पाँच उँगलियाँ होती हैं, उनमें से कुछ छोटी, कुछ बड़ी भी हैं। योग्यता और पुरुषार्थ के आधार पर यह अंतर मनुष्य की सुख-सुविधाओं में भी रह सकता है, पर यह होना उतना ही चाहिए जितना कि उँगलियों की लंबाई में होता है। यह अनुपात दस-पाँच प्रतिशत से अधिक नहीं है। इससे अधिक अंतर यदि लोगों की आर्थिक स्थिति में रहेगा तो उससे समाज में अशांति ही उत्पन्न होगी। इससे ईर्ष्या और अनाचार का ही जन्म होगा। यह एक तथ्य है जिसे हम चाहे विवेक, उदारता और न्याय की दृष्टि से अपनाकर अपनी महानता का परिचय दे सकते हैं, अन्यथा आज नहीं तो कल बलपूर्वक करने के लिए विवश किया जाने लगेगा।

गरीब और अमीर के बीच इतना अंतर किसी भी प्रकार स्थिर नहीं रह सकता जितना कि आज देखा जाता है। संत विनोबा के भूदान आंदोलन से लेकर सरकार की नीति तक धीरे-धीरे सब ओर से यही प्रयत्न चल रहे हैं कि व्यक्ति अधिक संपन्न न रहने पाये। इस युगवाणी को हम विवेकपूर्वक सुन लें और अमीरी की महत्त्वाकांक्षाएँ छोड़कर मध्यवर्ती जीवनयापन करने की बात तक अपने को सीमित कर लें, तो हमारे असंतोष का एक बहुत बड़ा कारण अनायास ही समाप्त हो सकता है। गुजारे के लायक हम सब कमाते भी हैं। प्रयत्न करके इसे कुछ और भी बढ़ा सकते हैं। अमीरी के सपनों का नशा यदि हमारे मस्तिष्कों पर से उतर जाए तो स्वस्थ, सुविकसित एवं शांतिमय जीवनयापन करने के लिए हमें एक नई दिशा मिल सकती है।

फिजूलखर्ची से बचना ही चाहिए

हमारे खर्च दिन-दिन बढ़ते चले जा रहे हैं। विलासिता की बिल्कुल बेकार आदतों को हम दैनिक आवश्यकता मान बैठे हैं और खर्चे अंधाधुंध बढ़ाए चले जा रहे हैं। हर व्यक्ति अपने से अधिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अमीर की नकल करके, स्वयं भी अमीर कहलाने की मृग-तृष्णा में भटक रहा है। अमीरों के ठाट-बाट बनाने में गरीब लोग जब अपनी औकात और हैसियत का ध्यान छोड़ देते हैं, तब एक उपहासास्पद स्थिति पैदा हो जाती है। फैशन का भूत लोगों पर इसलिए सवार है कि वे कीमती पोशाक, जेवर-नगीने पहनकर, ठाट-बाट इकट्ठा करके बड़े और अमीर आदमी समझे जाने लगें। फैशनपरस्ती एक घटिया दर्जे का छिछोरापन है।

अमीरी की विडंबना बनाने में जो फिजूलखर्ची के उपकरण जुटाते हैं, उन्हें बाल बुद्धि ही कहा जा सकता है। आज तो विलासिता की सामग्री को भी आवश्यकता समझने की हमारी बुद्धि भ्रमित होने लगी है। सिनेमा, बीड़ी, मटरगश्ती, श्रृंगार, साधन, चाय-पानी, यार-दोस्त आदि महकमें में काफी खर्चीले बैठते हैं। कीमती कपड़े के कई-कई जोड़े रखने, जेवर आदि बनाने में ढेरों पैसा खर्च होता है। हाथ से काम न करके छोटे-छोटे कामों को स्वयं न करके पैसे देकर कराने में आलसी भी बनना पड़ता है और पैसा भी खर्च होता है। टूटी-फूटी चीजों की मरम्मत न कराके, उन्हें पूर्णरूपेण बेकार हुए बिना ही फेंक दिया जाता है। अव्यवस्थित रूप से पड़ी हुई चीजें समय से पूर्व ही नष्ट और बरबाद होती रहती हैं। खर्च में हाथ खुला रखने पर उचित आमदनी होने पर भी तंगी बनी रहती है। उधार की आदत फिजूलखर्ची को बहुत बढ़ा देती है। जब कभी, जो कुछ भी लेना हो नकद लेना चाहिए और उतना खर्च करना चाहिए जितनी आमदनी हो। उधार देना भी आज के अनैतिक युग में अपने पैसे को सड़क पर बखेर देने के समान है। लेकर वापस करने वाले कोई बिरले ही देखे जाते हैं। सामाजिक कुरीतियों में वाहवाही और लोकाचार की उपेक्षा करके ही पैसे की व्यर्थ बर्बादी को रोका जा सकता है। यह सूत्र है जिन पर विस्तारपूर्वक विचार करके हम मितव्ययी बन सकते हैं और आर्थिक तंगी के कारण उत्पन्न होने वाले असंतोष से बच सकते हैं। बुद्धिमानी पैसा कमाने में नहीं, उसके खर्च करने में है। कमाई तो कभी-कभी अनायास भी हो सकती है पर खर्च के संबंध में मनुष्य कितना सतर्क रहा है इससे उसकी बुद्धिमानी परखी जा सकती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सादगी ही श्रेष्ठ है

सादगी, मितव्ययता और सामान्य श्रेणी का जीवनयापन करने में ही मनुष्य का गौरव है। सज्जनता का यही परिधान है। समाज में जब तक यह प्रवृत्ति विकसित न होगी, हम अशांति और असभ्यता की ही ओर बढ़ते रहेंगे। कहते हैं कि जरूरतों से प्रेरित होकर मनुष्य दुष्कर्म करते हैं, फिर हम इसकी जड़ को ही क्यों न काटें ? अपनी जरूरतों को ही सीमित क्यों न करें, जिससे दुष्कर्म करने की आवश्यकता ही न पड़े। संतोषी को सबसे बड़ा सुखी माना गया है। वित्तेषणा पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए यदि हम सादगी को अपनी जीवन नीति बना लें और मितव्ययिता को अपनाकर, तृष्णा को निरर्थक अनुभव करने लगें, तो सचमुच अपना जीवन बड़ा सुखी हो सकता है। यदि स्वयं सुखी रहना और दूसरों को शांति से रहने देना हमें अभीष्ट हो, तो वित्तेषणा को अस्वाभाविक, अनैतिक, अवांछनीय एवं अनुपयुक्त मानना पड़ेगा। यह डायन जब तक हमारे पीछे पड़ी रहती है तब तक न चैन की साँस लेने का अवसर मिलता है और न दुष्प्रवृत्तियों से छुटकारे का कोई मार्ग रह जाता है। जिसे निरंतर धन की हाय लगी हुई है, वह सज्जनता और सदाचार का जीवन देर तक नहीं बिता सकता। अवसर आते ही उसका अनीति के मार्ग पर फिसल पड़ना निश्चित है। यह फिसलन ही असभ्यता है। सभ्य समाज की रचना के लिए वित्तेषणा को अपना प्रथम शत्रु मानते हुए सादगी, सीमितता और सज्जनता की बुद्धि उत्पन्न करनी चाहिए।

जीवनयापन के लिए थोड़े-से धन की, नियमित आजीविका की आवश्यकता पड़ती है। निर्वाह की अनेक आवश्यकताओं में से एक धन भी है। उसके लिए भी ध्यान देना एवं प्रयत्न करना आवश्यक है, पर यदि सब ओर से ध्यान हटाकर धन को ही एकमात्र लक्ष्य मान लिया जाये और उसी की बात दिन-रात सोचते रहा जाये, उसी के निमित्त पूरा जीवनक्रम लगाये रखा जाये तो यह बहुत ही अनुचित बात है। इसी को वित्तेषणा कहते हैं। साधन न रहकर, जब धन साध्य बन जाता है तो उस तृष्णा के वशीभूत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होकर मनुष्य बुरे से बुरे अनीतियुक्त काम करते हैं। गरीबी नहीं, तृष्णा दुष्कर्मों की जननी है। गरीब भीख माँग सकता है या पेट भरने लायक कोई छोटी-मोटी बुराई कर सकता है। उसमें इतनी अक्ल कहाँ होती है, जो बड़े-बड़े योजनाबद्ध प्लान बनाकर अनैतिक उपायों पर पर्दे डाल कर बहुत कुछ डकार जाये। यह कार्य सुशिक्षित, साधन-संपन्न और सामर्थ्यवान् लोगों का है।

अनीति की जननी तृष्णा

डाकू गरीब नहीं होते, गरीब बंदूक कहाँ से प्राप्त करेगा ? शरीर में इतना बल कहाँ से लायेगा ? रिश्वतखोरी, बेईमानी, ठगी के जो विशालकाय अनर्थ होते हैं, वे सब उच्च वर्ग के लोगों द्वारा संपन्न किए जाते हैं। उसके मूल में गरीबी नहीं, धन की तृष्णा होती है। निर्वाह के लायक उचित आवश्यकताएँ पूर्ण करने योग्य धन के उपार्जन और संग्रह की मर्यादा सीमित करके मनुष्य सुखी हो सकता है। अपने चरित्र को सँभाले रख सकता है। बाल-बच्चों को उत्तराधिकार में मुफ्त का माल न देकर, उन्हें निकम्मे बनाने से बचाए रह सकता है और जनसाधारण में ईर्ष्या एवं असंतोष उत्पन्न होने से रोके रह सकता है। धन की असीम तृष्णा में संलग्न व्यक्ति यह सब बुराइयाँ पैदा करते रहते हैं। यह तृष्णा उनके निज के लिए ही नहीं, सारे समाज के लिए घातक सिद्ध होती है। इसलिए वित्त को नहीं वित्तेषणा को निंदनीय ठहराया गया है। इस दिशा में संतोष की, मर्यादा की मनोवृत्ति रखकर ही मनुष्य अपने मानसिक स्तर को इतनी फुरसत में रख सकता है कि वह अपने आत्म-कल्याण की बात सोच सके और उसके लिए कुछ कर सके। इस तृष्णा से बचे रहने वाले के पास ही इतना मन, उत्साह और समय खाली रह सकता है कि वह देश-धर्म की कुछ बात सोच सके और उसके लिए प्रयत्न कर सके। श्रेय मार्ग पर ध्यान दिए बिना, उसके लिए समय लगाए बिना जीवन सफल एवं सार्थक नहीं हो सकता और इधर कदम उठा सकना उन्हीं के लिए संभव है, जिनका मन धन को नहीं जीवन के सर्वांगीण विकास को अपना लक्ष्य निर्धारित कर सका होगा।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पिशाचिनी पुत्रेषणा

दूसरी दुष्प्रवृत्ति है "पुत्रेषणा"। पुत्रेषणा का मोटा अर्थ संतानोत्पादन है। इसका पाशविक रूप कामवासना है। सृष्टि का क्रम बंद न हो जाये इस दृष्टि से उस बाजीगर ने प्राणियों के शरीर और मन में एक ऐसा विकार उत्पन्न कर दिया है जिसके आकर्षण से वशीभूत होकर उसे परिवार बनाने और बढ़ाने का कठिन काम पूरा करने में आनाकानी न करनी पड़े। विचारपूर्वक देखा जाये तो प्रजनन की क्रिया माता के लिए प्राणघातक संकट जैसी है। नौ महीने गर्भ में बालक का शरीर वह अपने शरीर का रक्त-मांस देकर ही बनाती है। इतना मांस और रक्त अपने शरीर में से देकर वह बहुत कुछ खोती ही है। बहुत दिन तक जो दूध पिलाती है वह भी उसी का रक्त छाती में होकर दूध बनकर निचुड़ता रहता है। गर्भ के दिनों में माता का स्वास्थ कितना गिर जाता है इसे सब कोई जानते हैं। प्रसवकाल की पीड़ा की कल्पना कर सकना भुक्तभोगी के लिए ही संभव है। फिर बालकों के लालन-पालन में दिन-रात किस तरह गुजारनी पड़ती है इस परिश्रम का अनुमान लगाया जाए तो लगता है कि माता को कितना अधिक कष्ट सहन करना पड़ता है ? यदि इतनी बड़ी कठिनाई को समाज के लिए कोई महत्त्वपूर्ण उपहार सुसंतति के रूप में देने की पूर्व तैयारी के साथ किया गया हो तब तो बात दूसरी है अन्यथा जो मानव जीवन सत्कर्मों में लग सकता था, उसे संतानोत्पादन जैसे कष्ट-साध्य कार्य में लगाकर और कुसंस्कारी बालक उत्पन्न करके अपने लिए उनके लालन-पालन और समाज के लिए इस कुसंस्कारक सेना के द्वारा होने वाले उपद्रवों के बढ़ाने में भला क्या अच्छाई हो सकती है ?

संतानोत्पादन का उत्तरदायित्व

काम विकार से ग्रसित होकर लोग बिना बिचारे संतानोत्पादन का महान् उत्तरदायित्व कंधे पर ले बैठते हैं और उसके वहन करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

योग्य परिपूर्ण क्षमता न होने पर अपने लिए ही नहीं सारे समाज के लिए संकट उत्पन्न करते हैं। संतानोत्पादन के द्वारा समाज को श्रेष्ठ नागरिक प्रदान करने की परिपूर्ण जिम्मेदारी के लिए समुचित तैयारी होने पर काम सेवन की सार्थकता कही जा सकती है, पर केवल विकारग्रस्त होकर, क्षण भर के सुख के लिए प्रजनन और बालकों का भार उठाने जैसे कार्य निःसंदेह एक दुस्साहस मात्र है। आज ऐसा ही अविवेकपूर्ण दुस्साहस चारों ओर बढ़ रहा है। इससे बालकों की जन्म संख्या इतनी तेजी से बढ़ रही है कि खाद्य समस्या से लेकर वस्त्र मकान, चिकित्सा, शिक्षा, रोजी, रोटी आदि के सभी साधन पिछड़ते चले जा रहे हैं। सारे साधन जुटाकर बढ़ती हुई जनसंख्या के उपयुक्त आवश्यक साधन जुटाने में विचारशील लोग लगे हुए हैं, पर जितना बन पाता है उससे कहीं ज्यादा आवश्यकता यह बढ़ती हुई जनसंख्या उत्पन्न कर देती है।

बढ़ती हुई जनसंख्या

बढ़ती हुई जनसंख्या के संबंध में संसार के प्रमुख विचारकों एवं समाजशास्त्री वैज्ञानिकों ने अभिमत दिये हैं, जिनमें उन्होंने यह स्पष्ट घोषणा की है कि यदि प्रजनन का यही क्रम जारी रहा तो कुछ ही दिन में अन्न, स्थान, निवास की समस्या काबू से बाहर हो जाएगी। प्रो० हर्मन वेरी का कथन है कि—"ईसा के १० हजार वर्ष पूर्व सारी दुनिया में मनुष्यों की आबादी केवल १० लाख थी, वह अब बढ़कर ६ अरब हो गई। वृद्धि के इस अनुमान से सन् २०५० में दुनिया की आबादी ६ अरब हो जाएगी तो प्रति व्यक्ति के हिस्से में केवल १ वर्ग मीटर जमीन आएगी। तब धरती पर इतने लोगों के लिए न खाना मिल सकेगा, न शुद्ध वायु, न पानी और न बिजली। मकानों में सोने के लिए जगह न बचेगी, उनमें खड़े भर रहा जा सकेगा। जानवरों का नाम-निशान तक दुनिया में मिट जायेगा, क्योंकि जब मनुष्यों के रहने के और खाने के लिए ही धरती की शक्ति पर्याप्त न होगी तो बेचारे पशुओं को उसमें से कौन हिस्सा बटाने देगा ? लोग उन्हें मारकाट कर बहुत पहले ही चट कर जायेंगे।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बढ़ती हुई जनसंख्या अगणित समस्याएँ उत्पन्न करेगी। इस बढ़ती हुई महँगाई और घटती हुई आमदनी में अंधाधुंध बच्चे पैदा करते जाना किसी भी दृष्टि से बुद्धिमत्ता का काम नहीं है। यदि बच्चे की उचित शिक्षा का, उचित पोषण का ठीक प्रबंध वर्तमान आर्थिक अव्यवस्था में नहीं हो सकता तो उनको उपजाया ही क्यों जाए ? संतान पैदा करना एक महान् उत्तरदायित्व अपने कंधे पर लेना है। यह उचित तो है, पर शर्त यही है कि उसके लिए आवश्यक क्षमता और योग्यता हमारे में हो। स्वास्थ्य, शिक्षा और धन की दृष्टि से हम इतने समर्थ हों कि अपने जीवन की उचित आवश्यकताओं को पूर्ण करने के साथ-साथ बच्चों को सभ्य नागरिक बना सकने में समर्थ हो सकें। इसके बिना संतानोत्पादन एक सामाजिक अपराध है।

ब्रह्मचर्य की आवश्यकता

स्वास्थ्य की सुरक्षा, दीर्घजीवन, जीवनी शक्ति की स्थिरता का ब्रह्मचर्य से अटूट संबंध है। प्राचीनकाल में इस ओर पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता था, फलस्वरूप स्वास्थ्य की स्थिति बहुत ही उत्तम रहती थी। अब जबकि कामवासना को एक क्रीड़ा-कौतुक मान लिया गया है और खिलवाड़ एवं मनोरंजन की तरह उसका उपयोग किया जाने लगा है, स्वास्थ्य की बर्बादी भयंकर रूप से सामने आ रही है। चेहरों के तेज नष्ट हो चले हैं, मस्तिष्क जरा-सा काम करने में दर्द करने लग जाता है, शरीरों में हर घड़ी थकान छाई रहती है, परिश्रम करते नहीं बन पड़ता, कमजोरी नस-नस में व्याप्त रहती है, लगता है देह का हर कल-पुर्जा खोखला हो चला है और जीवन की गाड़ी किसी प्रकार मौत के दिन पूरे करने के लिए लड़खड़ा-लड़खड़ाकर चल रही है। स्वास्थ्य की इतनी बर्बादी का प्रधान कारण यह काम कौतुक ही है, जिसमें ग्रस्त होकर हमारे छोटे-छोटे बच्चे तक अपना सर्वनाश करने में लगे हुए हैं। किशोरावस्था पार करते-करते, उन्हें बुढ़ापा आ घेरता है और जवानी आने से पहले मौत की घंटी बजने लगती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आग भड़काने वाले प्रसाधन

सिनेमा, अश्लील चित्र, बेहूदा साहित्य, गंदे गाने तथा कुसंग का वातावरण वासना की आग बुरी तरह भड़काने में लगा हुआ है। फलस्वरूप हमारा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य चौपट होता चला जा रहा है। इस दुर्गति की स्थिति में समाज की श्रेष्ठता की आशा तो की ही कैसे जाए ? भाई-बहन, पिता-पुत्री की दृष्टि से नर-नारी अब आपस में एक-दूसरे को कहाँ देखते हैं ? वासना की दूषित दृष्टि का रंगीन चश्मा आँखों पर चढ़ा होता है और विकारपूर्ण अनैतिक ढंग से सोचने की एवं वैसी ही चेष्टाओं का अवसर ढूँढ़ने की प्रवृत्ति मन में भरी रहती है। फलस्वरूप मानसिक ओज का निरंतर क्षरण होता रहता है।

संक्रामक रोगों से भी भयंकर

यह दृष्टि दोष, यह विकार-चिंतन, किसी भी संक्रामक रोग से कम भयंकर नहीं है। हैजा, प्लेग, फ्लू, कोढ़, तपैदिक, चेचक, इन्फ्लुऐंजा जैसी बीमारियाँ स्पष्ट दीखती हैं। इसलिए उनका इलाज भी हो जाता है, पर विकार दृष्टि का अदृश्य रोग ऐसा है, जो न पकड़ में आता है और न उसका किसी अस्पताल में इलाज किया जाता है। दांपत्य जीवन पर इसका कितना बुरा प्रभाव पड़ता है, गृहस्थ की नींव इस बुराई के कारण कितनी खोखली हो जाती है और अपने बड़ों की दुष्प्रवृत्तियों का बच्चों के कोमल मन पर कैसा घातक प्रभाव पड़ता है ? यह बहुत ही गंभीर प्रश्न है। मानसिक व्यभिचार की हानि शारीरिक व्यभिचार से किसी भी प्रकार कम नहीं है। विचार ही तो अंत में कार्य रूप में परिणत होते हैं। मानसिक विकार आज नहीं तो कल शरीर संयोग के रूप में प्रकट होता है। प्राकृतिक और अप्राकृतिक दुष्प्रवृत्तियों का जन्म मानसिक विकार के कारण ही होता है। भड़कीला श्रृंगार व्यभिचार का पूर्ण रूप है। वेश्याएँ इसी अस्त्र के आधार पर लोगों में विकार उत्पन्न करके उन्हें अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भड़कीले शृंगार से बचें

आज भड़कीला शृंगार फैशन कहा जाता है और उसे कला, सुरुचि एवं सभ्यता का चिह्न कहकर पुकारा जाता है। कहा और माना जो कुछ भी जाये, वास्तविकता ज्यों की त्यों रहेगी। हमारे उठती उम्र के बच्चे और बच्ची इस पतन पथ पर कदम न बढ़ाएँ, इसका ध्यान रखा जाना चाहिए। पुराने समय में गुरुकुलों की शिक्षा पूर्ण करके गधा पच्चीसी की कच्ची उम्र पार कर लेने तक छात्रों के सिर मुड़े रखे जाते थे, उन्हें कोई श्रृंगार नहीं करने दिया जाता था। दर्पण देखने की मनाही थी, क्योंकि इससे अपने रूप यौवन का गर्व मन में उठता है और उससे किसी को आकर्षित करने की कामना जगती है। इस विष वृक्ष की पत्ती तोड़ने से नहीं जड़ काटने से काम चलेगा। उत्तेजक श्रृंगार की जड़ में वासना का विकार स्पष्ट है, इससे देखने वालों के मन में विक्षोभ उत्पन्न होता है। कुछ विशेष अंगों को ढँककर रखने की परंपरा इसी दृष्टि से है। श्रृंगार साधनों की जितनी ही वृद्धि होगी, व्यभिचार को उतना ही उत्तेजन मिलेगा। इसलिए हम सफाई से रहें, स्वच्छता पसंद करें, सादगी से रहें और सभ्य वेशभूषा धारण करें, पर फूहड़पन को बढ़ने न दें। आज फूहड़पन बढ़ रहा है। हमारी भोली बच्चियाँ इसकी बुराई को समझ नहीं पातीं और वे दूसरों की देखा-देखी भद्दे ढंग से अपना वेश-विन्यास बनाने लगती हैं। उन्हें समझाया जाना चाहिए कि—बेटी, यह न तो सभ्यता है और न भारतीय परंपरा। ढलती उम्र आने से पूर्व तक तो भारतीय लड़कियाँ—नीचे आँखें रखने से लेकर सिर ढँकने और घूँघट मारने तक न जाने क्या-क्या प्रतिबंध अपने ऊपर लगाए रहती थीं ? अब उतने प्रतिबंधों की भले ही आवश्यकता न रही हो पर इतनी आवश्यकता तो सदा ही रहेगी कि उठती उम्र में अपेक्षाकृत अधिक सादगी अपनाई जाए और भड़कीले श्रृंगार से यथासंभव अधिकाधिक बचा जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वासनात्मक असंतोष

धन के असंतोष की भाँति वासनात्मक असंतोष भी मानसिक शांति को नष्ट करके रख देता है। पतिव्रत और पत्नीव्रत की महानता परलोक और आत्मा की सद्गति की दृष्टि से तो अनिवार्य है ही, सामाजिक जीवन की स्वस्थता की दृष्टि से भी आवश्यक है। हम इस संबंध में एक बहुत छोटी सीमा में अपने को आबद्ध रखें। जिस प्रकार अपनी कमाई के अतिरिक्त दूसरों का पैसा हड़पना पाप है, उसी प्रकार अपनी छोटी-सी दांपत्य मर्यादा के बाहर विकार की दृष्टि रखना भी घातक है। पाप दृष्टि से हजार नारियों को देखने पर भी संयोग का अवसर एक से भी नहीं मिलता। पाप हजार मन का चढ़ा और लाभ रत्ती भर भी न हुआ। ऐसी व्यर्थ विडंबना में, पाप पंक में, अपने को लिप्त करने से क्या भलाई हो सकती है ? जो विवाहित हैं वे समझ लें कि वासना का क्षेत्र उनके लिए उतना ही सीमित है, इससे बाहर नहीं। अपनी रूखी रोटी खाकर ही हमें संतोष करना पड़ता है, फिर अपना दांपत्य जीवन जैसा भी कुछ संयोगवश बन गया है उसी में संतोष करके शांति प्राप्त क्यों न करें ?

अविवेक पर अंकुश रखा जाए

अविवाहित लोगों को बेवक्त की शहनाई नहीं बजानी चाहिए। अकारण अशांति को आमंत्रण देने से अपने सत्यानाश का सरंजाम ही इकट्ठा होता है, जिनके जोड़े बिछुड़ चुके हैं, वे अपनी शक्तियों को संग्रहीत करके, अपने शरीर एवं मन को पुष्ट करने में इस अवसर का लाभ क्यों न उठाएँ। वासना और कुछ नहीं, मछली का पेट फाड़ डालने वाली आटा लगी काँटे की नोंक-मात्र है। इसमें जो क्षणिक-सा जादू भरा आकर्षण है, उससे अपने को बचाए रखने की दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता लोगों में नहीं है। इसी से वे उस भयानक बर्बादी को अपना लेते हैं, जिससे यदि बचा जा सका होता तो अपनी गणना संसार के श्रेष्ठ व्यक्तियों में होती, जीवन का लक्ष्य सार्थक होता और समाज को एक कल्याणकारक दिशा प्राप्त होती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

असंतोष हर क्षेत्र में घातक है। धन में ही नहीं वासना के क्षेत्र में भी उसकी भयंकरता उतनी ही प्रचंड है। वित्तेषणा ने समाज का आर्थिक ढाँचा लड़खड़ा दिया है तो पुत्रेषणा ने मानसिक ढाँचा। संसार को अणुबमों से उतना खतरा नहीं है जितना वासना के बवंडर से। हमारा स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन, नैतिक दृष्टिकोण, पारिवारिक व्यवस्था, आर्थिक ढाँचा, दांपत्य प्रेम, वैयक्तिक पवित्रता सभी कुछ इस बात पर निर्भर है कि काम-वासना की दुष्प्रवृत्ति पर अधिकाधिक अंकुश रखा जाए। यदि इस ओर हमारा मन ललचाता रहा, अपनी मर्यादाओं में जो कुछ उपलब्ध है, उससे अधिक असंतोष धारण करके आक्रमण एवं अपहरण की नीति अपनाई गई तो उससे अनर्थ ही उत्पन्न होगा। सभ्य समाज की रचना में वित्तेषणा के बाद पुत्रेषणा ही दूसरी बाधा है। इसे ब्रह्मचर्य का व्यापक प्रसार करके ही दूर किया जा सकता है। पिशाचिनी पुत्रेषणा की ओर से उपेक्षा भाव रखने में ही हमारा कल्याण है।

यौन सदाचार की अपरिहार्यता

काम-वासना की शारीरिक और मानसिक अमर्यादित प्रक्रियाएँ व्यभिचार को जन्म देती हैं और उससे स्वास्थ्य, सद्भाव एवं जीवन की निष्ठा पर भारी आघात पहुँचता है। संतान का सद्गुणी होना बहुत कुछ इस बात पर निर्भर है कि पति-पत्नी में हार्दिक प्रेम रहे। जिस दांपत्य जीवन में अविश्वास, संदेह, दुर्भाव एवं मनोमालिन्य बना रहेगा वहाँ सुसंतति का जन्म कदापि संभव न होगा। चरित्र पर संदेह होना, पति-पत्नी के प्रेम एवं विश्वास में आग लगाने वाला पलीता है। "एक नारी ब्रह्मचारी" वाली कहावत में बहुत कुछ तथ्य है। नारी के लिए पतिव्रत की जो महत्ता है, वही नर के लिए पत्नी व्रत की। रामायण में पतिव्रता के लिए यह धर्म बताया है कि वह "अंध, बधिर, क्रोधी, अति दीना" जैसा पति मिलने पर भी संतुष्ट रहे और उसे ही ईश्वर की प्रतिमूर्ति समझकर सेवा करे। ठीक यही बात पति के लिए लागू होती है। संयोगवश जैसी भी कुछ काली, कानी, लँगड़ी, अंधी, दुर्गुणी, फूहड़, कर्कशा, मूर्ख, रोगी, अपंग नारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मिल गई है; उसे गृह-लक्ष्मी देवी की प्रतिमूर्ति समझकर प्रेमपूर्वक निबाहे और अपनी इसी छोटी दुनिया से संतुष्ट रहकर कुमार्ग पर मन न दौड़ाएँ।

सुसंतति के अभाव में पारिवारिक जीवन नष्ट होते चले जा रहे हैं, और हर पीढ़ी अपनी पूर्व पीढ़ी की अपेक्षा अधिक दुर्गुणी एवं कुसंस्कारी बनती चली जा रही है। यह असुरता के विकास का क्रम यदि इसी प्रकार चलता रहा तो हमारी सभ्यता और संस्कृति नष्ट होती ही चली जायेगी और सभ्य समाज की रचना के स्वप्न अधूरे ही पड़े रहेंगे। इसलिए हमें यौन सदाचार के लिए प्रबल प्रयत्न करना चाहिए और इसकी जड़ 'मानसिक असंयम' को दूर करना चाहिए। दृष्टिकोण में से वासना को हटाना और अपने दांपत्य जीवन को ईश्वरीय आज्ञा मानकर संतुष्ट रहना जहाँ धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से आवश्यक है वहाँ समाज रचना की दृष्टि से भी अनिवार्य है। हम व्यभिचार बुद्धि का परित्याग करके जब बहिन-भाई के, पिता-पुत्री के पवित्र संबंधों में संतोष एवं आनंद का अनुभव करेंगे, तभी यह आशा की जा सकेगी कि हमारा समाज सभ्य बने और जिस स्वर्गीय वातावरण को इस धरती पर अवतरित देखना चाहते हैं वह आकांक्षा पूर्ण हो।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोकेषणा की प्रवंचना

वित्तेषणा, पुत्रेषणा के अतिरिक्त लोकेषणा तीसरी ऐषणा है 'लोकेषणा'। वाहवाही लूटने की, दूसरों के मुँह अपनी प्रशंसा सुनने की मानसिक दुर्बलता को लोकेषणा कहते हैं। यों उचित मर्यादा में यह वृत्ति भी उचित धन उपार्जन और संयमी दांपत्य जीवन की तरह उपयोगी होती है, इस आधार पर मनुष्य सत्कर्म करता और अपने चरित्र को ऊँचा रखता है। बुराइयों से बचता और निंदा से डरता हुआ मर्यादा के अंदर रहना सीखता है। इस दृष्टि से यश कामना को उत्तम माना गया है। पर यह उत्तमता तभी तक स्थिर रहती है, जब मनुष्य ईमानदारी से धन कमाने की तरह अपने उत्कृष्ट आचरण एवं श्रेष्ठ सत्कर्मों द्वारा उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। यदि अमीरी का रौब गाँठकर, फिजूलखर्ची के द्वारा अपना बड़प्पन सिद्ध करके प्रशंसा प्राप्त करने का प्रयत्न किया जा रहा है तो वह लोकेषणा निंदनीय भी है और अहितकर भी।

कीमती कपड़े और जेवर

आज शेखीखोरी, बनावट, ढोंग, फैशनपरस्ती और बड़प्पन दिखाने की बहुत होड़ चल रही है। इन बातों में लोग अपनी हैसियत से बहुत अधिक खर्च करते हैं। ठाट-बाट बनाने में अपनी गाढ़ी कमाई का अधिकांश भाग फूँक देते हैं। कीमती कपड़े पहनने की कोई उपयोगिता समझ में नहीं आती। शरीर ढकने के लिए सीधे-साधे कपड़े पर्याप्त हैं, पर जब उनमें प्रचुर धन खर्च करके कीमती सूट और महँगी साड़ी पहनकर लोग बाजार में निकलते हैं, तो उनका उद्देश्य देखने वालों पर यह रौब गाँठना होता है कि हम बहुत बड़े अमीर हैं। इसी प्रकार जेवर लादे फिरने का फूहड़पन भी इसी ओछी बुद्धि का परिचायक है कि लोग हमें धनी समझें। धनी होने का प्रमाण-पत्र गले में लटकाए फिरने, हाथ-पैरों में बाँधे फिरने का फितूर ही जेवर पहनने की भोंड़ी शक्ल बनाए फिरता है। जो धन बैंक में जमा होकर या किसी कारोबार में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लगकर दिन-दिन बढ़ता रह सकता था और कितने ही लोगों के लिए रोजी-रोटी उत्पन्न करने वाला बन सकता था, उसे जेवरों में रोककर पंगु बना देना वस्तुतः लक्ष्मी जी का अपमान है।

पैसे की उपयोगिता तभी है जब वह घूमता रहे। यदि उसे जमीन में गाड़ दिया जाये या जेवर जैसे दिन-दिन घटने वाले, ईर्ष्या उत्पन्न करने वाले, अहंकार बढ़ाने वाले और चोर-उचक्कों का मन ललचाने वाले व्यर्थ कामों में लगा दिया जाये तो उसकी फिर क्या उपयोगिता रह जाती है ? यह तो लक्ष्मी देवी के हाथ-पैर तोड़कर उसे लुंज-पुंज बना देने जैसा अनुपयुक्त कार्य हुआ ? कीमती पोशाक न पहनकर यदि हम सादे कपड़े पहनें तो यह हमारी सज्जनता और बुद्धिमत्ता का चिह्न होगा। इस विभाग में बचा हुआ पैसा हम अपने और दूसरों के आवश्यक कार्यों में लगाकर अपनी दूरदर्शिता और भलमनसाहत का परिचय दे सकते हैं।

अहंता की पूर्ति के लिए

विवाह-शादियों में लोग अंधे होकर पैसे की होली जलाते हैं। उनका प्रयोजन शायद यही रहता होगा कि उत्सव में शामिल होने वाले अथवा दर्शक लोग इन पैसे की होली फूँकने वालों को अमीर, समझकर उनकी प्रशंसा करें। मृत्यु भोज या अन्य बड़ी-बड़ी दावतों के मूल में भी वाहवाही लूटने की मनोवृत्ति छिपी रहती है। दूसरों की तुलना में अपने को अधिक अमीर साबित करके अधिक वाहवाही लूटने के लिए अपना घर खाली कर डालते हैं, कर्जदार बन जाते हैं और कई बार तो मतवाले होकर इतना खर्च कर बैठते हैं कि पीछे उन्हें अपने आवश्यक कार्यों को ठीक तरह चलाने में भी कठिनाई अनुभव होने लगती है। मोटर, घोड़ा, गाड़ी, कोठी, बँगले, नौकर-चाकर आदि का भारी संरजाम आवश्यकता की पूर्ति के लिए नहीं, ठाट-बाट दिखाने और अमीरी प्रदर्शित करने के लिए जुटाया जाता है। बड़े आदमी बनने के शौक में जितनी फिजूलखर्ची इन कामों में की जाती है, उससे कहीं कम में काम चल सकता था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अमीरी प्रशंसनीय नहीं

किसी जमाने में अमीरी बड़प्पन का चिह्न रही होगी, पर अब जैसे-जैसे विचारशीलता बढ़ रही है अमीरी को घृणा और ईर्ष्या-द्वेष की दृष्टि से देखा जाने लगा है। सर्वसाधारण की गरीबी और परेशानी को घटाने में अपनी कमाई को खर्च न करके जो लोग उसका संग्रह करते चले जा रहे हैं, अपने ऊपर अंधाधुंध खर्च कर रहे हैं और वाहवाही लूटने के लिए उसे फूहड़पन के साथ उलीचते हैं, उन्हें स्वार्थी, निष्ठुर एवं मदांध ही कहा जा सकता है। बड़प्पन पाने की आशा से जो लोग यह उद्धतपन करते हों, उन्हें यह बात गाँठ बाँध लेनी चाहिए कि उनका यह छिछोरापन प्रशंसा का नहीं निंदा का कारण बनता चला जा रहा है और वह समय दूर नहीं जब इस प्रकार की मूर्खता अवांछनीय मानी जाने लगेगी। लोग उनसे घृणा करके ही चुप न हो जाएँगे वरन् ऐसे उद्धत प्रदर्शनों का विरोध करेंगे और रोकेंगे।

सार्वजनिक जीवन का सत्यानाश

सार्वजनिक संस्थाओं का सत्यानाश इसी प्रवृत्ति ने किया है। पदाधिकारी बनने की हविश में प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण जन संगठन ईर्ष्या और कलह के अखाड़े बने हुए हैं। हर कोई बड़प्पन और पदवी चाहता है। जिसे मिल जाती है, वह फिर उसे सदा के लिए छाती से चिपकाए बैठा रहना चाहता है। जिसे नहीं मिलती, वह सत्तासीन व्यक्ति को पदच्युत करने के लिए ही नहीं, उस संस्था की प्रगति को ही नष्ट करने पर तुल जाता है। धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक सभी संस्थाएँ इस बीमारी की शिकार हो रही हैं और इसी पारस्परिक कलह में अपनी उपयोगिता एवं शक्ति गँवाती चली जा रही है। व्यक्तियों का पतन भी इसी कुचक्र में हो रहा है। एक व्यक्ति स्वयं सत्ता हथियाने और अपने प्रतिद्वंद्वी को गिराने के लिए जितने हथकंडे प्रयोग करता है; जितने कुचक्र और षड्यंत्र बनाने में अपनी शक्ति खर्च करता है, उतनी ही यदि वह सच्चे मन से सच्ची

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सेवा करने में लगा दे तो लोक-परलोक भी सुधरे, आत्मा को शांति भी मिले और जनता-जनार्दन की कुछ ठोस सेवा भी बन पड़े।

बड़े बनने के ओछे उपाय

प्रशंसा का उद्देश्य लेकर थोड़ा-सा सेवा कार्य कर देने वाले, लंबे-चौड़े लेक्चर झाड़ने वाले, बढ़-चढ़कर बातें बनाने वाले लोग अपने हथकंडों से बड़प्पन लूटने में सफल हो जाते हैं। यह सामाजिक जीवन के लिए एक खतरा है। राजनैतिक चुनावों में अयोग्य और अनुपयुक्त व्यक्ति भी केवल बड़प्पन प्राप्त करने के लिए उम्मीदवार खड़े हो जाते हैं और अंधाधुंध धन व्यय कर देते हैं।

थोड़ा-सा दान देकर अपने नाम का पत्थर लगवाने की या नामवरी छपवाने की प्रवृत्ति निम्नकोटि की है। इसमें दान या सेवा का नहीं, प्रशंसा प्राप्त करने का अहंकार ही प्रधान है। अहंता को पाप माना गया है। पाप ही नहीं, उसे पाप का मूल भी कहा गया है। "पाप मूल अभिमान" की उक्ति प्रसिद्ध है। यह पाप जहाँ भी रहेगा वहाँ सेवा क्या बन पड़ेगी ? सत्कर्म कहाँ संभव होगा ? नाम के भूखे पागल लोग जहाँ नाम नहीं मिलता, वहाँ से खिसकने लगते हैं और वहाँ जोड़-तोड़ भिड़ाते हैं, जिससे किसी भी प्रकार उन्हें नामवरी प्राप्त हो। एक संस्था छोड़कर दूसरी में, दूसरी को छोड़ तीसरी में घुसते-फिरने वाले लोग आमतौर से इसी मर्ज के मरीज होते हैं। सैद्धांतिक मतभेद के कारण तो कोई विरले ही इस प्रकार का परिवर्तन करते हैं। हमारा सार्वजनिक जीवन इस लोकेषणा की दुष्प्रवृत्ति के कारण कितना गंदा और मलीन होता चला जा रहा है यह देखकर भारी दुःख होता है।

स्वराज्य में विश्वास करने वाले राजनैतिक विचार के लोग जब स्वतंत्रता संग्राम में जुट पड़े तो उस संघबद्ध प्रयत्न ने एक चमत्कार उत्पन्न कर दिया। निःस्वार्थता एवं संगठन का परिणाम सदा ही चमत्कारिक होता है। धार्मिक जगत् में त्यागी समझे जाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वाले लोग यदि अपनी लोकेषणा का त्याग कर सके होते तो भारत की धर्म प्रधान जनता को चारित्रिक दृष्टि से कहीं अधिक समुन्नत कर सकना बहुत ही सरल हो गया होता। धन और वासना का प्रलोभन छूट सकता है, पर लोकेषणा तो सबसे प्रबल है। उसका लोभ त्यागी कहे जाने वाले लोगों से भी नहीं त्यागा जाता।

मूक सेवा की महत्ता

हमें मूक सेवा को महत्त्व देना चाहिए। नींव के अज्ञात पत्थरों की छाती पर ही विशाल इमारतें तैयार होती हैं। इतिहास के पन्नों पर लाखों परमार्थियों में से किसी एक का नाम संयोगवश आ पाता है। यदि सभी सज्जनों का नाम छापा जाने लगे तो दुनिया का सारा कागज इसी काम में समाप्त हो जायेगा। यह सोचकर हमें प्रशंसा की ओर से उदास ही नहीं रहना चाहिए वरन् उसको तिलांजलि भी देनी चाहिए। नामवरी के लिए जो लोग आतुर हैं, उनको निम्न स्तर का, स्वार्थी ही माना जाना चाहिए। जो बदले की नीयत से सत्कर्म कर रहा है वह व्यापारी है। पुण्य और परमार्थ को वाहवाही के लिए बेच देने वाले व्यापारी हीरा बेचकर काँच खरीदने वाले मूर्ख की तरह हैं। जिसने प्रशंसा प्राप्त कर ली, उसे पुण्य फल नाम की और कोई चीज मिलने वाली नहीं है। दुहरी कीमत वसूल नहीं की जा सकती। अहंकार को तृप्त कर लेने के बाद किसी को यह आशा न करनी चाहिए कि इस कार्य में उसे परमार्थ का दुहरा लाभ भी मिल जायेगा।

प्राचीनकाल में गुप्त दान की बड़ी महत्ता थी। बाइबिल में कहा गया है कि—"तू दाहिने हाथ से दान इस प्रकार कर कि तेरा बाँया हाथ भी जानने न पाए।" पुण्य और पाप का जितना बखान होता है, उतना ही वह घट जाता है। लोकेषणा का लोभी ईश्वर का प्यारा नहीं हो सकता। प्रभु को तो निरभिमानता ही प्रिय है। अठारह पुराण विभिन्न काल में विभिन्न व्यक्तियों के द्वारा लिखे गये हैं, पर उनमें से किसी ने भी अपना नाम न देकर व्यास जी को ही उनकी रचना का श्रेय दिया है। तुलसीकृत रामायण में कई व्यक्तियों ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपनी कृतियों के क्षेपक लगाए, पर उसमें अपना नहीं तुलसीदास जी का ही नाम रखा। प्राचीन काल में नाम से बचने की प्रवृत्ति थी। लोग नाम को नहीं काम को महत्त्व देते थे। सत्कर्म करने से आत्मा में जो संतोष उत्पन्न होता और समीपवर्ती लोगों में जो गहरी श्रद्धा उत्पन्न होती है, उतना ही लाभ प्राप्त करके प्रत्येक सत्कर्म प्रेमी को संतुष्ट हो जाना चाहिए। सेवा का यही परिपूर्ण पुरस्कार है।

आत्म-संतोष के लिए सत्कर्म

वाहवाही और नामवरी के लिए ओछे उपायों का अवलंबन करना उतना ही हेय है जितना धन और वासना की पूर्ति अनैतिक उपायों से करना। इस मानसिक दुर्बलता ने समाज का अन्य किसी भी भयंकर बुराई से कम अहित नहीं किया है। सभ्य समाज की रचना के तीन प्रमुख आधारों में हमें सज्जनता का श्रेय प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए और हत्यारी लोकेषणा से दूर रहना चाहिए। आज महत्त्वकांक्षाओं की आग में सारी दुनिया जल रही है। उन्नति के नाम पर प्रगति की अभिलाषा से बुरे-बुरे दुष्कर्म करने में संलग्न हैं। हमें संतोष का अमृत पीना और पिलाना चाहिए और यह समझना तथा समझाना चाहिए कि वाहवाही व्यर्थ है। आत्म-संतोष के लिए श्रद्धापूर्वक सत्कर्म करते रहना ही श्रेष्ठ है। उसी में अपना और सबका कल्याण समाया हुआ है।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुख का मूलभूत आधार—संतोष

अनेक मनुष्य सदैव ही कोई न कोई अभाव अनुभव करते हुए दुःखी होते रहते हैं। वे अपने दुःख का कारण किसी न किसी अभाव को ही मानते रहते हैं और ऐसा सोचा करते हैं कि यदि उनका वह अभाव मिट जाए, अमुक आवश्यकता पूरी हो जाए तो वे सुखी हो जाएँ। पर ज्यों ही वह एक अभाव पूरा होता है कि दूसरा अभाव सताने लगता है। दूसरा पूरा होने पर तीसरा। इस प्रकार अभावों का एक क्रम लगा रहता है।

अभावों का सर्वथा अभाव हो जाना संभव नहीं। आज यदि पैसे का अभाव है तो कल विद्या का अभाव सता सकता है। यदि विद्या का अभाव नहीं है, तो सामाजिक सम्मान का अभाव अनुभव हो सकता है। सामाजिक सम्मान है तो संतान का अभाव दुःखी कर सकता है। यदि संतान का अभाव नहीं है तो उनके सत्संतान होने का अभाव खटक सकता है और यदि एक बार सभी चीजें प्राप्त हो जाएँ तो उनकी न्यूनाधिक मात्रा अथवा उत्कृष्टता का अभाव सामने खड़ा हो सकता है। तात्पर्य यह है कि किसी न किसी रूप में अभाव मनुष्य को सताता ही रहता है।

सही बात यह है कि अभाव का होना न होना वस्तुओं, परिस्थितियों की मात्रा अथवा स्तर पर निर्भर नहीं है। अभाव का अनुभव होना मनुष्य की अपनी मानसिक कमी पर ही निर्भर है। अभाव का वास्तविक अस्तित्व तो कदाचित् ही होता है, यह मनुष्य की अपनी आदत है, जो अभाव के रूप में उसे अनुभव हुआ करती है। इस आदत का जन्म असंतोष से हुआ करता है।

वासनाओं का अंत नहीं

जिसका स्वभाव असंतोषी है, वह कुबेर का कोष और भूमंडल का राज्य पाकर भी पूर्ति का, संपन्नता का अनुभव नहीं करेगा। उसको अपनी सारी विभूतियाँ, सारी संपदाएँ कम ही मालूम होती रहेंगी। यदि ऐसा न रहा होता तो जहाँ तक वस्तु के अभाव में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कोई दुःखी होता है तो उसी वस्तु की प्राप्ति से दूसरे को भी दुःखी होना चाहिए। किंतु ऐसा कभी भी देखने में नहीं आता।

संसार में सारी मनोवांछाएँ पूरी होना संभव नहीं। इसका एक कारण तो यह है कि मनुष्य की वांछाओं, इच्छाओं तथा कामनाओं का कोई अंत नहीं। एक के बाद एक वांछा उत्पन्न ही होती रहती है। एक दूसरा कारण यह भी है कि मनुष्य की इच्छाओं का एक स्वरूप स्थिर नहीं होता। उनका स्वरूप एवं प्रकार बदलता रहता है। जैसे कोई मनुष्य यदि संतान चाहता है, उसको संतान प्राप्त हो सकती है, होती भी है। पर इससे उसकी मनोवांछा पूरी नहीं होगी। संतान पाकर भी वह यह सोचकर असंतुष्ट रह सकता है कि उसके पुत्री होना चाहिए थी अथवा उसकी कामना तो पुत्र की थी, पुत्री की नहीं। यदि उसकी इच्छानुसार पुत्र या पुत्री भी हुई थी, तो वह यह सोचकर संतोष से वंचित रह सकता है कि उसकी संतान तो इस रंग-रूप की होनी चाहिए थी। इस प्रकार मनुष्य की एक वांछा में न जाने कितनी वांछाएँ जुड़ जाया करती हैं। ऐसी वांछाओं की पूर्ति के लिए तो मनुष्य को 'कल्पवृक्ष की सिद्धि' होनी चाहिए, जो कि सामान्यतः संभव नहीं। किंतु अभाव का अनुभव तब भी दूर न होगा। इच्छा-सिद्धि होने पर भी मनुष्य की एक-मनोनुकूल वांछा थोड़ी देर में उसके लिए पुरानी हो जायेगी और वह एक नवीन वांछा के लिए लालायित हो उठेगा। इस प्रकार यदि एक बार अणिमादिक होने पर भी वह अपनी मनोवांछाओं की पूर्ति में दिन और रात लगा रहे, तब भी संतुष्ट नहीं हो सकता। संतोष वस्तुओं अथवा परिस्थितियों में नहीं, मनुष्य की मनःस्थिति में ही है।

संतोष सदृश सुख नहीं

जिसका स्वभाव संतोषी है, वह अभाव की परिस्थितियों में भी व्यग्र अथवा दुःखी नहीं होता। इस संसार में हजारों-लाखों ऐसे व्यक्ति होंगे जिन्हें सामान्यतः आर्थिक कष्ट रहता है। मुश्किल से रूखी-सूखी रोटी मिल पाती है। तब भी वे संतुष्ट तथा प्रसन्न देखे जा सकते हैं। अपने आर्थिक कष्ट का रोना रोते अथवा अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भाग्य को कोसते रहना उन्हें आता ही नहीं। इसके विपरीत असंख्यों लोग ऐसे भी मिलेंगे जो दिन-रात अपने अभाव का रोना रोते और दुर्भाग्य को कोसते रहते हैं। वे कभी भी सुखी अथवा संतुष्ट रह ही नहीं पाते। इसके साथ यह भी देखा जा सकता है कि जिनके पास अपेक्षाकृत अधिक साधन एवं सुविधाएँ हैं किंतु उक्त अभावग्रस्त व्यक्ति से भी अधिक असंतुष्ट एवं दुःखी दीख रहे हैं। सुख का निवास संतोषी मनोवृत्ति में है, प्राप्ति तथा उपलब्धियों में नहीं।

अपनी वर्तमान परिस्थितियों से असंतुष्ट रहना कितने ही मनुष्यों का स्वभाव होता है। उनका वर्तमान कितना ही अनुकूल क्यों न हो किंतु वे खिन्नता अथवा असंतोष का कोई न कोई कारण निकाल ही लिया करते हैं। उन्हें अपने भूतकाल से बड़ा लगाव होता है। उसकी अनुपस्थिति में वे उसमें अपने संतोष का आरोप करके यही सोचा करते हैं कि वे अपने बीते दिनों में बहुत अधिक प्रसन्न एवं सुखी थे। जबकि वास्तव में ऐसा था बिल्कुल नहीं। उनका उक्त अतीत जब वर्तमान था, तब भी वे आज की ही तरह असंतुष्ट एवं अप्रसन्न थे। यदि उनका स्वभाव संतुष्ट रहने का होता तो वे कल भी सुखी होते और आज भी प्रसन्न। वर्तमान से असंतुष्ट व्यक्ति जहाँ अतीत को सुखपूर्ण अनुभव करता है वहाँ भविष्य में सुख-संतोष की आशा रखता है; जबकि उनका प्रत्येक आगामी कल वर्तमान का आज बनकर आता और असंतुष्टि के साथ चला जाता है।

असंतोषी स्वभाव के व्यक्ति का यह विशेष लक्षण है कि वह अतीत तथा अनागत में ही सुख की कल्पना किया करता है और वर्तमान को कंटकाकीर्ण ही माना करता है, जबकि उसका काम केवल वर्तमान से ही रहता है। अतीत से उसका कोई वास्ता नहीं रहता और अनागत नित्य वर्तमान बनता रहता है।

भविष्य वर्तमान से अच्छा हो सकता है। होना भी चाहिए। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह इसके लिए प्रयत्न भी करे। किंतु एक सुंदर भविष्य के लिए प्रयत्न तो वर्तमान में ही करना होगा। जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यक्ति वर्तमान से असंतुष्ट है, उसे दुर्भाग्यपूर्ण एवं अभावग्रस्त समझता है, उससे सामंजस्य नहीं कर पा रहा है, साधन एवं सुविधाओं का रोना रोता हुआ व्यग्र रह रहा है, वह एक उच्चतर भविष्य के लिए प्रयत्न किस प्रकार कर सकता है ? उसे खिन्न होने और कमियों को देखते रहने से ही अवकाश नहीं मिलेगा, तब भला वह भविष्य के लिए प्रयत्न भी क्या कर सकेगा ? किसी उच्चतर भविष्य के लिए संतुलित चित्तवृत्ति, स्थिर बुद्धि, प्रसन्न मनःस्थिति एवं उपलब्ध साधनों में विश्वास की आवश्यकता होती है, वह खिन्नता अथवा असंतोष की दशा में कदापि प्राप्त नहीं हो सकता।

सुखी एवं प्रसन्न रहने का एक ही उपाय है कि अपनी वर्तमान स्थिति से सामंजस्य रखते हुए संतुष्ट रहा जाए और उपलब्ध साधनों का सीमांत सदुपयोग करते हुए उच्चतर भविष्य के लिए प्रयत्न, परिश्रम एवं पुरुषार्थ करते रहा जाए। जो अपनी वर्तमान स्थिति में प्रसन्न नहीं रह सकता वह निश्चय ही भविष्य में भी प्रसन्न न हो सकेगा, फिर चाहे उसका भविष्य वर्तमान से कितना ही अच्छा बनकर क्यों न आए ? प्रसन्नता सामंजस्य एवं संतोष में है और संतोष मनुष्य की अपनी चित्तवृत्ति पर निर्भर है, साधन अथवा सुविधाओं की उत्कृष्टता अथवा अधिकता पर नहीं।

विवेकी बनिये

थोड़ी बुद्धि-विवेक से काम लेने पर मनुष्य का संतुष्ट हो सकना संभव है। यह कोई असंभव बात नहीं है। मनुष्य ही असंतुष्ट रहते हैं। दृष्टिकोण की दिशा बदल लेने भर से ही बड़े से बड़ा असंतोषी भी संतोषी बन सकता है। असंतोष तब होता है जब हम अपने से अधिक साधन-सुविधा वाले व्यक्ति से अपनी कमी की तुलना किया करते हैं। जब हम यह सोचते हैं कि हमारे पास केवल एक छोटा-सा मकान ही है और अन्यों के पास ऊँची-ऊँची कोठियाँ। जब हम यह विचार करते हैं कि अमुक के पास इतना पैसा है, मोटरकार है, नौकर-चाकर है, कारोबार है, किंतु हम केवल एक साइकिल पर अपनी सौ-दो सौ की ही नौकरी पर जाते हैं, तब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हमारे हृदय में असंतोष की चिनगारी दहकने लगती है और हम अपनी स्थिति को बड़ी ही हेय समझकर खिन्न तथा अप्रसन्न हो उठते हैं। हमारी सारी सुख-शांति चली जाती है।

यदि हम अपनी दृष्टि को उन लोगों की ओर मोड़ देते हैं, जो हमसे भी कठिन स्थिति में रह रहे हैं, जिनके पास उतना कुछ भी नहीं है जितना हमारे पास है, तो निश्चय ही हमें अपनी स्थिति पर संतोष होगा। हम ऐसे हजारों व्यक्तियों को अपने चारों ओर देख सकते हैं, जिनके पास एक छोटी-सी झोंपड़ी भी नहीं है। सवारी के नाम पर वे दसियों मील पैदल चलकर जाते और जीविका के नाम पर बारह-बारह घंटे पसीना बहाते हैं। हम ऐसे न जाने कितने व्यक्तियों को देख सकते हैं जो दिन में दोनों समय रोटी न पाते। जाड़ों में भी नंगे बदन फुटपाथों पर सोते हैं। कितने ही ऐसे व्यक्तियों के दर्शन कर सकते हैं जिनको हमसे कहीं कम सुविधाएँ उपलब्ध हैं, किंतु वे हर समय सुखी, संतुष्ट तथा प्रसन्न रहा करते हैं। हमारी तरह न तो वे अभाव अनुभव करते हैं और न अपने को दुःखी अथवा दुर्भाग्यपूर्ण मानते हैं। वे ईमानदारी से परिश्रम करते, पाये हुए पर संतोष करते और प्रसन्नतापूर्वक जीवनयापन करते हैं। ऐसे लोगों को देख हमारे मन में अपनी अपेक्षाकृत अधिक सुविधाओं के प्रति संतोष उत्पन्न न हो, इसका कोई कारण समझ में नहीं आता और तब तो हमको अपनी स्थिति पर गर्व तक हो सकता है, जब हम लूले, लंगड़े, अपाहिज अथवा नेत्रहीन व्यक्तियों की ओर सहानुभूतिपूर्वक देखें। ऐसे विवश तथा विकलांग व्यक्तियों को देखकर भी क्या हमें अपनी स्थिति के प्रति असंतोष रह सकता है ? क्या हमें यह विचार न आयेगा कि वास्तव में हम कितने भाग्यवान् हैं—भगवान् की हम पर कितनी महती कृपा है कि उसने हमें इस प्रकार शुभांग बनाया। हमें हाथ-पाँव, नाक-कान, आँख आदि सारे अंग पूर्ण एवं सक्षम दिये हैं। ऐसी स्थिति में भी यदि हमको अपनी स्थिति पर संतोष नहीं होता तो समझना चाहिए कि हम पर दुर्भाग्य की फटकार है। हम ईमानदार आदमी तो नहीं हैं—साथ ही उस परमपिता परमात्मा की कृपा के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रति कृतघ्न भी हैं। हम जान-बूझकर असंतुष्ट एवं अप्रसन्न रहना चाहते हैं। हमारे इस अहेतुक असंतोष का उपचार स्वयं ब्रह्मा भी नहीं कर सकते।

दृष्टिकोण में परिवर्तन

हम जब केवल अपने अभावों एवं कठिनाइयों के विषय में ही सोचते रहते हैं और अपने उपलब्ध साधनों की महत्ता तथा सामर्थ्य पर विचार नहीं करते—तब भी असंतोष के शिकार बन जाते हैं। यदि हम विचार करें कि अनेक लोग अपने वर्तमान साधनों का ही सदुपयोग करके न केवल संतुष्ट जीवन ही बिताते हैं, बल्कि उनके बल पर ऊँचे भी उठते चले जाते हैं, संसार के अधिकतर महापुरुष अभावों तथा कठिनाइयों के बीच रहकर ही ऊँचे उठे हैं। यदि हमारी तरह अपने अभावों तथा साधनहीनता का रोना लिये ही बैठे रहते, यदि वे अपनी स्थिति के प्रति असंतुष्ट अथवा खिन्न रहते रहे होते तो निश्चय ही उसी स्थिति में कीड़े-मकोड़ों की तरह तरस-तरस कर मर गये होते, इस प्रकार संसार में अमर न हो सकते। असंतुष्टि का कारण यदि साधनों की कमी रही होती तो अवश्य ही वे लोग भी दुःखी रहे होते और आज भी प्रत्येक साधनहीन व्यक्ति रोता-झींकता ही नजर आता। किसी के मुख पर प्रसन्नता तथा अधरों पर मुस्कान दिखाई न देती। जबकि हमारे जैसे कतिपय असंतोषियों को छोड़कर, दुनिया में अधिकतर लोग हँसते-खेलते ही जीते जा रहे हैं।

सुख संतोष में ही है और संतोष मनुष्य के अपने दृष्टिकोण पर निर्भर है। यदि हमारा दृष्टिकोण परिमार्जित तथा समीचीन है, तो कोई कारण नहीं कि हम अपनी वर्तमान स्थिति में संतुष्ट न रह सकें और हमें सुख प्राप्त न हो सके।

❐❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम अशांत और आतंकित न हों

कितना ही प्रयत्न करने पर भी, कितनी ही सावधानी बरतने पर भी, ऐसा संभव नहीं कि मनुष्य के जीवन में अप्रिय परिस्थितियाँ प्रस्तुत न हों। यहाँ सीधा और सरल जीवन किसी का भी नहीं है। अपनी तरफ से मनुष्य शांत, संतोषी और संयमी रहे, किसी से कुछ न कहे, कुछ न चाहे तो भी दूसरे लोग उसे शांतिपूर्वक समय काट ही लेने देंगे इसका कोई निश्चय नहीं। कई बार तो सीधे और सरल व्यक्तियों से अधिक लाभ उठाने के लिए दुष्ट-दुर्जनों की लालसा और भी तीव्र हो उठती है। कठिन प्रतिरोध की संभावना न देखकर सरल व्यक्तियों को सताने में दुर्जन कुछ न कुछ लाभ ही सोचते हैं। सताने पर कुछ न कुछ वस्तुएँ मिल जाती हैं और दूसरों को आतंकित करने, डराने का एक उदाहरण उनके हाथ लग जाता है।

अन्यान्य कठिनाइयाँ

हम सबके शरीर अब जैसे कुछ बन गए हैं, उनमें पग-पग पर कोई बीमारी उठ खड़ी होने की आशंका रहती है। प्रकृति का संतुलन एटम बमों के परीक्षण से, वृक्ष-वनस्पतियाँ कम हो जाने से, कारखानों के धुएँ से हवा गंदी होते रहने से बिगड़ता चला जा रहा है, उसके कारण दैवी विपत्ति की तरह कई बार बीमारियाँ फूट पड़ती हैं और संयमी लोग भी अपना स्वास्थ्य खो बैठते हैं। खाद्य पदार्थों का अशुद्ध स्वरूप में प्राप्त होना, उनमें पोषक तत्त्व घटते जाना, आहार-विहार की अप्राकृतिक परंपरा के साथ घिसटते चलने की विवशता आदि कितने ही कारण ऐसे हैं, जो संयमी लोगों को भी बीमारी की ओर घसीट ले जाते हैं।

कौन ऐसा है जिसे प्रियजनों की मृत्यु का शोक सहन नहीं करना पड़ता। इस नाशवान् दुनिया में सभी तो मरणधर्मा होकर जन्मे हैं। मरघटों की चिताएँ सुलगती ही रहती हैं। जन्म की भाँति मृत्यु भी इस संसार की एक सुनिश्चित सचाई है। अपने घर के,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने परिवार के, अपने प्रिय समाज के कोई न कोई स्वजन, स्नेही मरेंगे ही और मरने पर शोक-संताप होगा ही। माताओं को अपनी गोदी के खेलते हुए प्राण प्रिय बच्चों का शोक सहना पड़ता है। पत्नियाँ अपने जीवनाधार पतियों का अर्थी पर कसा जाना देखती हैं। मित्र, मित्र से बिछुड़ते हैं। भाई-बहिन, साले-बहनोई, दामाद, पिता, माता, बेटे-पोते आगे-पीछे समय-असमय मरते ही रहते हैं। जिनके ऊपर बीतती है वे उसे वज्रपात जैसा समझते हैं, बाकी लोग उसे एक बहुत छोटी-सी नगण्य घटना, क्षणिक कौतूहल मात्र मानकर दिखावटी सहानुभूति प्रकट करते हुए, उपेक्षा करते रहते हैं। यह क्रम संसार में अनादिकाल से चला आ रहा है।

परिवर्तित परिस्थितियाँ

परिस्थितियाँ मनुष्यों को स्थान-परिवर्तन करने के लिए भी विवश करती रहती हैं। नौकरी पेशा वालों की बदली होती रहती है। व्यापार, शिक्षा या अन्य कार्यों के कारण पति-पत्नी को अलग-अलग रहना पड़ता है। हवा के झोंके में उड़ते हुए सूखे पत्तों की तरह परम स्नेही मनुष्य भी कई बार यहाँ से वहाँ चले जाते हैं और उनका बिछोह कसकता रहता है। आर्थिक हानियों के अवसर बुद्धिमानों के सामने भी आते रहते हैं। चतुर व्यापारी कई बार ऐसे उतार-चढ़ावों के बीच फँस जाते हैं कि उन्हें अपनी आजीविका और प्रतिष्ठा दोनों से ही हाथ धोना पड़ता है। दैवी प्रकोप से, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, भूकंप, बाढ़, अग्निकांड, चोरी, डकैती, कमाऊ व्यक्ति की मृत्यु, प्रतिस्पर्धा, भावों की तेजी-मंदी, विश्वासघात, ठगी आदि कितने ही आकस्मिक कारण ऐसे हो सकते हैं, जिनके कारण अनायास ही बहुत बड़ा आर्थिक आघात लगे और उसके फलस्वरूप भारी हानि उठानी पड़े, चलती हुई गाड़ी पटरी पर से उतर जाए और अप्रत्याशित परिस्थितियों का सामना करना पड़े।

परीक्षा की तैयारी में लगे हुए छात्रों में से ३५ प्रतिशत उत्तीर्ण और ६५ प्रतिशत अनुत्तीर्ण होते हैं। नौकरी के लिए खाली जगहों में एक स्थान के पीछे हजारों अर्जी पहुँचती हैं। स्थान तो एक को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मिलता है, बाकी को निराश रहना पड़ता है। कितने ही प्रेम अभिनयों का दुःखद अंत होता है। सुनहरे सपने परिस्थितियों की ठोकर खाकर चूर-चूर हो जाते हैं। इस प्रकार असफलता, निराशा, हानि, चिंता, प्रतिकूलता और परेशानी के अवसर हर मनुष्य के सामने छोटे या बड़े रूप में आते ही रहते हैं। उनसे पूर्णतया सुरक्षित रहना किसी के लिए भी संभव नहीं। इच्छा या अनिच्छा से प्रतिकूलताओं का सामना करना ही पड़ता है। रोकर या हँसकर उन्हें भुगतना ही पड़ता है।

भावावेश और मानसिक दुर्बलता

मानसिक दृष्टि से दुर्बल और भावावेश में बहने वाले व्यक्ति इन छोटी-छोटी प्रतिकूलताओं में अपना संतुलन खो बैठते हैं और परेशानी में ऐसे बौखला जाते हैं कि उनका मस्तिष्क विक्षिप्त एवं उद्विग्न होकर ऐसी विपन्न स्थिति में जा पहुँचता है कि क्या करना, क्या न करना यह वे बिल्कुल भी नहीं सोच पाते। ऐसी स्थिति में वे जो भी कदम उठाते हैं वह प्रायः गलत ही होता है। विक्षोभ की स्थिति में किए हुए निर्णय आमतौर से ऐसे होते हैं, जिनसे विपत्ति से निकलने का मार्ग नहीं मिलता वरन् उलटे कठिनाइयों के और अधिक गहरे दलदल में फँस जाने का खतरा सामने आ खड़ा होता है। कई बार लोग घर छोड़कर भाग निकलने, आत्महत्या कर लेने, कपड़े रंगाकर बाबाजी हो जाने आदि की ऐसी गलतियाँ कर बैठते हैं, जिन पर पीछे केवल पश्चात्ताप ही करना शेष रह जाता है। कई बार उद्विग्न लोग उन पर बरस पड़ते हैं, वे जिन्हें प्रतिकूलता का कारण समझते हैं। गाली-गलौज, मार-पीट, फौजदारी, कत्ल, हत्या आदि की दुर्घटनाएँ प्रायः आवेश की स्थिति में ही की जाती हैं और पीछे इनकी प्रतिक्रिया में इतनी हानि उठानी पड़ती है, जो उस कारण से भी अधिक महँगी पड़ती है, जिसके लिए यह सब किया गया था।

कहते हैं कि—"विपत्ति अकेली नहीं आती, वह अपने साथ और भी अनेकों मुसीबतें लिए आती है।" कारण स्पष्ट है कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रतिकूलता से घबराया हुआ मनुष्य यह सोच नहीं पाता कि अब उसे क्या करना चाहिए ? साधारण कठिनाइयों से पार होने में ही काफी धैर्य सूझ-बूझ और दूरदर्शिता की आवश्यकता पड़ती है, फिर कुछ अधिक परेशानी की बात हो तब तो और भी अधिक सही मानसिक संतुलन अभीष्ट होता है। यह न रहे तो विपत्तिग्रस्त मनुष्य किंकर्तव्यविमूढ़ होकर प्रायः वह करने लगता है, जो न करना चाहिए था। फलस्वरूप विपत्ति की नई शाखाएँ फूट पड़ती हैं और कठिनाई का नया दौर आरंभ हो जाता है। जब कभी ठंडे मस्तिष्क से विचार करने का अवसर आता है, तब मनुष्य पछताता है और सोचता है कि आगत विपत्ति नहीं टल सकती थी तो कोई बात न थी, अपने मानसिक संतुलन को तो विवेक द्वारा बचाया ही जा सकता था और जो परेशानियाँ अपनी भूलों के कारण सिर पर ओढ़ ली गईं उनसे तो बचा ही जा सकता था।

शोक-संताप के अवसर

घर में किसी की मृत्यु हो गई, एक प्रिय पात्र चला गया, उसके जाने से हानि भी हुई, धक्का भी लगा और शोक के कारण रुलाई भी आई। पर यदि लगातार रोते ही रहा जाए, भोजन त्याग दिया जाए, मूर्च्छित पड़े रहा जाए, उस शोक को ही स्मरण रखा जाए तो परिणाम एक ही होना है कि रहे-सहे स्वास्थ्य का नाश और उस गड़बड़ी में साधारण कार्यक्रमों के नष्ट होने से दूनी विपत्ति का उद्भव। कमजोर आँखों वाले अधिक रोते रहें तो उनकी आँखों की रोशनी चली जाती है। दिल की धड़कन, ब्लडप्रेशर, अनिद्रा, उन्माद, मूर्च्छा, अपच, उलटी, सिर दर्द आदि अनेकों नये रोग उठ खड़े होते हैं। दूसरे लोग उस शोक-संतप्त को समझाने-बुझाने या उसकी सहानुभूति में लगे रहते हैं और साधारण व्यवस्था को भूल जाते हैं तो दूसरी ओर से भी काम बिगड़ते हैं। दुधारू पशु समय पर न दुहे जाने, चारा-पानी ठीक प्रकार न मिलने से दूध देना बंद कर देते हैं, बिना देखभाल के खेती या व्यापार खराब होता है। बच्चे परेशान होते हैं। चोरों की ऐसे ही मौके पर घात

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लगती है। दुश्मनों को हँसने का मौका मिलता है। उस मृत्यु के कारण उत्पन्न हुए नये कामों और उत्तरदायित्वों के निबाहने के लिए जो महत्त्वपूर्ण हेर-फेर करने आवश्यक होते हैं, वह भी नहीं सूझ पड़ते। इस प्रकार वह मृत्यु-शोक अपने साथ अनेकों नई विपत्तियाँ उत्पन्न करने वाला सिद्ध होता है।

यदि दूरदर्शिता के साथ यह सोच लिया गया होता कि घटित हुई घटना अब लौट नहीं सकती, गया व्यक्ति आ नहीं सकता, अंततः शोक को समाप्त करके साधारण क्रम अपनाना ही पड़ेगा, तो उस कार्य को बिना अधिक क्षति उठाए और बिना अधिक समय गँवाये ही पूरा क्यों न कर लिया जाए। इस प्रकार सोचने वाले अपना मन सँभालते हैं; धैर्य, विवेक, संतोष और दूरदर्शिता से काम लेते हैं। शोक घटाकर संतुलन ठीक करते और स्वाभाविक जीवन की व्यवस्था जल्दी ही बना लेते हैं। ऐसे लोग अनावश्यक रूप में स्वयं उत्पन्न की गई विपत्ति से बच जाते हैं।

असफलता और निराशा

असफलता के समय दिल छोटा करने और निराश होने की क्या बात है। प्रथम प्रयास अवश्य ही सफल होना चाहिए, यह कोई जरूरी नहीं। संसार में प्रयत्नशील व्यक्ति भी दो तिहाई असफलता और एक तिहाई सफलता का अनुमान लगाकर काम करते हैं। उसी पर संतोष करते हैं और उतना ही पर्याप्त भी मानते हैं। एक परीक्षा में एक बार फेल हो जाना कोई ऐसी विपत्ति नहीं है जिसके लिए अत्यधिक चिंतित और निराश हुआ जाए। अब की बार फेल होने पर दो वर्ष की तैयारी में अच्छा डिवीजन मिल सकता है और आगे की नींव पक्की हो सकती है। जिंदगी इतनी लंबी है कि उसमें दो-चार असफलताओं के लिए भी जगह रखनी पड़ती है।

हर काम में सदा सफलता ही मिलती रहे तब तो मनुष्य मनुष्य न रहकर देवताओं की श्रेणी में गिना जाने लगे। यह सोचकर परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने वाले अपना साहस समेटे रह सकते हैं और उस खिन्नता को भुलाकर दूने उत्साह से अगली

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तैयारी में लग सकते हैं। इस बार नौकरी न मिली, इस जगह पर नियुक्ति न हुई, तरक्की का अब की बार अवसर न मिला तो आगे मिलेगा। इसमें हतोत्साहित होने की कौन-सी बात है ? उन्नति के लिए प्रयत्न करना चाहिए, पर जो परिणाम सामने आयें उसे संतोष और धैर्यपूर्वक हँसते-मुस्कराते हुए शिरोधार्य ही करना चाहिए।

घाटा और तंगी

आर्थिक घाटा लग गया तो हैरानी की क्या बात है ? अपने पास यदि क्षमता, प्रतिभा, साहस, पुरुषार्थ और कौशल मौजूद हैं तो आज न सही, चार दिन बाद फिर आवश्यक साधन जुट जाएँगे। न भी जुट पायें तो थोड़ा "स्टेंडर्ड" (स्तर) घटाकर कम खर्च में भी अच्छा खासा जीवन जिया जा सकता है। गरीब लोग भी तो आनंद और उल्लास की जिंदगी जीते हैं, फिर हम भी वैसा क्यों न कर सकेंगे ? खर्चों में कमी कर डालने से गरीबी अखरने वाली नहीं रहती। समय ने हमारी आमदनी पर कुल्हाड़ा चलाया तो हम अपने खर्चों में काट-छाँटकर आसानी से उस संतुलन को पूरा कर सकते हैं। समय के अनुरूप अपने स्तर को घटा लेने का साहस जिसमें मौजूद है, जिसे हल्के दर्जे की मजूरी में अपना गौरव नष्ट होते नहीं दीखता उसके लिए घाटे की स्थिति में भी परेशानी का कोई कारण नहीं।

परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढाल लेने का जीवन-विज्ञान जिन्होंने सीखा है उनके लिए अमीरी की तरह गरीबी में भी हँसने और प्रसन्न रहने का कारण मौजूद है। जिन्हें श्रम करने में शरम नहीं आती, जिन्होंने प्रयत्न—पुरुषार्थ, साहस और उल्लास को नहीं खोया है, वे आजीविका का उपयुक्त मार्ग आज नहीं तो कल प्राप्त कर लेंगे। कल पंजाब में सब कुछ खोकर आए हुए और आज ठीक प्रकार जीवनयापन करने वाले शरणार्थी भाइयों का उदाहरण हमारे सामने है। अधीरता तो कायरता का चिह्न है। मुफ्त की मौज उड़ाने वाले हरामखोर हानि का रोना रोयें तो बात समझ में आती है, पर जिनकी नसों में पुरुषार्थ मौजूद है वह तो जमीन में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लात मारकर कहीं से भी पानी निकाल लेगा। वह क्यों निराश होगा, वह क्यों सिर धुनेगा ? लक्ष्मी पुरुषार्थ की चेरी है। जिसके पास पुरुषार्थ है उसे लक्ष्मी के चले जाने की चिंता क्यों करनी चाहिए ?

मतभेदों को सुलझाना

मतभेद के, लड़ाई-झगड़े के कई कारण हो सकते हैं। ठंडे मस्तिष्क से, शांत चित्त से विचार-विनिमय कर लें तो हम उनमें से कितनों को ही चुटकी बजाते सुलझा सकते हैं। उत्तेजित दिमाग तिल को ताड़ बना देता है और राई को पर्वत बनाता है। संशय, अविश्वास और विक्षोभ से भरा हुआ मन दूसरों में अगणित प्रकार के दुर्भावों की कल्पना किया करता है। उन्हें दूसरे सभी दुष्ट, दुर्जन, द्वेष रखने वाले, स्वार्थी, आक्रमणकारी दीखते रहते हैं। पर यदि चढ़े हुए दिमाग का पारा नीचे उतार लिया जाए तो लगेगा कि मतभेद के कारण बहुत ही छोटे थे। कुछ अपने को सुधारकर, कुछ उन्हें समझा-बुझाकर ठीक रास्ता आसानी से निकल सकता है। समझौता करके, मिल-जुलकर समन्वय और सहिष्णुता की—सहअस्तित्व की नीति पर चलते हुए मतभेद रखने वाले लोगों के साथ भी गुजारा करने का रास्ता निकल सकता है।

आवेश में और उत्तेजना में कहे हुए कोई कटु शब्द हमें भुला ही देने चाहिए। जूड़ी, सन्निपात में बक-झक करने वाले रोगी की बातें कौन स्मरण रखता है ? किसी नासमझी या गलतफहमी के कारण यदि कभी कुछ कटु वचन किसी ने कह दिया तो उसे स्मरण रखे रहने से कुछ लाभ नहीं। स्वाभाविक स्थिति प्रेम-सहयोग और सहिष्णुता की ही है। वही हमें अपने प्रियजनों के बीच बनाए रहनी चाहिए और वही नीति संबंधित सर्वसाधारण के साथ बरतना चाहिए। अपनी ओर से मीठे और सज्जनतापूर्वक वचन बोलते रहने और शिष्ट व्यवहार करते रहने से लड़ाई-झगड़े का बहुत-सा आधार अपने आप ही नष्ट हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चिंता और निराशा की व्यर्थता

भविष्य की आशंकाओं से चिंतित और आतंकित कभी नहीं होना चाहिए। आज की अपेक्षा कल और भी अच्छी परिस्थितियों की आशा करना, यही वह संबल है, जिसके आधार पर प्रगति के पथ पर मनुष्य सीधा चलता रह सकता है। जो निराश हो गया, जिसकी हिम्मत टूट गई, जिसकी आशा का दीपक बुझ गया, जिसे अपना भविष्य अंधकारमय दीखता रहता है, वह तो मृतक समान है। जिंदगी उसके लिए भार बन जायेगी और वह काटे नहीं, न कटेगी। यह दुनिया कायरों और डरपोकों के लिए नहीं, साहसी और शूरवीरों के लिए बनी है। हमें साहसी और निर्भीक होकर ही जीना चाहिए।

प्रतिकूलताओं से लड़ने का साहस रखना और जब वे सामने आ जायें, तो हिम्मत वाले पहलवान के समान उनको परास्त करने के लिए जुट जाना यही बहादुरी का काम है। बहादुर को देखकर आधी विपत्ति अपने आप भाग जाती है। मनुष्य प्रयत्न करके प्रतिकूलताओं को निश्चय ही परास्त कर सकता है। अंधकार के बाद प्रकाश का आना जब निश्चित है, तो विपत्ति ही सदा कैसे टिकी रह सकती है ? हम हिम्मत बाँधें तो ईश्वर की मदद जरूर मिलेगी। परमात्मा सदा से प्रयत्नशीलों की, साहसी, विवेकवान् और बहादुरों की सहायता करता रहा है फिर हमारी ही क्यों न करेगा ? शांति के बाद यदि अशांति की परिस्थिति आ धमकी, तो परिवर्तन चक्र इन्हें सदा थोड़े ही बना रहने देगा। अशांति के बाद शांति के क्षणों का, विपत्ति के बाद संपत्ति का आना भी उतना ही निश्चित है, जितना रात के बाद दिन का आना है। फिर हमें निराशा क्यों हो ? हम अशांत और आतंकित क्यों बनें ?

❐❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रसन्न रहें—प्रफुल्ल बनें

रुपये के दोनों भागों में भिन्न प्रकार की आकृति बनी होती है। एक तरफ कुछ और लिखा रहता है और दूसरी ओर दूसरी प्रकार के अंकन होते हैं। जिधर से भी हम उसे देखते हैं वही आकृति सामने आ जाती है। संसार में अच्छा और बुरा दोनों प्रकार का मसाला लगा हुआ है। ईंट और चूना अलग-अलग तरह की चीजें हैं, पर उन दोनों को मिलाकर ही इमारत बनती है। लगता है ईश्वर को इस दुनिया की इमारत बनाते समय अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के पदार्थों की जरूरत अनुभव हुई होगी। जो भी हो, यह एक तथ्य है कि यहाँ परस्पर विरोधी दो सत्ताएँ मौजूद हैं। प्रिय-अप्रिय, सुख-दुःख, पुण्य-पाप, मित्र-शत्रु, शुभ-अशुभ, विजय-पराजय, सत-तम, देव-असुर। यह दोनों ही परस्पर विरोधी कहिए या एक दूसरे के पूरक कहिए, यहाँ मौजूद हैं।

ईश्वर की विविध रचना

यह भिन्नता परमात्मा ने क्यों बनाई ? इसका वास्तविक कारण तो वही जानता है, पर इतना हम सब जानते हैं कि विकास और विनोद की दृष्टि से संघर्ष आवश्यक है, उसके बिना गतिहीनता का सन्नाटा छा जाएगा। सब भले, निरोग, सज्जन, विद्वान् हों तो फिर कचहरी, पुलिस, फौज, युद्ध, धर पकड, नियंत्रण, अस्पताल, जेल, धर्मोपदेश, उपार्जन, संग्रह लोक सेवा, शासन आदि की कोई जरूरत ही न रह जायेगी। दुनिया में जो इतनी हलचल दिखाई पड़ती है वह सब नष्ट हो जायेगी और सर्वत्र सन्नाटा छाया रहेगा। संभव है विनोदी परमेश्वर ने अपनी दुनिया को बिल्ली-चूहे का खिलौना जैसा बनाकर खड़ा किया है।

जो हो, हम अपनी मनमर्जी की दुनिया नहीं बना सकते। यह जैसे भी कुछ है उसी में काम चलाना पड़ता है। सुधार के लिए समय-समय पर नेता, गुरु, मार्गदर्शक, विचारक और अवतार यहाँ आते रहते हैं और कुछ समय के लिए असंतुलित स्थिति को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संतुलित कर जाते हैं। बिगाड़ फिर शुरू हो जाता है और कुछ दिन बाद कोई नया अवतार फिर आता है। इस प्रकार बिगाड़ने वाली आसुरी और सुधारने वाली दैवी शक्तियाँ अपना-अपना काम बराबर करती रहती है। यहाँ यह रस्साकशी अनादि काल से चलती चली आ रही है और आगे भी चलती रहेगी।

शुभ में अनुरक्ति अशुभ की उपेक्षा

सोचना यह है कि यहाँ हम किस प्रकार सोचें और करें, जिससे हमारे आनंद-उद्देश्य में विक्षेप उत्पन्न न हों। उपाय एक ही है कि हम शुभ में अनुरक्त रहें और अशुभ की उपेक्षा करें। उपेक्षा से मतलब यह नहीं कि उसे सुधारा न जाए, गंदगी को जहाँ का तहाँ पड़ा रहने दिया जाए, वरन् यह है कि मस्तिष्क को उससे अत्यधिक प्रभावित न होने दिया जाए, उसी का चिंतन सदा न करते रहा जाये। अनुरक्ति से मतलब यह है कि यहाँ जो कुछ श्रेष्ठ है, शुभ है, उससे अधिक संपर्क बढ़ाया जाए, उसकी समीपता प्राप्त की जाए और उसी के संबंध में मस्तिष्क को अधिक सोच-विचार करने दिया जाए।

हमारे मन और मस्तिष्क की बनावट दर्पण की तरह है, इसमें जिस प्रकार की छाया पड़ती है, उसका रूप वैसा ही दीखने लगता है। जो वस्तु सामने रखी होगी, दर्पण में भी वैसी ही आकृति प्रतिविंबित होगी। जैसे लोगों के संपर्क में रहा जायेगा, जैसा साहित्य पढा जायेगा, जैसे वातावरण में बसा जायेगा, जैसा सोचते रहा जायेगा, मन उसी ढाँचे में ढलने लगेगा और फिर धीरे-धीरे अपना स्वभाव एवं दृष्टिकोण भी वैसा ही बन जायेगा। छोटे बच्चे जो कुछ देखते-सुनते हैं, उसी की नकल बनाने लगते हैं। उनका सारा शिक्षण ही इस प्रकार चलता है। विकास का क्रम भी यही है। थोड़े व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो अपनी मनःस्थिति से प्रतिकूलता को भी अनुकूलता में परिणत कर लेते हैं, पर अधिकांश ऐसे होते हैं जो परिस्थितियों के प्रवाह में बहने लगते हैं। मस्तिष्क में जिस प्रकार के विचार भरे रहते हैं वस्तुतः उसका संग्रह ही सच्ची परिस्थिति है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसी के प्रभाव से मानव-जीवन की दिशाएँ बनती और मुड़ती रहती हैं।

विचारों का आकर्षण

अपने मस्तिष्क में किस प्रकार की विचारधाराएँ उठती, बनती और जमती हैं इसे देखना और समझना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसी के आधार पर तो जीवन की दिशा बननी है। हम जैसा सोचते हैं वैसा करने लगते हैं और जो करते हैं वही हमारा व्यक्तित्व एवं चरित्र माना जाता है। हम क्या बन रहे हैं, बनने जा रहे हैं और अंततः क्या बन जायेंगे—इसका निष्कर्ष निकालना कुछ अधिक कठिन नहीं है। किस स्तर की विचारधारा मस्तिष्क में घूमती रहती है, किन भावनाओं से प्रेम है, यह मालूम हो जाने पर यह अनुमान सहज ही लग जाता है कि हमारा भविष्य क्या बनने जा रहा है ?

अच्छा भाग्य—उज्ज्वल भविष्य

यह मान्यता है कि भाग्य की कर्म रेखाएँ मस्तक की खोपड़ी के भीतर लिखी होती हैं। जो कुछ उसमें लिखा हुआ है वही होकर रहता है। यह मान्यता इस अर्थ में तो सर्वथा सत्य मालूम पड़ती है कि खोपड़ी के भीतर रहने वाले मस्तिष्क में जिस तरह की भावना, विचारधारा, मान्यता तथा अभिरुचि जम गई होगी उसी दिशा में उसका जीवन मुड़ेगा और वैसी ही परिस्थितियाँ उसे उपलब्ध हो जायेंगी। मनीषियों का कथन है कि "मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है," क्योंकि वह स्वयं ही अपने लिए किसी विचार शैली को पसंद करता है और जिसे वह चुन लेता है उसी का प्रतिफल उसके सामने आकर खड़ा हो जाता है।

हर कोई यह चाहता है कि उसका भविष्य उज्ज्वल बने, सदा प्रसन्नता रहे और मंगलमय परिस्थितियों एवं व्यक्तियों से संपर्क रहा करे। इस इच्छा की पूर्ति तनिक भी असंभव नहीं है, यदि अपने विचारों पर नियंत्रण करना, कुविचारों को हटाना और सद्विचारों को अपनाना सीख लिया जाए। विचारों में एक उच्चकोटि की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आकर्षण शक्ति रहती है। वे उसी प्रकार के व्यक्तियों, साधनों और परिस्थितियों को खींचकर पास बुला लेते हैं, जैसे कि वे स्वयं होते हैं। चोर का चोरों से वास्ता बढ़ता जाता है और सज्जनों के सत्संग में सत्पुरुषों की संख्या बढ़ती जाती है। कामुकता के गंदे विचार जिन मस्तिष्कों में भरे पड़े रहते हैं, उन्हें अश्लील पुस्तकें, बेहूदी तस्वीरें, भद्दे फिल्म, घृणित स्त्रियाँ, दुष्ट साथी कहीं न कहीं से मिल ही जाते हैं। यह सब सरंजाम जुट जाने के बाद वह दुर्गति भी अपने आप आगे आ जाती है, जो ऐसे लोगों के लिए उचित है।

बुराई में अच्छाई खोजें

बुराइयों की ओर से हमें अन्यमनस्क रहना चाहिए। उन्हें बढ़ने से रोकना तो चाहिए, पर निरंतर उन्हीं का चिंतन करें और उन्हीं में तन्मय होकर अपनी मनोभूमि को भी वैसी ही गंदी बना लें, यह उचित नहीं। बुरी बातों को सोचते रहने से मन में क्रोध, क्षोभ, घृणा, द्वेष और दुःख की ही भावनाएँ बढ़ेंगी और इस बढ़ोत्तरी से न अपना आंतरिक विकास होगा वरन् उलटे बाहरी स्वभाव में निंदा, ईर्ष्या, द्वेष, कुढ़न का समावेश हो जाने से अपने व्यक्तित्व का स्तर नीचा हो जायेगा। चिड़चिड़ापन, झुंझलाहट, अविश्वास, तिरस्कार, क्रोध, आवेश का स्वभाव उन लोगों का बन जाता है, जो दुनिया में बुराई ही बुराई ढूँढ़ते, देखते, सुनते और मानते रहते हैं। यह लाभदायक नहीं हानिकारक प्रक्रिया है। चित्त की दुर्भावनाओं में डुबाए रहना कहाँ की बुद्धिमानी है ? इसमें अपना तो अहित ही अहित है।

दुनिया में जबकि बुराई ही नहीं अच्छाई भी मौजूद है, तो उसे ही क्यों न ढूँढ़ा, सोचा, चुना और अपनाया जाये, जिससे अपने मन को शांति, संतोष और प्रसन्नता अनुभव हो। लोगों ने अपने साथ अनेकों उपकार और अनेकों अपकार किये होते हैं। अपकारों को याद रखा जाए और उपकारों को भुला दिया जाए, तो दुनिया अत्यंत निःकृष्ट कोटि के स्वार्थियों से भरी प्रतीत होगी। किंतु यदि अपकारों की उपेक्षा कर उपकारों को ही स्मरण रखा जाए, तो ऐसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रतीत होगा कि इस संसार में अधिकतर लोग देवता जैसे स्वभाव वाले ही रहते हैं।

भीतरी परिवर्तन से बाह्य परिवर्तन

संसार को असुरों से भरा देख-देखकर कुढ़ते रहने का यदि अपना मन हो तो इसका बहुत सरल उपाय है कि मनुष्यों की बुराइयों को ढूँढ़ा, देखा, सुना और सोचा जाए। इसके विपरीत यदि ऐसा विचार हो कि संसार में देवताओं का निवास देखकर संतोष और प्रफुल्लता की अनुभूति उपलब्ध हो तो वह मार्ग भी सरल है। करना केवल इतना पड़ेगा कि लोगों के सद्गुण, सत्कर्म, सद्भाव और सत्प्रयत्नों को खोजने में मन लगाना होगा और उनकी छोटी-मोटी भूलों को, उपेक्षा एवं अपूर्णता को एक छोटी-सी झाँकी मात्र समझकर उपेक्षा में डाल देना होगा। इस आंतरिक परिवर्तन से बाहरी दुनिया बिलकुल दूसरी प्रकार की दिखाई देने लगेगी।

द्वेष की फूटी आँख से देखने पर यहाँ सर्वत्र अंधेरा ही अंधेरा सूझेगा, पर यदि प्रेम की ज्योति की पुतली में चमक होगी तो यह सुंदर तस्वीर की दुनियाँ अत्यंत मनोरम और शोभा-सौंदर्य से परिपूर्ण दीख पड़ेगी। दुनिया को बदलने से पहले हमें अपनी आँख का इलाज करना होगा। संसार में बिखरे हुए सब काँटे हटाकर निष्कंटक मार्ग बना सकना कठिन है। हाँ, यह हो सकता है कि पैरों में जूते पहनकर काँटे-कंकड़ों को कुचलते हुए चाहे जिधर से अपना रास्ता बना लिया जाए। अपने देखने का ढंग बदल लिया जाए, अपनी विचार शैली को यदि सुधार लिया जाए तो यहाँ प्रसन्नता और आनंददायक परिस्थितियाँ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो सकती हैं। अपने छोटे-मोटे साधन और भले-बुरे स्वजन संबंधी ही प्राण प्रिय दीखने लग सकते हैं। संतोष के लिए यहाँ पर्याप्त साधन मौजूद हैं।

अच्छाई को ढूँढ़ें और अपनाएँ

संसार में बुराई बहुत है पर अच्छाई से अधिक नहीं। यदि यहाँ पाप और अशुभ ही अधिक होता तो आनंदी आत्मा इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भूलोक में अवतरित होने के लिए स्वेच्छापूर्वक कभी भी तैयार न होती। कोई मरना नहीं चाहता, मरते समय दुःख मानता है, उसका तात्पर्य ही यह है कि यहाँ उसे अप्रिय की अपेक्षा प्रिय, दुःख की अपेक्षा सुख अधिक दिखाई दिया है। दुःखी व्यक्ति तो आत्महत्या तक के लिए उतारू हो जाता है। पर हम सब मरने की बात सुनने तक से घबराते हैं। आत्मा यह अनुभव करती है कि यहाँ दुःख की अपेक्षा सुख अधिक है। बुराई की तुलना में अच्छाई बढ़ी-चढ़ी है, इसलिए यहाँ ही रहना चाहिए। इस शरीर में ही रहना चाहिए। इसे छोड़कर नहीं जाना चाहिए। मौत का डर लगना इसी तथ्य की पुष्टि करता है।

गाँधीजी के तीन गुरु

गाँधीजी की चौकी पर तीन बंदरों के खिलौने रखे रहते थे। एक ने मुँह पर अपने दोनों हाथ रखे थे, दूसरे ने कानों पर, तीसरे ने आँखों पर। इसका अर्थ यह था कि मुँह से न बुरी बात बोलो, कानों से न बुरी बात सुनो, आँखों से न बुरी बात देखो। गाँधीजी इन खिलौनों को अपना गुरु मानते थे और उनकी शिक्षाओं पर चलते थे। बुराइयों का प्रतिरोध भी वे सद्भावना से करते थे। लड़ाई करते हुए भी वे प्रतिपक्षी के प्रति प्रेम भावना रखते थे। किसी को भी वे दुष्ट नहीं मानते थे। उनकी मान्यता थी कि जो बुरा दीखता है, उसमें भी कितनी ही अच्छाइयाँ हो सकती हैं और जो अच्छा दीखता है, उसमें भी कोई न कोई दोष होना संभव है। इसलिए किसी का पूर्ण विश्लेषण न करके उसके श्रेष्ठ भाग को ही देखा और स्पर्श किया जाना चाहिए। तीन बंदरों की शिक्षा इसी मार्ग पर चलने का हमें निर्देश करती है।

हर घड़ी कुढ़ते और कुड़कुड़ाते और बड़बड़ाते रहने की आदत बहुत ही बुरी, हानिकारक और विपत्तियों को जन्म देने वाली है। इससे अपने भी पराये हो जाते हैं। निंदा और कटाक्ष करते रहने वाला दूसरों की आँखों में अपना सम्मान खो बैठता है। प्रशंसा और प्रसन्नता की आदत जिन्होंने अपना ली है उनके आस-पास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बच्चे-बूढ़े सभी घिरे रहते हैं। गुलाब के फूल पर मधु-मक्खियाँ और भौंरे घिरे रहते हैं। उसकी सुगंध से दूर-दूर तक के लोगों का चित्त प्रसन्न रहता है। संतुष्ट और प्रसन्नचित्त रहने वाले, हर घड़ी मधुर मुसकान जिसके चेहरे पर खेलती रहती है वस्तुतः गुलाब के फूल के समान है, जो अपना जीवन धन्य बनाता है और दूसरों पर आनंद का उपहार बरसाता हुआ उनका स्नेह, आशीर्वाद संपादन करता रहता है।

प्रसन्नता की विभूति

प्रसन्न रह सकना इस संसार का बहुत बड़ा सुख है। हर कोई प्रसन्नता चाहता है, आनंद की खोज में है और विनोद तथा उल्लासमयी परिस्थितियों को ढूँढता है। यह आकांक्षा निश्चय ही पूर्ण हो सकती है, यदि हम बुराइयों की उपेक्षा करना और अच्छाइयों से लिपटे रहना पसंद करें। इस संसार में सभी कुछ है। अच्छाई भी कम नहीं है। बुरे आदमियों में से भी अच्छाई ढूँढ़ें। आपत्तियों से जो शिक्षा मिलती है, उसे कठोर अध्यापक द्वारा कान ऐंठकर दी हुई सिखावन की तरह सीखें। उपकारों को स्मरण रखें। जहाँ जो कुछ श्रेष्ठ हो रहा है उसे सुनें और समझें। "अच्छा देखो और प्रसन्न रहो" का मंत्र हमें भली प्रकार जपना और हृदयंगम करना चाहिए।

स्वभाव में प्रसन्नता को सम्मिलित कर लेने में जीवन की बहुत बड़ी सार्थकता और सफलता सन्निहित है। मुँह लटकाये रहने की, रूठने की, भवें तरेरे रहने की आदत छोड़ देनी चाहिए। हँसते और मुस्कराते रहने वाले का आधा डर तो अपने आप ही चला जाता है और आधे डर को वह अपने पुरुषार्थ तथा स्वजनों के सहयोग से दूर कर लेता है, जो प्रसन्न मुख रहने के कारण अनायास ही मित्रता करने लगे थे। प्रसन्नता, मित्र बढ़ाने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है। जो हँसता है उसकी हँसी में सम्मिलित रहने के लिए दसियों व्यक्ति लालायित रहते हैं। पर जो सांप की तरह मुँह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

फुलाए बैठा रहता है और व्यंग बाणों की, कटुवचनों की फुसकार ही छोड़ता रहता है उसके समीप जाने की हिम्मत कौन करेगा ?

अप्रसन्नता का एकमात्र कारण दोष-दर्शक दृष्टिकोण ही है। यदि अपना मन कलुषित न हो, दृष्टिकोण उदार रहे और दूसरों की अच्छाई को समझ सकने की बुद्धि सजीव रहे तो फिर प्रसन्नता का वातावरण ही सर्वत्र दिखाई देगा। आदत में प्रसन्नता और मुस्कान को शामिल कर लेने में तो भीतरी और बाहरी दोनों ही प्रसन्नताएँ गंगा-यमुना की तरह इकट्ठी होकर एक तीर्थ राज प्रयाग की—आनंदमय जीवन की रचना करती हैं। इस संगम पर स्नान करने वाला हर व्यक्ति शांति और प्रफुल्लता अनुभव करता है। हम अपनी प्रवृत्तियों को इसी दिशा में क्यों न मोड़ें ? कीचड़ में भी कमल खिल सकता है, तो हमें विपन्न परिस्थितियों में रहते हुए भी प्रफुल्लित रहने में क्या कठिनाई होनी चाहिए ?

❑❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अहंकार की असुरता से बचा जाए

इस संसार की हर वस्तु में अच्छाई के साथ-साथ कुछ बुराई भी मिली रहती है। कोई व्यक्ति या वस्तु यहाँ ऐसी नहीं बनी, जिसमें न्यूनाधिक मात्रा में गुण, दोषों का समावेश न हो। प्रत्येक अच्छाई अपने साथ कुछ बुराई छिपाए रहती है और प्रत्येक बुराई के पीछे कुछ अच्छाई का भी तत्त्व छिपा रहता है। सफलता और असफलता के बारे में यही बात लागू होती है। यों आमतौर से हर आदमी सफलता चाहता है और उसे प्राप्त कर प्रसन्न होता है। असफलता में हानि एवं खिन्नता अनुभव होती है। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि इच्छा पूर्ति में सुख और उसमें पड़ी हुई बाधा को दुःख माना गया है।

फूल में काँटा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इतना होते हुए भी सफलता में कुछ हानि और असफलता का कुछ लाभ भी होता है। असफलता हमें अपनी भूलों पर विचार करने का मौका देती है और यह सिखाती है कि हम जहाँ गलती करते रहे हैं, वहाँ अधिक ध्यान दें और उसमें सुधार करें। असावधानी बरतने और अधूरे मन से काम करने पर आमतौर से सब काम बिगड़ते हैं। श्रम से जी चुराने, आलस्य में पड़े रहने, समय-कुसमय का ध्यान न रखने से भी असफलता की संभावना बढ़ जाती है। कटु स्वभाव और अशिष्ट व्यवहार से भी दूसरे लोग चिढ़ते और असहयोगी बनते हैं, ऐसी दशा में भी अपनी इच्छा पूर्ति के मार्ग में बाधा उत्पन्न होती है। असफलता मिलने पर आमतौर से मनुष्य दूसरों पर उसका उत्तरदायित्व डालकर स्वयं निर्दोष बनना चाहता है, पर बुद्धिमत्ता का अंश जब जाग्रत् रहता है तब वह यह भी सोचता है कि मेरी भूल कहाँ-कहाँ रही और उसे कैसे सुधारा जाये ?

जिस प्रकार ऊधम मचाने और बताया हुआ काम न करने पर बच्चे को धमका देने पर वह रुकता, सोचता और बदलता है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसी प्रकार असफलता रूपी दैवी फटकार पड़ने पर मनुष्य को यह भी सोचना पड़ता है कि उसके लिए क्या करना उचित और क्या करना अनुचित था। अपनी गतिविधियों को सुधार लेने पर जहाँ बिगड़े काम के बनने की संभावना बढ़ जाती है वहाँ सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि मनुष्य को अपनी आदतों और गतिविधियों में सुधार करने का अवसर मिलता है। यह सुधार उस अमुक बिगड़े काम को बनाने में ही सहायक नहीं होता वरन् भविष्य के लिए सफलताओं का एक व्यवस्थित शिक्षण देकर प्रगति का मार्ग भी प्रशस्त कर देता है। इस प्रकार असफलता खेदजनक, कष्टकारक होते हुए भी कटुवादी सहृदय मित्र की तरह बहुत कुछ लाभदायक सिद्ध होती है।

लाभ के साथ हानि भी

सफलता की अच्छाई सर्वविदित है ही। उससे अभीष्ट लाभ प्राप्त होता है, दूसरे प्रशंसा करते हैं, अपना हौसला बढ़ता है, आदि-आदि लाभों को हम सब भलीभाँति जानते हैं और इसलिए उसे चाहते तथा पसंद भी करते हैं। पर उसमें एक छोटी बुराई भी छिपी रहती है, यदि उसकी ओर से असावधान रहा जाए तो वह हानिकारक भी सिद्ध होती है। इस बुराई का नाम है—'मद' या 'अहंकार'। सफलता पाकर मनुष्य इतराने लगता है, वह अपनी औकात भूल जाता है और एक सफलता को पाकर वह यह सोचने लगता है—"मुझसे बड़ा बुद्धिमान, चतुर और पुरुषार्थी कोई नहीं, मैं हर दिशा में चुटकी बजाते सफलता प्राप्त कर सकता हूँ।"

आत्म-विश्वास और अहंकार

आत्म-विश्वास होना अलग बात है, वह एक आध्यात्मिक गुण है, पर अहंकार तो उससे सर्वथा भिन्न वस्तु है। मोटे रूप में आत्म-विश्वास तथा अहंकार एक से दीखते हैं, पर उनमें जमीन-आसमान जैसा अंतर रहता है। कायरता और अहिंसा बाहर से देखने में एक सरीखी लगती हैं, पर उनकी मनोदशा में दिन-रात

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जैसा भेद रहता है। आत्म-विश्वासी आत्मा की महत्ता मानते हुए भी सावधानी, अध्यवसाय, परिस्थितियाँ, दूसरों का सहयोग, जागरूकता आदि बातों पर ही सफलता को अवलंबित समझता है और सफलता-असफलता की परवाह न करके अपने सुनिश्चित पथ पर मजबूती से पैर बढ़ाता हुआ चला जाता है।

आत्म-विश्वास का अर्थ है—अपने कर्तव्य पथ पर दृढ़ रहना और कठिनाइयों से तनिक भी विचलित न होना। अहंकार इससे भिन्न वस्तु है। इसे 'मद' इसलिए कहा गया है कि नशीली चीजें खाकर जिस प्रकार उन्मत्तता आ जाती है, उसी प्रकार एक छोटी सफलता पाकर मनुष्य सोचने लगता है कि मैं ही सब कुछ हूँ, मुझमें कोई त्रुटि नहीं, मेरी बुद्धि सारी दुनिया से बढ़कर है। जो चाहूँ सो चुटकी बजाते पूरा कर सकता हूँ। छोटी स्थिति के आदमी जिनके दिल और दिमाग छोटे हैं—कोई मामूली-सा लाभ, पद, श्रेय या महत्त्व पाकर इतराने और बौराने लगते हैं। उनकी अकड़ उद्दंडता और अशिष्टता के रूप में चेहरे पर झलकती रहती है। सरकारी अफसरों, राजा, रईसों और तथाकथित बड़े आदमियों में से कितने ही ऐसे होते हैं, जिनकी अकड़ और उद्दंडता देखकर यही सोचना पड़ता है कि छोटी-सी सफलता पाकर इन्होंने सज्जनता का मार्ग छोड़ दिया और उद्धतता को अपना लिया है।

उद्धतता का ओछापन

उद्धतता सारी मनुष्य जाति का, सृष्टि की विधि व्यवस्था का, सज्जनता का अपमान है। यह किसी से भी बर्दाश्त नहीं होती। मानव की आत्मा इसके प्रति विद्रोह करती है। जिन्हें कोई व्यक्तिगत स्वार्थ हो उनकी बात दूसरी है। वैसे साधारणतया सभी को अहंकार बुरा लगता है। भले ही उसका कोई तुरंत विरोध न करे, पर जब भी अवसर आता है अहंकारी व्यक्ति देखता है कि उसका एक भी सच्चा मित्र इस संसार में नहीं है। चापलूस और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खुशामदी लोग जो अपने मतलब के लिए नाक का बाल बने हुए थे, अवसर पाते ही गिरे में लात लगाने का प्रयत्न करते हैं।

भगवान् को मनुष्य के दुर्गुणों में सबसे अप्रिय अहंकार है। ईश्वर का अंश होने से जीव महान् है, पर यह सारी महानता ईश्वर की है। अपनी स्वतंत्र सत्ता की दृष्टि से मनुष्य अत्यंत तुच्छ है, वह कितनी ही बातों में पशु-पक्षियों से भी पिछड़ा हुआ है। दूसरों की सहायता के बिना उसका काम ही नहीं चलता, जो कुछ भी लाभ या सुख प्राप्त होता है, उसमें उसकी निज की योग्यता का जितना महत्त्व है उसकी अपेक्षा दूसरों के सहयोग और अनुग्रह का सहस्रों गुना अधिक श्रेय सम्मिलित रहता है।

एकाकी रहने वाला मनुष्य तो लखनऊ के अस्पताल में पड़े हुए भेड़ियों द्वारा पाले गये रामू बालक जैसा ही अविकसित रह सकता है। रामू भी जैसा कुछ था, भेड़ियों के पालने के कारण था। यदि मनुष्य के बालक को कोई न पाले, किसी का सहयोग न मिले तो वह सृष्टि के अन्य जीवों की तरह जीवित भी नहीं रह सकता। आठ-दस वर्ष की आयु तक तो उसे सर्वथा परावलंबी रहना पड़ता है। बीमारी, अशक्ति, स्वाभाविक ज्ञान की कमी आदि अनेकों खामियाँ उसमें ऐसी हैं, जिनसे अन्य जीवों के बच्चे ग्रस्त नहीं होते। उसकी सारी उन्नति और सफलता सृष्टि के आरंभ से लेकर अब तक हुए मानवीय सामूहिक सत् प्रयत्नों का ही परिणाम है। समाज के ऋण और सहयोग का—दूसरों की कृपा और अनुकंपा का महत्त्व भूलकर यदि कोई इतराता है और अहंकारी बनकर मदोन्मत्त होता है तो यह उसकी तुच्छता ही मानी जायेगी।

सत्यानाशी दुर्गुण

अहंकार का नाश करने का परमात्मा सदा प्रयत्न करते रहते हैं, क्योंकि यही दुर्गुण भव-बंधनों में जीव को बाँधे रहने में सबसे कड़ी लौह श्रृंखला का काम करता है। अहंकारी के मन से सब सद्गुण उसी प्रकार विदा होने लगते हैं जैसे—तालाब का पानी सूखने पर उसके तट पर रहने वाले पक्षी अन्यत्र चले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जाते हैं। अहंकार से अन्य दुर्गुणों का पोषण होता है और घमंडी आदमी में वे सब बुराइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं जो गुंडों या असुरों में होती हैं। असुर या गुंडों का अहंकार ही आरंभ में विकृत होता है, इसके पश्चात् वे दूसरों को तुच्छ समझते हुए उनकी हर क्रिया में अपना अपमान देखने लगते हैं और उसका प्रतिशोध लेने के लिए जहरीले सांप की तरह अनर्थ करने पर उतारू हो जाते हैं। एकाध बार ऐसे अनर्थों में सफलता मिलने पर तो वे पूरे नर-पिशाच ही बन जाते हैं। डाकू और हत्यारों में लोभ वृत्ति उतनी प्रबल नहीं होती जितनी अहमन्यता। अहंकार को ही असुरता का प्रतीक माना गया है। अहंकारी की महत्त्वाकांक्षाएँ संसार के लिए एक विपत्ति ही सिद्ध होती हैं। सिकंदर, तैमूरलंग, नादिरशाह, औरंगजेब, नेपोलियन आदि के अहंकार ने कितनी निरीह जनता को संत्रस्त किया इसका रोमांचकारी चित्र इतिहास के हर विद्यार्थी को याद है। अहंकार का मार्ग हर मनुष्य को इसी दिशा में ले जाता है। जितनी उसकी क्षमता और परिस्थिति होती है, उसी अनुपात से वह जन-विपत्ति का कारण बनता जाता है।

सफलताएँ प्राप्त करने का हम प्रयत्न करें पर यह न भूलें कि उसके साथ फूल में काँटे की तरह जो अहंकार छिपा रहता है, उसका आक्रमण अपने ऊपर न हो जाए। हर सफलता के लिए हमें अपने सहयोगियों और मार्गदर्शकों का कृतज्ञ होना चाहिए तथा ईश्वर को सच्चे हृदय से धन्यवाद देना चाहिए कि उसकी अनुकंपा से ही इतना श्रेय प्राप्त हो सकना संभव हुआ। मनुष्य को अपनी महानता याद रखनी चाहिए किंतु तुच्छता को भी भूल न जाना चाहिए। एक ही झटके में बड़े-बड़े किले जब चूर-चूर हो जाते हैं, तो बेचारे तुच्छ मनुष्य की तो बिसात ही कितनी है ? आज एक कार्य में सफलता मिली है, तो यह आवश्यक नहीं कि कल भी—दूसरे काम में भी सफलता मिल जायेगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नम्रता और सज्जनता को न भूलें

अहंकार की उद्धतता मनुष्य के ओछेपन का चिह्न है। बड़प्पन में हर व्यक्ति झुकता और नम्र बनता है। उन्नति और सुधार उसी का संभव है, जो अपनी त्रुटियों और दुर्बलताओं को जानता है। जो अपने को सर्वोपरि माने बैठा है, उसे सुधार की बात सोचने का अवसर ही कहाँ है ? ऐसे मनुष्य हवा भरे हुए पानी के बबूले की तरह अंत में उपहास के पात्र बनते हुए नष्ट ही हो जाते हैं। इसलिए विज्ञजन अहंकार को बहुत ही हेय मानते रहे हैं। हर सफलता प्राप्त करते समय हमें यह आत्म-निरीक्षण करते रहना चाहिए कि कहीं इससे हमारा अहंकार तो नहीं बढ़ा, यदि बढ़ा हो तो सोचना चाहिए कि लाभ की अपेक्षा हमारी हानि ही अधिक हुई है। अहंकार को एक भारी हानि ही नहीं विपत्ति भी मानना चाहिए।

❑❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बड़प्पन की बात सोचें, बड़े काम करें

जीव अणु से विभु, लघु से महान्, आत्मा से परमात्मा और नर से नारायण बनने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। यह आकांक्षा अपूर्णता को हटाते हुए पूर्णता प्राप्त करने के उद्देश्य से है। उसे ही बड़प्पन प्राप्त करने की आकांक्षा कहते हैं। बड़ा बनने की, विकसित होने की, प्रगति करने की अभिलाषा से प्रेरित होकर जीव विविध विधि प्रयत्न करता रहता है। शारीरिक क्षुधाओं की पूर्ति के अतिरिक्त मनुष्य की शेष सभी क्रियाएँ प्रायः महत्त्व को उपलब्ध करने के उद्देश्य से ही होती हैं।

उचित और उत्तम आकांक्षा

बड़प्पन की इच्छा सबको होती है, पर बहुत कम लोग यह जानते हैं कि उसे कैसे प्राप्त किया जाए ? जो लोग जानते हैं, वे उस ज्ञान को आचरण में लाने का साहस नहीं करते। आमतौर से यह सोचा जाता है कि जिसका ठाट-बाट जितना बड़ा है, वह उसी अनुपात से बड़ा माना जायेगा। मोटर, बंगला, सोना, जायदाद, कारोबार, सत्ता, पद आदि के अनुसार किसी को बड़ा मानने का रिवाज चल पड़ा है। इससे प्रतीत होता है कि लोग मनुष्य के व्यक्तित्व को नहीं उसकी दौलत को बड़ा मानते हैं। यदि ऐसा ही है तो पहाड़ों को बड़ा माना जाना चाहिए, जिनके पास किसी बड़े जमींदार से अधिक जमीन और किसी बड़े किले से अधिक पत्थर होता है। धातुओं की खानें भी बहुत मूल्यवान् होती हैं, फिर उन्हें ही महान् क्यों न मान लिया जाये ?

यह दृष्टिदोष ही है कि बड़प्पन को लोग दौलत में खोजते हैं। पैसा तो कोई चोर, बेईमान भी इकट्ठा कर सकता है। उत्तराधिकार में बाप-दादों की बहुत बड़ी संपत्ति किसी मूर्ख व्यक्ति को भी मिल सकती है। गुणों के अभाव में भी किसी को धन-संपत्ति के आधार पर बड़प्पन की मान्यता का होना—एक बड़ा गलत दृष्टिकोण है। इस मान्यता को जन-मानस में स्थान मिल जाने से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोग किसी भी मूल्य पर धनी बनना चाहते हैं और जिनके पास धन नहीं है वे भी बड़प्पन के प्रमाण स्वरूप ठाठ बनाने में इतना खर्च करते हैं कि उनकी आर्थिक कमर ही टूट जाती है। कर्ज, तंगी और परेशानी से वे निरंतर घिरे रहते हैं।

अपव्यय और ठाठ-बाट की बाल-बुद्धि

विवाह-शादियों में, दावतों में, फैशन बनाने में, ठाठ-बाट जोड़ने में जो अंधाधुंध खर्च किया जाता है, उसकी व्यर्थता को समझते हुए भी लोग करते इसलिए हैं कि दूसरों की आँखों में अपनी अमीरी सिद्ध हो जाये। जब अमीरी को ही बड़प्पन का चिह्न मान लिया गया, तो स्वभावतः उसकी प्राप्ति के लिए हर किसी की, लालसा लगी रहना स्वाभाविक है। इस लालसा के कारण खर्च बढ़ता है, फिर उसकी पूर्ति की चिंता बढ़ती है। कमाई के जितने साधन बढ़ते जाते हैं, खर्च का अनुपात उससे अधिक बढ़ता जाता है। सुरसा के मुँह की तरह इसकी पूर्ति होती ही नहीं। चिंतित और परेशान रहने वाला व्यक्ति बड़प्पन तो क्या प्राप्त करेगा ? गाँठ की अपनी शांति और हँसी-खुशी भी खो बैठता है।

अमीरी और बड़प्पन का अंतर

धनी होना कोई बुरी बात नहीं है, उससे कई सुविधाएँ मिलती हैं और प्रसन्नता देने वाली परिस्थितियाँ भी प्राप्त होती हैं, उसका कोई विरोध नहीं किया जा रहा है और न उपार्जन करने से किसी को रोका जा रहा है। इन पंक्तियों में हमारा उद्देश्य यह कहने का है कि ठाठ-बाट से अमीरी सिद्ध हो सकती है, बड़प्पन प्रमाणित नहीं किया जा सकता। बड़प्पन व्यक्तित्व से संबंधित है। गरीब घरों में उत्पन्न हुए लोग भी बड़े होते हैं। धन का अभाव किसी की महत्ता को कुंठित नहीं कर सकता। संत-महात्मा तो स्वेच्छापूर्वक गरीबी का जीवन निर्वाह करते हैं, क्या उन्हें तुच्छ समझा जायेगा ?

उदारता और दूरदर्शिता का ही दूसरा नाम बड़प्पन है, जो जितना उदार है वह उतना ही बड़ा माना जायेगा। जिसकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भावना, आकांक्षा और विचारधारा ऊँची होगी, जो आदर्शवाद के प्रति जितनी ही आस्था रखता होगा उसकी कृतियाँ श्रेष्ठ पुरुषों जैसी होंगी। सज्जन व्यक्ति ऊँचे स्तर की बात सोचते और ऊँचे काम करते हैं। जिससे मानवता कलंकित होती हो, जिससे व्यक्तित्व का मूल्य घटता हो, ऐसे काम वे कितना ही कष्ट आने या दूसरों के द्वारा कितने ही परेशान किये जाने पर भी करने को तैयार नहीं होते ? यों सुविधा के समय हर कोई बड़ी-बड़ी आदर्श की बातें कर सकता है, पर परीक्षा की घड़ी आने पर ही यह पता चलता है कि कौन उदार और कौन अनुदार है ? कौन छोटा और कौन बड़ा है ?

भय, रोष और प्रलोभन का अवसर आने पर जो श्रेष्ठता टिक न सके, उसे अवास्तविक और दिखावटी ही माना जायेगा। छोटे बच्चे छोटी चीजें चाहते हैं और उनके मिलने पर प्रसन्न हो जाते है। जिनका अंतःकरण छोटा है, वे भी एक प्रकार के बच्चे ही हैं। उनकी आकांक्षा तुच्छ और नश्वर वस्तुओं तक सीमित बनी रहती हैं। तृष्णा, वासना में ही उनकी इच्छा लिपटी रहती है और उन्हीं की प्राप्ति तथा अप्राप्ति में उन्हें सुख-दुःख अनुभव होता रहता है। यह मिट्टी के खिलौने खेलने वाले, बालू के महल बनाने वाले बच्चों जैसा क्रीड़ा-विनोद है। इनसे शरीर की कुछ क्षण के लिए तृप्ति हो सकती है, पर आत्मा का तो कुछ भी भला नहीं होता। अपना भावना स्तर तो जरा भी ऊँचा नहीं उठता।

ऊँचा सोचें, ऊँचा करें

बड़े आदमी ऊँची बात सोचते हैं। ऊँचे काम करते हैं और ऊँची सूझ-बूझ का परिचय देते हैं। दुनिया किसी को तब बड़ा मानती है जब वह औसत दर्जे के आदमी से अधिक ऊँचा सिद्ध होता है। जिसका सोचने का तरीका उच्च आदर्शों पर अवलंबित है जो किसी कार्य में हाथ डालने से पहले, किसी मार्ग पर पैर बढ़ाने से पहले सौ बार यह सोचता है कि एक श्रेष्ठ व्यक्ति के लिए यह उचित है या नहीं, वस्तुतः वही बड़प्पन का अधिकारी है। प्रलोभनों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की ओर जो खिंचता रहता है, डर से जो काँपता रहता है, वह तो संसार की क्षुद्रता द्वारा नचाई जाने वाली कठपुतली के समान है। ऐसे लोग बड़प्पन का दावा नहीं कर सकते।

छोटे बच्चे उत्पात करते रहते हैं, कहनी-अनकहनी कहते रहते हैं, पर बड़े न तो उससे उत्तेजित होते हैं और न अपना मन क्षुब्ध करते हैं। लड़कपन में नासमझी ही तो भरी रहती है, ऐसा सोचकर वे मुस्करा भर देते हैं। बच्चे को कुछ कहना होता है तो मीठे-कड़वे शब्दों में कहते हैं भी, पर क्षोभ होने का अवसर नहीं आने देते। बड़े आदमी जिनका दिल और दिमाग दोनों बड़े हैं, ओछे लोगों की छोटी हरकतों से उद्विग्न नहीं होते। गलती को सुधारने का प्रयत्न करते हुए भी वे अपना मानसिक संतुलन नहीं बिगाड़ते। बड़े आदमी का प्रमुख चिह्न यह है कि वह न घटनाओं से न व्यक्तियों से, किसी से भी उद्विग्न नहीं होता। धीरज उसके हाथ से कभी छूटता नहीं, शोक-संताप की घड़ियों में भी वह चट्टान की तरह अडिग भाव से अपने स्थान पर अड़ा-खड़ा रहता है।

न द्वेष न दुर्भाव

जैसे को तैसा—यह नीति अपना लेने पर तो बड़ा भी छोटा हो जाता है। गाली का जवाब गाली से और घूँसे का जवाब घूँसे से देने में कोई बड़ी बात नहीं है, ऐसा तो पशु भी आपस में लड़कर द्वंद्व युद्ध कर लेते हैं। क्षमा और सहनशीलता हर किसी का काम नहीं है, उसे बड़े आदमियों में ही देखा जा सकता है। वे "नेकी कर कुँए में डाल" की नीति अपनाते हैं, किसी के साथ कुछ उपकार किया है तो उसकी चर्चा करना तो दूर स्मरण भी नहीं करते। पर छोटे आदमी पग-पग पर अपने राई से अहसान को उस पर जताते हैं, जिसके साथ उन्होंने कुछ उपकार किया है। वे इतना तक नहीं जानते कि जितनी बार अहसान जताया जायेगा उतना ही उसका मूल्य घटता जायेगा और कई बार कह देने के पश्चात् तो वह बिल्कुल ही समाप्त हो जायेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बड़े आदमी अपने आपको सज्जनता की कसौटी पर निरंतर कसते रहते हैं और जहाँ कहीं जरा-सा भी खोट दिखाई देता है वहाँ तुरंत सँभलने और सुधरने को तत्पर हो जाते हैं। क्षुद्र व्यक्ति अपनी हर बात को सही सिद्ध करने की कोशिश करते हैं और जो भी खराबी दिखाई पड़ती है, उसका दोष दूसरों पर मढ़ देते हैं। बड़े आदमियों का तरीका इनसे भिन्न होता है। वे प्रत्येक कार्य में यह देखते हैं कि मेरा जितना कर्तव्य और उत्तरदायित्व था, वह पूरा किया या नहीं ? अपनी गलतियाँ वे स्वयं सोचते और दूसरों से पूछते हैं। पर मूर्ख तो यही सोचता है कि उसमें कोई खोट नहीं, गलतियाँ तो दूसरे ही करते हैं।

विचारशैली और कार्य-पद्धति

बड़े आदमी आज की ही नहीं कल की भी सोचते हैं। उन्हें दूरदर्शिता प्रिय होती है। अपना कल्याण किस बात में है ? जीवन की सार्थकता किस नीति को अपनाने में है ? जो अमूल्य अवसर आज उपलब्ध है उसका सर्वश्रेष्ठ उपयोग क्या है ? वे यही सोचते रहते हैं और इन्हीं प्रेरणाओं के प्रकाश में वे अपना कार्यक्रम निर्धारित करते हैं। दूसरों का शोषण नहीं उनकी सहायता ही करें, किसी से लेकर नहीं किसी को देकर ही यहाँ से चलें, यही उनकी आकांक्षा रहती है। बड़े आदमी सादगी अपनाते हैं, नम्र रहते हैं, मधुर बोलते हैं और प्रत्येक कार्य में शिष्टाचार एवं सज्जनता का पुट बनाये रहते हैं। उनकी यह आंतरिक महानता ही दूसरों की आँखों में बड़ा आदमी प्रमाणित करती है और इस प्रामाणिकता के आधार पर उन परिस्थितियों को भी प्राप्त कर लेते हैं, जो बड़प्पन की प्रतीक मानी जाती हैं।

बड़प्पन बाहर नहीं भीतर रहता है। बाहरी ठाट-बाट से नहीं दिल और दिमाग को चौड़ा-उदार और दूरदर्शी रखकर ही उसे प्राप्त किया जाता है। हम बड़े बनने का सच्चे अर्थों में प्रयत्न करें, तो सचमुच ही वैसे बन सकते हैं।

❐❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देवासुर संग्राम में हम निरपेक्ष न रहें

पुराणों में देवासुर संग्राम का वर्णन पग-पग पर किया गया है। प्रत्येक पुराण में किसी न किसी बहाने किन्हीं देवताओं और किन्हीं असुरों की लड़ाई के प्रसंग बार-बार वर्णन किये गये हैं। सच तो यह है कि यह देवासुर संग्राम अनादिकाल से चल रहा है और अनंत तक चलता रहेगा। गीता में जिस धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र का वर्णन है और जिस महाभारत में धर्म और अधर्म का पक्ष प्रतिपादन करने वाली कौरव-पांडव सेनाओं का वर्णन हुआ है, वह भी केवल उस शस्त्र युद्ध तक सीमित नहीं है वरन् हमारे अंतःकरण में निरंतर होते रहने वाले देवासुर संग्राम का ही चित्रण है। रीछ-वानर की राम सेना और रावण, कुंभकरण, मेघनाथ जैसे समर्थ योद्धाओं का युद्ध भी एक प्रकार की हमारी भीतरी स्थिति का ही बाह्य चित्रण है। अध्यात्म रामायण में इसका निरूपण अधिक स्पष्ट रूप से हुआ है। प्रत्येक अवतार पाप का नाश करने और पुण्य की स्थापना के लिए—देवताओं की रक्षा और असुरों के संहार के लिए अवतरित होता है। ऐसा अवतार समय-समय पर हममें से अनेकों के अंतःकरण में अवतरित होते हुए देखा भी जाता है।

पाप-पुण्य के प्रबल संस्कार

मनुष्य के भीतर पाप और पुण्य के दोनों प्रकार के प्रबल संस्कार मौजूद हैं। दोनों की शक्ति प्रचंड है, दोनों ही उद्‌भट योद्धाओं के समान हैं। दोनों एक-दूसरे से प्रतिकूल प्रकृति के होने से परस्पर लड़ते भी रहते हैं और एक-दूसरे को परास्त करने का प्रयत्न भी करते हैं। यही देवासुर संग्राम है। हर मनुष्य के भीतर पाप और पतन की असुरता के कुसंस्कार पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। चौरासी लाख निम्न योनियों में लाखों वर्षों तक भ्रमण करने की अवधि में इसने इन्हें जमा किया होता है। पाशविक वृत्तियाँ उन पतित योनियों में उपयुक्त भले ही कही जाएँ, पर मनुष्य के महान् गौरव को देखते हुए वे हेय एवं त्याज्य ही होती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुरदुर्लभ मानव शरीर में देवत्व की छाया रहती है, क्योंकि यह योनि ईश्वर के सबसे निकट है। इस शरीर में आये हुए जीव के लिए ईश्वर तक पहुँचने में छोटी छलाँग लगानी मात्र शेष रह जाती है। इसलिए उसका महत्त्व एवं उत्तरदायित्व भी अधिक है। देवत्व मनुष्य को अपनी तरह ऊँचा उठाने के लिए खींचता है और असुरता की पाशविक वृत्तियाँ अपनी ओर आकृष्ट किये रहना चाहती हैं। इसी खींचतान में हवा के सहारे उड़ने वाले तिनकों की तरह आमतौर से मनुष्य कभी इधर-कभी उधर उड़ते रहते हैं, कोई व्यक्ति एक समय बुरे काम करता है तो दूसरे समय में अच्छे काम करता हुआ दिखाई देता है और कोई इसके प्रतिकूल अच्छे कामों को छोड़कर बुराई में धँसते देखा जाता है। ऐसे उदाहरणों में मनुष्य की मानसिक दुर्बलता और शुभ-अशुभ प्रवृत्तियों की प्रबलता का प्रभाव उपलब्ध होता है।

उद्‌बोधन का अभाव

देवत्व हर व्यक्ति के अंतःकरण में पर्याप्त मात्रा में मौजूद है, पर वह प्रसुप्त और बिखरा पड़ा रहता है, उसे अपने स्वरूप का ज्ञान नहीं होता। लंका लाँघने से पहले हनुमान को अपने ऊपर विश्वास नहीं हो रहा था, तब जामवंत ने प्रोत्साहन देकर उन्हें छलांग लगाने के लिए उकसाया और वे समुद्र लाँघने में पूर्णतया सफल रहे। अर्जुन भी दोनों सेनाओं के बीच खड़ा हुआ काँप रहा था, धनुष उसके हाथों से छूटा जा रहा था और कुछ सूझ न पड़ता था, कृष्ण ने उसे आवश्यक ज्ञान और प्रोत्साहन दिया तो पार्थ की भुजाएँ फड़कने लगीं। गांडीव उठाकर उसने ऐसा घनघोर युद्ध किया कि कौरवों की समुद्र-सी उमड़ती सेना अस्त-व्यस्त हो गई। अहंकारी असुर उच्छृंखलता में अभ्यस्त होने के कारण पहली बाजी जीतते हैं और प्रतीत होता है कि इनका हराना कठिन है, पर यह निश्चित है कि पाप अत्यंत दुर्बल होता है। वह घास के ढेर की तरह वह कितना ही बड़ा क्यों न हो, व्यवस्थित रूप से लगाई हुई एक ही छोटी चिनगारी उसे नष्ट कर देने के लिए पर्याप्त होती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देवत्व के पीछे सत्य है, धर्म है, स्थायित्व है, इसलिए इनके पास स्वल्प साधन होते हुए अंत में जीत उन्हीं की निश्चित रहती है। असफलता तो उन्हें तभी तक मिलती है जब तक वे असंगठित और अव्यवस्थित रहते हैं। यह दो दुर्गुण ही उन्हें संकटों में फँसाते हैं। भूल और बुराई का दंड तो सभी को भोगना पड़ता है। देवता भी उससे कैसे बच सकते हैं ? लापरवाही, आलस्य, प्रमाद, ढील-ढाल और उपेक्षा जहाँ कहीं होगी वहाँ देर-सबेर में विपत्ति अवश्य आयेगी। देवता हो या मनुष्य, कोई भी यह भूल करेगा तो दंड पायेगा। इसी प्रकार विसंगठन, फूट, पृथकता एवं स्वार्थपरता का भाव भी मानव जाति के लिए एक अभिशाप है। संघ शक्ति का अवलंबन किये बिना मनुष्य अपनी आत्म-रक्षा तक कर सकने में समर्थ नहीं हो सकता।

व्यक्तिगत क्षेत्र हो चाहे सामाजिक क्षेत्र, दोनों में ही यह एक ही सिद्धांत काम करता है। यदि हमारी पाशविक वृत्तियाँ प्रबल हो रही होंगी और देवत्व बिखरा प्रसुप्त स्थिति में पड़ा होगा तो फिर असुर बुद्धि और असुर प्रवृत्ति ही बलवती रहने से जीवन निम्न कोटि का, पतन और पाप से भरा हुआ दीख पड़ेगा। इसके विपरीत यदि देवत्व सजग, संघबद्ध और सक्रिय रहा होगा तो असुरता परास्त हुए बिना न रहेगी। मनुष्य के शरीर में न कुछ अच्छाई है न बुराई। उसकी भीतरी स्थिति ही बाह्य जीवन में फूटती रहती है। इस आंतरिक स्तर को सुधारने और सँभालने का कार्य जिस प्रक्रिया द्वारा होना संभव है, उसे ही 'अध्यात्म' नाम से पुकारा जाता है।

❐❐

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता :** जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक :** जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी :** जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक :** जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी :** जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक :** जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक :** जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक :** जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना :** जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org